क्या खानदान आधारित ऐसे दलों के दिन अब लद चले हैं, जो राष्ट्रीय स्तर पर मोल-भाव करते आए हैं? इस सवाल का जवाब हमें लखनऊ से मिलेगा। अगर अखिलेश यादव विधानसभा चुनाव जीत जाते हैं, तो वह ऐसी पार्टियों के लिए लाइट हाऊस साबित होंगे। यदि ऐसा नहीं हुआ, तो भाजपा गठबंधन के सामने कांग्रेस की अगुवाई में अगले साल एक मजबूत गठजोड़ की संभावनाएं प्रबल हो उठेंगी।

आजकल स्तंभ के तहत प्रकाशित आलेखों के लिए

अगली चुनावी बिसात का अर्थ

शशि शेखर

भारतीय लोकतंत्र की एक दिलफरेब खूबी यह है कि यह हर पल चुनाव ओढ़ता और बिछाता है। पश्चिम बंगाल में भारतीय जनता पार्टी की जबरदस्त जीत का खुमार अभी उतरा न था कि अगले मतपर्व के लिए बिसातें बिछने लगी हैं। उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, मणिपुर और गोवा के ये चुनाव महत्वपूर्ण साबित होने जा रहे हैं। वे इन प्रदेशों के साथ क्षेत्रीय पार्टियों, क्षत्रपों और सियासी खानदानों के अस्तित्व का फैसला सुनाएंगे।

मसलन, उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी और भारतीय जनता पार्टी गठबंधन के बीच दिलचस्प मुकाबला होने जा रहा है। सपा सुप्रीमो अखिलेश यादव इस चुनाव को जीतने के लिए जी-जान से जुटे हुए हैं। वह जानते हैं कि कोई भी क्षेत्रीय दल लगातार तीन बार हारकर अपने अस्तित्व को जस का तस नहीं रख सकता। सन् 2024 के लोकसभा चुनावों में 37 सीट जीतने के कारण उनके हौसले बुलंद हैं। हालांकि, उनकी डगर आसान नहीं है। उनका सामना दमदार छवि वाले योगी आदित्यनाथ से होना है। कानून-व्यवस्था के सफल संचालन के अलावा बहुसंख्यक मतदाताओं में उनका खास रसूख है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनकी कैबिनेट में दूसरे नंबर का दर्जा रखने वाले राजनाथ सिंह इसी प्रदेश से चुनकर आते हैं। भारतीय जनता पार्टी इनकी राजनीतिक कद-काठी का अवश्य लाभ उठाना चाहेगी।

उस दौरान मायावती का भी निर्णायक इम्तिहान होगा। साल 2007 में विशाल बहुमत से सत्ता-सदन में पहुंची बहुजन समाज पार्टी के दुर्दिन चल रहे हैं। इस वक्त लोकसभा में उसकी शून्य और विधानसभा में महज एक सदस्य की नुमाइंदगी रह बची है। नई पीढ़ी को आकर्षित करने के लिए उन्होंने भतीजे आकाश आनंद को अपना 'डिप्टी' बनाया है। यह प्रयोग सफल न हुआ, तो उन्हें दोहरा नुकसान उठाना पड़ेगा। हार के साथ वंशवाद की तोहमत उनके ऊपर होगी।

आजकल

पंजाब का बादल परिवार भी समान सियासी संक्रमण का शिकार है। सन् 2017 में दस वर्षीय हुकूमत से हटने के बाद से उनके वोट शेयर में चुनाव-दर-चुनाव गिरावट आई है। कभी चंडीगढ़ से दिल्ली तक पार्टी के शीर्ष पुरुष प्रकाश सिंह बादल का दबदबा होता था। उनके बुढ़ाने के साथ शिरोमणि अकाली दल की कमान उनके पुत्र सुखबीर सिंह बादल के हाथ में चली गई। उन दिनों समय के बदलाव के साथ पार्टियों का कॉरपोरेटीकरण हो रहा था। वे आंदोलन और क्षेत्रीय अस्मिता को ताक पर रख निजी लाभ-हानि का उद्यम बन चली थीं। सुखबीर सिंह बादल पर आरोप लगे कि वह व्यावसायिक वाहनों के बेड़े, क्षेत्रीय मीडिया संस्थानों के साथ अकूत चल-अचल संपत्ति के मालिक बन गए हैं। इसी बीच 2015 में गुरुग्रंथ साहिब की बेअदबी के आरोप उछले। यहीं से शिरोमणि अकाली दल की पतनगाथा की शुरुआत हुई। यह उनके राजनीतिक जीवन पर एक और आघात था।

सुखबीर के प्रभुत्व काल में पंजाब में नशे का कारोबार शीर्ष पर पहुंच गया था। सरकार के एक ताकतवर मंत्री पर इसकी तिजारत के आरोप थे। नतीजतन, उड़ता पंजाब जैसी फिल्में बनने लगीं। आम आदमी पार्टी ने इसे मुख्य मुद्दा बनाया और 2017 में 20 सीटें जीतकर शिरोमणि अकाली दल को तीसरे नंबर पर धकेल दिया। 2022 के विधानसभा चुनाव में 117 में से 92 सीटें जीतकर सरकार बनाई। यह पहला मौका था, जब अकाली दल को सिर्फ तीन सीटों पर मन-मसोसकर रह जाना पड़ा। प्रकाश सिंह बादल और सुखबीर तक अपनी सीट गंवा बैठे थे। सन् 2024 का लोकसभा चुनाव तो और प्रलयंकारी साबित हुआ। इस बार वह सिर्फ एक सीट जीत सके।

किसान आंदोलन के दौरान भारतीय जनता पार्टी और शिरोमणि अकाली दल का जो तलाक हुआ, वह आज तक कायम है। इस बार भगवा दल ने पंजाब में अकेले अपने दम पर चुनाव लड़ने का एलान किया है। यही वजह है कि बहुत

सी सीटों पर चतुष्कोणीय मुकाबले की स्थिति बन रही है। कांग्रेस को यहां भी कड़ा इम्तिहान देना है, क्योंकि वह 2022 तक इस सूबे पर राज करती थी। आम आदमी पार्टी के लिए भी यह अस्तित्व की लड़ाई है। दिल्ली गंवाने के बाद अब उसके कब्जे में यह अकेला प्रदेश है। 'एंटी इनकम्बेंसी' के साथ मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान इन दिनों 'बेअदबी' के घातक आरोपों में फंसे हुए हैं।

अब उत्तराखंड पर आते हैं। यहां भारतीय जनता पार्टी साल 2017 से हुकूमत में है। मुख्यमंत्री की कुर्सी पर इस समय नौजवान पुष्कर सिंह धामी विराजमान हैं। धामी अपनी तेजी और तत्काल निर्णय लेने की क्षमता के लिए जाने जाते हैं। भाजपा में अंदरूनी कलह है, लेकिन पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन ने सार्वजनिक घोषणा की है कि यह चुनाव पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में ही लड़ा जाएगा। इसका अनुकूल संदेश कार्यकर्ताओं पर पड़ा है। धामी की अगुवाई में भाजपा जीत के प्रति आश्वस्त प्रतीत होती है।

उत्तराखंड में भी कांग्रेस की कड़ी परीक्षा होनी है। पार्टी ने तेज-तर्रार गणेश गोदियाल को प्रदेश अध्यक्ष बनाकर हताश कार्यकर्ताओं में नई चेतना फूंकने की कोशिश की है, लेकिन हरीश रावत जैसे बुजुर्ग नेता उनकी राह में कांटे बिछाते रहते हैं। क्या राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खड़गे भाजपा जैसा फैसलाकुन कदम उठा सकेंगे?

मणिपुर और गोवा का मामला तो और दिलचस्प है। यहां भले ही किसी भी पार्टी की सरकार बने, लेकिन कुछ खानदानों का दखल जस का तस रहता है। इसे बनाए रखने के लिए वे कोई जतन नहीं छोड़ते। कई बार ऐसा हुआ है कि एक छत के नीचे रहने के बावजूद मियां-बीवी ने अलग-अलग दलों से चुनाव लड़ा और जीता। यहां के निर्वाचन क्षेत्रों में वोटरों की संख्या अति सीमित होती है, इसलिए राजनीतिक परिवार उसे आसानी से अपनी मुट्ठी में रखते हैं।

अगले चुनाव में भी इस सिलसिले से निजात की कोई किरण नहीं दिखती।

इसके बावजूद तेजस्वी यादव, ममता बनर्जी, एम के स्टालिन, उद्धव ठाकरे, सुखबीर बादल और पवार परिवार के हश्र से यह सवाल उठना मौजूं है कि क्या खानदान आधारित ऐसे दलों के दिन अब लद चले हैं, जो राष्ट्रीय स्तर पर मोल-भाव करते आए हैं? इस सवाल का जवाब हमें लखनऊ से मिलेगा। अगर अखिलेश यादव विधानसभा चुनाव जीत जाते हैं, तो वह ऐसी पार्टियों के लिए लाइट हाऊस साबित होंगे। यदि ऐसा नहीं हुआ, तो भारतीय जनता पार्टी के गठबंधन के सामने कांग्रेस की अगुवाई में अगले साल एक मजबूत गठजोड़ की संभावनाएं प्रबल हो उठेंगी।

यही वजह है कि सभी दल जीत के लिए कुछ भी कर गुजरने को तैयार रहेंगे। हमें भी इन चुनावों के दौरान कुछ नए, लेकिन अप्रिय प्रसंगों के लिए खुद को तैयार कर लेना चाहिए। पिछले तमाम चुनाव यही ताकीद करते हैं।

@shekharkahin
@shashishekhar.journalist

जीना इसी का नाम है

अमित किशन
कृषि उद्यमी

जैविक खेती से जिंदगियां बचाता, संवारता नौजवान

साल 2016 में नौकरी से इस्तीफा देकर अमित अपने दादा की कर्मभूमि में लौट आए। जाहिर है, उस समय उन्हें खेती-किसानी की एबीसीडी भी नहीं आती थी। वह खरीफ और रबी का फर्क तक नहीं जानते थे। आज उनकी कृषि कंपनी सालाना 30 करोड़ रुपये का कारोबार कर रही है।

लौटना हमेशा आसान नहीं होता। अपनी जड़ों से कट चुके लोगों का... बचपन की बस्ती में बिसरा दिए गए नौजवानों का... शहरी चकाचौंध में चुंधियाई हुई आंखों का और अपनी नाकामियों से नजरें चुराते इंसानों का। फिर भी, कई लोग लौटते हैं। कुछ अपनी माटी के मोह में, कुछ विकल्पहीनता की स्थिति में और कतिपय साहसी अपने खेतों में नए सपने बोने के लिए। अमित किशन भी लौटे अपनी समूची ऊर्जा समेटे पुरखों के गांव और ऐसा कमाल कर डाला कि लाखों नौजवानों के प्रेरणा-पुंज बन गए।

आज से 36 साल पहले कर्नाटक के चिक्काबल्लापुर के एक किसान परिवार में अमित पैदा हुए। पीढ़ियों से खेती-किसानी ही उनके परिवार की आजीविका का मुख्य साधन रही। अमित के दादा जीपी कृष्णप्पा का अपने इलाके में बड़ा नाम था। मगर यह वह दौर था, जब चंद इलाकों को छोड़ खेती-किसानी से कृषक वर्ग का मोहभंग होने लगा था। खेतों में निराई-गुड़ाई के बजाय शहर की छोटी नौकरी भी गांवों के नौजवानों को लुभाने लगी थी। जमाने की सोच से कदमताल करते हुए अमित अपनी स्कूली पढ़ाई पूरी करके बेलगावी की विश्वेश्वरैया टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी पहुंचे, जहां से उन्होंने कंप्यूटर साइंस में बीटेक की डिग्री हासिल की। डिग्री के साथ नौकरी के कई प्रस्ताव झोली में आ गिरे थे। अमित ने उनमें से बैंकिंग क्षेत्र को चुना। अगले आठ साल में वह बजाज, एक्सिस, आईसीआईसीआई, एचडीएफसी और पंजाब नेशनल बैंक जैसे प्रमुख बैंकों में काम कर चुके थे। अच्छा करियर और शानदार संभावनाओं के बीच कुछ ऐसा था, जो अमित को बेंगलुरु में रमने नहीं दे रहा था। उन्हें अपने दादाजी बहुत याद आते। उनके साथ खेतों में बिताए पल अमित को अक्सर भावुक कर जाते। तभी एक ऐसी घटना घटी, जिसने उनकी जिंदगी की दिशा ही बदल दी।

अमित के एक बैंक ग्राहक थे, जिनके बीमा व दूसरे बैंकिंग दस्तावेजों की जिम्मेदारी उनके पास ही थी। ग्राहक की उम्र अधिक नहीं थी, मगर कैंसर ने उसे अपना शिकार बना डाला था। मौत के बाद परिवार की दस्तावेजी कार्रवाइयां पूरी करते हुए अमित को अपने ग्राहक का हंसमुख चेहरा, आत्मीय व्यवहार बार-बार याद आता रहा। इस घटना ने उन्हें भीतर तक झकझोर दिया। आखिर कम उम्र के कैंसर मरीजों की संख्या इतनी क्यों बढ़ रही है? कहीं रासायनिक खादों- कीटनाशकों से उपजे अन्न व दूसरे उत्पाद तो इसकी वजह नहीं? जो कुछ हम आज खा-पी रहे हैं, वे कितने सुरक्षित हैं?

इन सवालों ने अमित के भीतर भारी उथल-पुथल मचा दी। उन्होंने एक मुश्किल फैसले का मन बना लिया। कहते हैं, मां-बाप के बाद सहोदर से बड़ा हितैषी कोई नहीं होता। अमित ने भाई आश्रित से अपने दिल की बात कही, भाई ने हर हाल में

साथ खड़े होने का भरोसा दिया। साल 2016 में नौकरी से इस्तीफा देकर अमित अपने दादाजी की कर्मभूमि में लौट आए। जाहिर है, उस समय उन्हें खेती-किसानी की एबीसीडी भी मालूम न थी। वह खरीफ और रबी का फर्क भी नहीं जानते थे।

अगले कई महीनों तक वह देश भर के प्राकृतिक व जैविक खेती करने वाले किसानों से मिलते रहे, खेतों में समय बिताया, मिट्टी के मिजाज को समझा और कुदरती खेती के वैज्ञानिक पहलुओं का अध्ययन किया। भाई की एक पुकार पर छोटे भाई आश्रित भी आ गए। दोनों ने तय किया कि खेती उनके लिए सिर्फ व्यवसाय नहीं होगी, बल्कि प्रकृति और समाज के बीच एक नया संबंध स्थापित करने का जरिया भी बनेगी।

अपने सपनों को वितान देने के लिए उन्होंने पेनुकोंडा (आंध्र प्रदेश) में कुछ एकड़ जमीन खरीदी और 'निसर्ग वुड्स' नाम से एक एग्रो-रियल्टी प्रोजेक्ट शुरू किया। इन खेतों को जैविक रूप से विकसित करने के लिए उन्होंने 'रिसर्च' की और पाया कि एक एकड़ खेत को उपजाऊ बनाने के लिए चार से पांच गायों की जरूरत पड़ेगी। इसलिए, उन्होंने गायें खरीदीं। अमित ने बिल्कुल पारंपरिक तरीका अपनाया। खेतों की गहरी जुताई की, देसी गायों के गोबर और गोमूत्र से जीवामृत तैयार किया, खेतों में देशी बीजों का उपयोग किया और जुताई के लिए ट्रैक्टर के बजाय बैलों को प्राथमिकता दी।

जिन खेतों की मिट्टी रसायनों के अत्यधिक उपयोग से खराब हो चुकी थी, कुछ ही महीनों में जीवंत होने लगी। वर्षों बाद खेतों में केंचुए लौट आए थे, मिट्टी की उर्वरता भी बढ़ी और फसलों की गुणवत्ता ने लोगों का ध्यान भी खींचा। वर्ष 2019 में दोनों भाइयों ने 'हेब्बेवु फार्म्स' की औपचारिक रूप से नींव रखी। आहिस्ता-आहिस्ता उनका यह प्रयोग एक सफल कृषि मॉडल में बदल गया। आज यह कृषि उद्यम आंध्र-कर्नाटक के 650 एकड़ में इलाके में फैल चुका है।

हेब्बेवु फार्म्स में लगभग 40 किस्म की देशी फसलें उगाई जाती हैं। ये पूरी तरह प्राकृतिक हैं। इनमें रासायनिक खादों व कीटनाशकों का बिल्कुल प्रयोग नहीं होता। कृषि फर्म की लगभग 700 देशी गायें और बैल इस प्राकृतिक कृषि चक्र का आधार हैं। यहां से रोजाना करीब छह टन सब्जियों और 1,500 लीटर दूध का उत्पादन होता है, जबकि इसके उत्पादों के अब तक तीन लाख से अधिक नियमित ग्राहक बन चुके हैं।

अमित किशन की सफलता केवल खेती तक सीमित नहीं है। उन्होंने करीब डेढ़ दर्जन गांवों की 3,000 से भी अधिक

हेब्बेवु फार्म्स में लगभग 40 किस्म की देशी फसलें उगाई जाती हैं। इनमें रासायनिक खादों और कीटनाशकों का बिल्कुल प्रयोग नहीं होता। कृषि फर्म की लगभग 700 देशी गायें और बैल इस प्राकृतिक कृषि चक्र का आधार हैं। यहां रोजाना करीब छह टन सब्जियों और 1,500 लीटर दूध का उत्पादन होता है।

महिलाओं को इसमें रोजगार दिया है। ये महिलाएं घी, पनीर और अन्य दुग्ध उत्पाद तैयार करती हैं। अमित की पहल ने सैकड़ों परिवारों का कायाकल्प कर दिया है। हेब्बेवु कृषि फर्म का सालाना कारोबार लगभग 30 करोड़ रुपये तक पहुंच चुका है। यह इस बात का प्रमाण है कि यदि अपनी समृद्ध परंपरा के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को भरपूर धैर्य के साथ अपनाया जाए, तो खेती-किसानी भी आपको आर्थिक रूप से संपन्न समाज का अगुवा बना सकती है।

प्रस्तुति : चंद्रकांत सिंह

वो लम्हा

लियोनेल मेस्सी
महान फुटबॉलर

मेरे नाती को खेलने का एक मौका दो

हर मौके के साथ वह बच्चा खेल में बढ़ता चला गया, पर जब वह नौ साल का हुआ, तब उसकी लंबाई ठहर गई। माता-पिता डेढ़ साल बाद जागे और स्थानीय डॉक्टर के पास पहुंचे। डॉक्टर ने जांच के बाद बताया कि बच्चा अब अधिकतम दो-तीन इंच ही लंबा हो पाएगा।

जिंदगी के सफर में कई मोड़ आते हैं। उस पांच वर्षीय बच्चे के जीवन में भी पहला मोड़ तब आया, जब उसकी नानी स्थानीय क्लब के कोच से लड़ पड़ीं। कोच कह रहा था, यह बच्चा छोटा है, बड़ों के साथ खेलेगा, तो कुचल जाएगा, चोट लग जाएगी, पर नानी कहां मानने वाली थीं। वह अड़ गईं कि मैं जोखिम लेती हूं, मेरे नाती को खेलने का एक मौका दो। नानी की जिद से ही पहला मौका मिला और उसके बाद मौके मिलते ही चले गए।

हर मौके के साथ वह बच्चा खेल में बढ़ता चला गया, पर जब नौ साल का हुआ, तब उसकी लंबाई ठहर गई। माता-पिता डेढ़ साल बाद जागे और स्थानीय डॉक्टर के पास पहुंचे। अच्छे डॉक्टर ने जांच के बाद कहा कि बच्चा अब अधिकतम दो-तीन इंच ही लंबा हो पाएगा। माता-पिता चिंता में पड़ गए, तब डॉक्टर ने बताया कि इस हार्मोनल कमी का इलाज मुमकिन है, पर बहुत खर्चीला है। पिता जमा-पूंजी लगाने को तैयार हो गए। इलाज शुरू हुआ, पर दो साल बाद परिवार पर आर्थिक बोझ बढ़ गया। पिता ने स्थानीय फुटबॉल क्लबों से बारी-बारी गुहार लगाई, पर कोई हार्मोनल उपचार का खर्च उठाने को तैयार नहीं हुआ।

शारीरिक कमी सताने लगी थी, पर बच्चे के खेल में कोई कमी नहीं थी। वह विशालकाय खिलाड़ियों के पैरों की कैद से पलक झपकते बॉल छुड़ाकर अपने पैरों को सौंप देता था और तेजी से बढ़ते-छकाते हुए प्रतिद्वंद्वी के गोलपोस्ट पर चढ़ाई कर देता था। पिता लगातार लगे हुए थे कि कोई फुटबॉल क्लब बेटे के इलाज का खर्च उठा ले, पर सभी प्रतिभा की तारीफ तो करते थे, कोई भी खर्च उठाने के लिए तैयार नहीं होता था।

बहरहाल, उसके शरीर की लंबाई थम गई थी, पर अच्छे खेल की ख्याति फैलती चली जा रही थी। ख्याति अर्जेंटीना से बाहर स्पेन स्थित दुनिया के सबसे अमीर फुटबॉल क्लबों में शुमार एफसी बार्सिलोना के खेल निदेशक कार्ल्स रेक्साच तक पहुंची। कार्ल्स हमेशा अपने क्लब के लिए हीरे चुनने और तराशने के काम में लगे रहते थे। 13 वर्षीय किशोर का खेल देखने के लिए विशेष मैच का आयोजन हुआ। कोच ने चंद मिनटों में समझ लिया कि यह खिलाड़ी खास है। एक छोटा-सा खिलाड़ी है, जो बड़े-बड़े खिलाड़ियों को गेंद के लिए तरसा रहा है। चकमा देने या छकाने में वह इतना माहिर है कि प्रतिद्वंद्वी खिलाड़ी होड़ में हारकर झुंझलाने लगते हैं। उस मैच में किशोर ने पांच गोल दाग दिखाए।

उसी दिन दोपहर भोज पर उसके पिता और निदेशक कार्ल्स साथ बैठे। पिता ने निराशा का इजहार किया, 'हर कोई जानता है, मेरे बेटे ने अब तक पांच सौ गोल कर दिए हैं, पर कोई इसका खर्च उठाने को तैयार नहीं है।' कार्ल्स ने कहा, 'मेरा यकीन कीजिए। मैं अनुबंध करूंगा और आपका परिवार स्पेन जाएगा।' पिता की निराशा दूर नहीं हुई। उन्होंने कहा, 'पता नहीं, कल आप मिलेंगे या नहीं? कल की कौन जानता है? मुझे कुछ तो जल्दी करना होगा। कल मैं कुछ और क्लबों से बात करूंगा।'

कार्ल्स को हालात की गंभीरता समझते देर नहीं लगी, उन्होंने वहीं एक पेपर नैपकिन पर हाथ से एक छोटा अनुबंध साफ शब्दों में लिख दिया और निराश पिता को थमाते हुए कहा, 'यह लीजिए अनुबंध। मेरा लिखा कभी बेकार नहीं जाता। आपका प्रतिभावान बेटा लियोनेल मेस्सी अब हमारे क्लब के संरक्षण में है। आपको चिंता करने की जरूरत नहीं। हमारी जिम्मेदारी है। हम मेस्सी की कमियों को दूर करते हुए बड़े मुकाबलों के लिए तैयार करेंगे।'

बदली हुई किस्मत के साथ मेस्सी अलग देश में आ गए। वहां की भाषा उन्हें नहीं आती थी, पर दुनिया में फुटबॉल की अपनी ही भाषा है, जिसे पैर सबसे बेहतर जानते हैं। चार साल के प्रशिक्षण काल में उनकी लंबाई भी बढ़कर 5.7 फीट हो गई। बार्सिलोना के लिए वह महा-फुटबॉलर थे और अपने देश अर्जेंटीना के लिए एक महान उम्मीद। अपने बेमिसाल खेल से मेस्सी ने कई झंडे गाड़े, पर स्वर्णिम शिखर साल 2022 में तब आया, जब अर्जेंटीना ने लियोनेल मेस्सी की कप्तानी में विश्वकप फुटबॉल जीता। मेस्सी को टूर्नामेंट का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुना गया और उन्होंने अपना दूसरा गोल्डन बॉल पुरस्कार भी जीता। उन्हें फुटबॉल के इतिहास में सर्वश्रेष्ठ मसीहा खिलाड़ी कहा जाता है। उनकी एक-एक सूचना दुनिया में समाचार बनती है और वह पेपर नैपकिन, जिस पर उनका पहला अनुबंध लिखा गया था, वह साल 2024 में नौ करोड़ से भी ज्यादा रुपये में नीलाम हुआ था।

39 वर्षीय लियोनेल मेस्सी अभी थके नहीं हैं और फुटबॉल विश्वकप 2026 में भी पूरे दमखम से खेल रहे हैं। वह विश्वकप इतिहास में सबसे ज्यादा गोल करने वाले खिलाड़ी बन गए हैं और वह जब भी कोई गोल करते हैं, तब आसमान की ओर देखते हुए कहते हैं, 'नानी, ये रहा एक और गोल आपके लिए।'

प्रस्तुति : ज्ञानेश उपाध्याय

अब कवर ही किताब है

तिरछी नजर

सुधीश पचौरी हिंदी साहित्यकार

मेरा 'मोजो मोमेंट' आ चुका है। आपका आया कि नहीं? अगर नहीं, तो तुरंत अपना मोजो मोमेंट बना लें, अन्यथा 'फोमो' का शिकार बनेंगे। मोजो मोमेंट, यानी करिश्माई क्षण और फोमो, यानी 'फीयर ऑफ मिसिंग आउट', यानी पिछड़ जाने का डर! यह सब अपने 'जेंजी' का सौंदर्यशास्त्र है, जो डेलूलू (डिल्यूजन) को ही सुलूलू (सॉल्यूशन) मानता है।

मेरे जैसे कलमघिस्सू की भी कैसी किस्मत है कि मैं अपने को जितना 'डिकॉलोनाइज' करता हूं, उतना ही 'री-कॉलोनाइज' होता जाता हूं। अपनी हालत उस फंसे हुए हिरन की सी है, जिसके बारे में बिहारी ने कहा है : को छूट्यो इहि जाल परि, कत कुरंग अकुलात! ज्यौं-ज्यौं सुरझि भज्यौ चहत, त्यौं-त्यौं उरझत जात!!

मैं इस मोजो, फोमो, डेलूलू, सुलूलू के फंदे से जितना निकलता हूं, उतना ही फंसता जाता हूं। मैंने चाहा कि हिंदी साहित्य के डालडा की जगह देसी घी बन जाऊं। साहित्य से देसी की खुशबू आए, पर अमेरिका और उसका सोशल मीडिया कुछ करने दे, तब न! वह तो हर रोज एक नई पीढ़ी और नए-नए शब्दकोश ठेलता रहता है और हम उसे अपनाते जाते हैं। अब तक सब फेसबुक वीर, वाट्सएप वीर आदि थे, अब अधिकांश इंस्टाग्राम वीर हैं, जहां हर पल कोई न कोई अपना मोजो मोमेंट बनाता ही रहता है, अपनी रील का वायरल मोमेंट बनाता रहता है और कहता रहता है, 'आई हैव अराइव्ड', यानी लो मैं आ गया।

यह सब देख मुझे सत्तर के दशक की फिल्म हम किसी से कम नहीं के इस गाने को अपनी कैच लाइन बनाने का मन करने लगता है- *बचना ऐ हसीनो, लो मैं आ गया। हुस्न का आशिक, हुस्न का दुश्मन, मेरी अदा है यारों से जुदा!* आप मुझे कोसेंगे कि इस साहित्य-चर्चा में फिल्मी गानों का क्या काम? हिंदी कविता क्या मर गई है? तो मेरा निवेदन होगा कि आप इस गाने की टक्कर की एक हिंदी कविता बता दीजिए, तो मैं दे दूं!

मेरा मानना है कि फिल्में हिंदी साहित्य से आगे रहीं हैं। फिल्मी गीत मौके, बे-मौके काम आते रहते हैं, इसीलिए मैं उनको किसी भी बड़ी कविता से कम नहीं मानता। जरा सोचिए, समय बदल गया, लेकिन हिंदी कवि और कविता का मिजाज न बदला। पुरानी की जगह नई कविता आ गई, अकविता आ गई, लेकिन हिंदी अपने उपनिवेशवाद और रेनेसां काल में ही अटकी रही। सोशल मीडिया प्लेटफार्म आ गए, तब भी कविता न बदली। वह कागज की जगह फेसबुक पर, वाट्सएप पर लिखी जाती रही।

जब से हिंदी लेखक इंस्टाग्रामी हुआ है, तब से वह बदल गया है। अब तक वह लिखा करता था, अब सिर्फ दिखा करता है। इंस्टाग्राम का नारा है- लिखो नहीं, दिखो। अब लिखे को कोई नहीं पूछता, सब दिखे को पूछते हैं। जितना दिखोगे, उतना टिकोगे। अब तो कवर ही किताब है। अब न लिखना है, न छपना है और न बिकना है। अब सिर्फ नई-नई अदा में दिखना है। यह दिखना ही बिकना और टिकना है।

इसीलिए मैंने कहा कि नया लेखक आ चुका है। लेखन अब एक दृश्य है, फोटो है, पंद्रह मिनट की झटके वाली रील है। असली चीज है कि आप कितनी बार कपड़े बदलते/बदलती हैं? आप कितने आकर्षक हैं और दूसरों की नजरें चुराने वाले हैं। आपकी रेटिंग, नेटवर्किंग, सब इसी से तय होती है। किसी आंख के अंधे, गांठ के पूरे को पटाइए। पांच सितारा जाइए। महंगी कॉफी नोश फरमाइए। हजारों के इंपोर्टेड जाम छलकाइए। रील बनिए-बनाइए और तुरंत इंस्टा पर डालकर लिखिए- कॉफी विद काफ्का, कॉफी विद सार्त्र, कॉफी विद टेलर स्विफ्ट, कॉफी विद सनी लियोनी... लाखों व्यूअर्स को पाइए, वायरल हो जाइए और स्वयं साहित्य बन जाइए।

लेखन अब क्या है? एक अदा है, एक रील है, एक वीडियो है। इसलिए, अपना मोजो मोमेंट (करिश्माई क्षण) बनाइए और ठाठ से कहिए- 'आई हैव अराइव्ड', यानी लो मैं आ गया!

कटाक्ष

राजेंद्र धोड़पकर

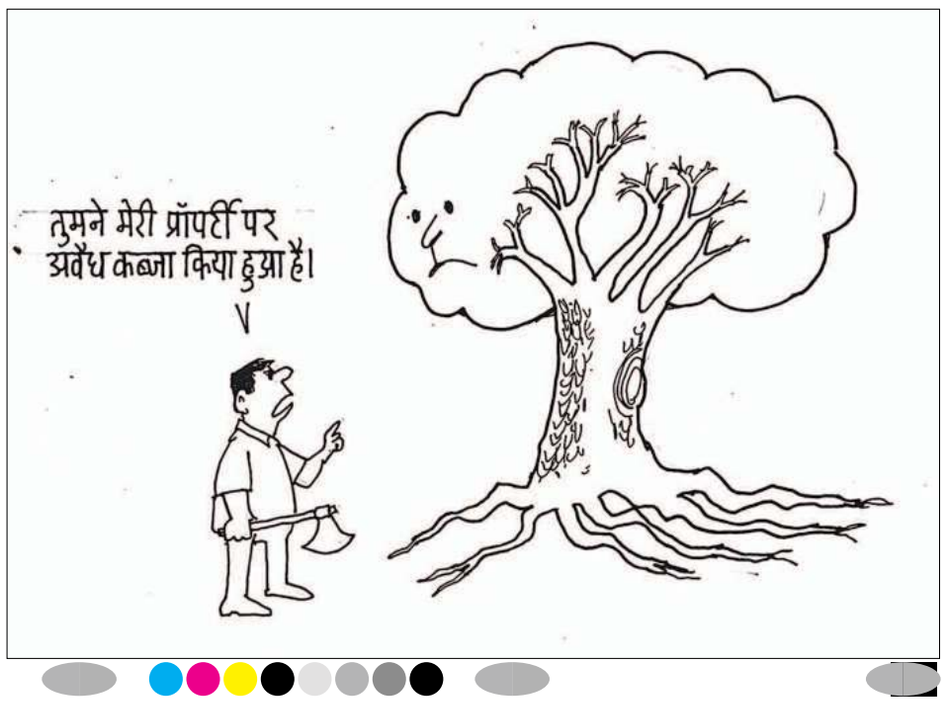

प्रेम-कथा - 4

हिंदी और उर्दू के प्रसिद्ध साहित्यकार **उपेंद्रनाथ अश्क** (14 दिसंबर, 1910 – 19 जनवरी, 1996) ने प्रेमचंद की सलाह पर उर्दू से हिंदी लेखन की राह पकड़ी। कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक और आलोचना सहित लगभग सभी विधाओं में लेखन। 'गिरती दीवारें', 'बड़े खिलाड़ी' और 'पर्दा उठाओ : पर्दा गिराओ' आदि चर्चित कृतियां। आज प्रस्तुत है संगीत नाटक अकादमी और सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार से सम्मानित लेखक की प्रसिद्ध प्रेम कहानी **'मोहब्बत'** का अंश...

मोहब्बत

इलस्ट्रेशन : यशवंत नामदेव

जेल के इंस्पेक्टर दुर्गा दास बनर्जी मेरे बड़े दोस्त हैं। कलकत्ता में कई बार मैं उनके यहां ठहरा हूं। मुझ पर बड़े मेहरबान हैं। उनकी वसातत से ही मुझे ये सब पता चला है। बंगाल में इंकिलाब-पसंदों की बढ़ती हुई सरगर्मियों को रोकने के लिए ही सरकार ने इंद्रनाथ और मुकरजी को मुकर्रर किया था।

■ उपेंद्रनाथ अश्क

अब सोचता हूं आनंद, तो सब कुछ ठीक ही मालूम होता है। कभी खयाल करता हूं कि दुर्गा दास कहीं गलत न कहते हों। बहरहाल जिस्मानी तकलीफ के अलावा मैं किस जहनी तकलीफ में मुब्तिला हूं। तुम इसका अंदाज कर सकते हो। सोचता हूं, मैंने इंद्रनाथ का क्या बिगाड़ा था कि इस परदेस में मुझे ला फंसाया, लेकिन किसी ने कहा है ना कि सादा-लौही के खून पर ही रियाकारी पलती है।

रघू

पी. एस

खत दुर्गा दास ही की वजह से तुम्हें पहुंच रहा है, नहीं तो शायद तुम जानते भी नहीं और मैं शायद काले पानी पहुंच जाता।

सेंट्रल जेल

आनंद

मैं सुल्तानी गवाह बन गया। अगरचे मुझे कुछ बहुत कहना नहीं पड़ा। फिर भी मेरे बयान की वजह से दोनो जवानों को काले पानी की सजा हो गई। तुम शायद मुझे बुजदिल और डरपोक खयाल करो, लेकिन सच जानना आनंद मैं किसी डर या खौफ की वजह से सुल्तानी गवाह नहीं बना, बल्कि मेरे इस फैसले की तह में इंतिकाम का वो जज्बा काम करता है, जो दिन-रात मेरे तन-बदन को जलाया करता है। मैं अभी तक जेर-ए-हिरासत हूं, लेकिन कुछ दिन तक आजाद हो जाऊंगा। मैं कसम खाकर कहता हूं आनंद। मैं इंद्रनाथ का पता लगाऊंगा और उससे पूरा-पूरा बदला लूंगा।

अपनी सादा-लौही पर मुझे हंसी आती है। इंद्रनाथ को मैं फरिश्ता समझता था, लेकिन मुझे मालूम हो गया, वह शैतान था। मुकदमा की समाअत खत्म हो गई, लेकिन अभी तक न इंद्रनाथ का पता है और न मुकरजी का। पता लगता भी कैसे? वे दोनों तो कहीं दूसरी साजिश खड़ी कर रहे होंगे। मुझे दुर्गा दास ने सब कुछ बता दिया है। पुलिस ने उन्हें मफरूर करार दे दिया है और पब्लिक की आंखों में धूल झोंकने के लिए उनको गिरफ्तार कराने में इमदाद करने वाले को इनाम देने का ऐलान कर दिया है। मुझे सब हकीकत का इल्म है और इसलिए मैं सुल्तानी गवाह बना। गिरफ्तार शुदा रफीक तो सजा पाते ही, लेकिन इंद्रनाथ से बदला लेने के लिए कौन रहता?

रघू

एक दूर- उफ्तादा गांव।

आनंद!

एक मुद्दत के बाद तुम्हें खत लिख रहा हूं। सोचता था, अब कुछ न लिखूंगा और इस तन्हा मुकाम में, दाग-ए-नाकामी सीने पर लिए चुपचाप इस दुनिया से गुजर जाऊंगा, लेकिन शायद जब तक तुम्हें लिख न लूंगा, मुझे मौत नहीं आएगी। आनंद मुझे धोखा हुआ। सचमुच बहुत बड़ा धोखा हुआ। बहुत देर हुई तहखाने में कौम-फरोश अमाचंद की तस्वीर देखी थी। रह-रह कर वह आजकल मेरे सामने फिर जाया करती है और मैं महसूस किया करता हूं कि मैं पागल हो जाऊंगा, लेकिन शायद उस वक्त तक मैं जिंदा नहीं रहूंगा।

अंजुमन के उसूल मुझे मारने या मर जाने पर मजबूर करते हैं। तुम्हें मैं नहीं मार सकूंगी। खुद मरूंगी और इससे पहले कि मैं उसे रोकता, उसकी लाश खून में लथपथ धरती में पड़ी तड़प रही थी।

जेल से आजाद होने के बाद आनंद, मैं इंद्रनाथ की तलाश में मुंहमिक हो गया। दुर्गा दास से मैंने पूछा, लेकिन उसने कहा उसकी रिहाइश का इल्म बड़े अफसरों के सिवा किसी को नहीं। दरअसल वह सरकार का राज है, किसी को बताया नहीं जा सकता, लेकिन मैंने तय कर लिया था कि मैं उसे ढूंढ़ कर दम लूंगा। मैंने शाही तहखानों की तलाशी करवा दी थी और वे खंडहर बिल्कुल वीरान पड़े थे। एक दिन जैसे किसी गैबी तरकीब से मैं उधर जा निकला। वहीं वीरान और डरावने तहखानों में से मुझे उन तमाम खूफिया जगहों का पता चल गया, जहां अंजुमन के मरकज थे। मुझे पूरा यकीन था कि इंद्रनाथ किसी दूसरे गिरोह को मुरत्तब करने में मुंहमिक होगा और इससे पहले कि वह अपने इरादे में कामयाब हो, मैं उसे उसके कैफर-ए-किरदार को पहुंचा देना चाहता था।

कई जगहों की तलाश के बाद मैं एक दिन उसी मकाम पर पहुंचा, जहां हमारी कार रुक गई थी। वहां बगैर रुके मैं चोटी पर पहुंच गया। पहुंच तो गया, लेकिन कुछ लम्हों के लिए मैं हैरान-सा खड़ा रह गया, क्योंकि सामने फिर घाटी थी। उस वक्त मुझे एक बार फिर यकीन हो गया कि इंद्रनाथ ने जान-बूझ कर कार रोक दी थी, क्योंकि आगे तो खौफनाक घाटी थी। यकीनन वह कार को इसमें नहीं गिराता। चुपचाप वहां खड़ा मैं तमाम वाकियात पर गौर करता रहा और इंतिकाम का जोश जैसे मेरे सीने में दुगने जोश से उठ कर खुद मुझको ही जलाने लगा।

तभी सामने की चढ़ाई पर मैंने किसी इंसानी शक्ल को चढ़ते देखा। शाम के धुंधलके में, मुझे वह इंद्रनाथ ही मालूम हुआ। तब बिजली की सी तेजी के साथ मैं नीचे उतरा। उस वक्त कहीं जरा भी पांव फिसल जाता, तो हड्डी-हड्डी चूर हो जाती, लेकिन मुझे किसी बात का खयाल नहीं था, बस भागा चला जाता था।

इंद्रनाथ दूसरी तरफ चोटी के करीब पहुंच गया। मैं भी ऊपर चढ़ने लगा। जल्दी ही मेरी टांगें फूलने लगीं। आंखों के आगे अंधेरा छाने लगा, लेकिन मैं चढ़ता चला गया। इससे पहले कि मैं इंद्रनाथ पर वार करता पिस्तौल की सर्द नाली मेरी कनपटी के करीब थी और मेरी क्लाई उसके पंजे में और मैं हैरान और भौंचक्का खड़ा था, क्योंकि यह इंद्रनाथ नहीं था, बल्कि एक खूबसूरत हसीना थी, जिसने मर्दों का लिबास पहन रखा था और उसके बाल अगरचे बहुत लंबे नहीं थे, लेकिन बे-परवाई से उसके कंधों पर लहरा रहे थे। शायद ये इंद्रनाथ की बहन थी। कुछ लम्हा मैं मबहूत-सा उसके चेहरे की तरफ देखता रहा, फिर मैंने हकलाते हुए कहा, लेकिन... मैं... तो इंद्र...

उसने बात काट कर कहा, भूल गए रघू! मुझे इतनी जल्दी भूल गए। अभी तो मुझे अंजुमन के उसूल के मुताबिक तुम्हें इस पिस्तौल का निशाना बनाना है। और वह दीवानों की तरह हंसी। सर्द-सी एक लहर मेरे जिस्म में दौड़ गई, लेकिन मैंने अपना तमाम हौसला इकट्ठा करके कहा, इंद्रनाथ...

मेरा नाम इंद्रा है, उसने कहा। मैंने कहा, इंद्रा! मैं खुद इसी इरादे से आया था। तुमने पुलिस की जासूस बन कर इतने बेगुनाहों पर जो जुल्म किया है, उसका बदला लेने ही मैं आया था।

पुलिस की जासूस। वो हंसी, रघू अपने गुनाह को छिपाने के लिए झूठ क्यों बोलते हो।

लेकिन तुम्हें पुलिस ने गिरफ्तार क्यों नहीं किया।

वह कर ही नहीं सकी। वह तो इंद्रनाथ की तलाश में है, लेकिन मैं तो इंद्रा हूं। हां मेरी गिरफ्तारी के लिए इनाम अभी तक मुश्तहर है।

मेरी आंखों के आगे अंधेरा छा गया और उस दीवाने अमाचंद की तस्वीर एक बार मेरी आंखों में घूम गई। इंद्रा ने फिर हंस कर कहा, 'रघू तुम बुजदिल नहीं। मैं ही बुजदिल हूं। अंजुमन के उसूलों के मुताबिक मुझे तुम्हें फौरन मौत के घाट उतार देना चाहिए था, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकी। मैं नहीं जानती रघू, लेकिन अब भी मैं ऐसा नहीं कर सकती। अंजुमन के उसूल के खिलाफ मैं भी चली हूं और इसकी सजा मौत है। तुम मुझे कत्ल करने आए थे। लो, कत्ल करो।' उसने पिस्तौल मेरे सामने फेंक दिया। मैं खामोश, साकिन, मबहूत खड़ा रहा।

उसने पिस्तौल उठा लिया, तुम मुझ पर फायर नहीं कर सकते रघू, लेकिन अंजुमन के उसूल मुझे मारने या मर जाने पर मजबूर करते हैं। तुम्हें मैं नहीं मार सकूंगी। खुद मरूंगी और इससे पहले कि मैं उसे रोकता, उसकी लाश खून में लथपथ धरती में पड़ी तड़प रही थी और पिस्तौल उसके हाथ से दूर जा पड़ी थी।

आह आनंद! वो मुझसे मोहब्बत करती थी।

रघू

(साभार : रेख्ता)

पुस्तकें आई हैं

हिंदी गजल : उद्भव और विकास
(आलोचना)
लेखक : रोहिताश्व अस्थाना
प्रकाशक : सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली
मूल्य : ₹795

हिंदी गजल पर समय-समय पर काम हुआ है, लेकिन उतना नहीं, जितना कि होना चाहिए, इसलिए इस कमी को काफी हद तक पूरा करती है 'हिंदी गजल : उद्भव और विकास।' पुस्तक में सात अध्याय हैं-'काव्य में गजल', 'हिंदी गजल की पृष्ठभूमि', 'उर्दू-फारसी गजल का शिल्प-विधान' और 'हिंदी गजल का उद्भव' से लेकर 'हिंदी गजल का शिल्प-विधान तथा उर्दू-फारसी' आदि। इसमें हिंदी गजल की अवधारणा तथा उसकी संभावनाओं के अलावा भविष्य को देखने का गंभीर प्रयास तो है ही, साथ ही इसमें गजल के इतिहास को समग्रता से देखने की कोशिश और हिंदी गजल की उपलब्धियों का आकलन भी किया गया है।

समय की खिड़की से झांकती कविता...
(कविता-संग्रह)
लेखिका : आरती स्मित
प्रकाशक : अद्विक पब्लिकेशन, दिल्ली
मूल्य : ₹200

'**शुक्रिया** नन्हीं दोस्त/शुक्रिया/मुझसे बोलने-बतियाने के लिए/शुक्रिया कि/नहीं उड़ाई खिल्ली/मेरे बूढ़े शरीर की/जबकि/बसंत ने पहना दी है/हर एक को/रंग-बिरंगी पोशाक।' -बुढ़ापा जीव-जंतु का हो या फिर पेड़-पौधों का, कमोबेश एक जैसा ही होता है। जर्जर और अकेलापन। ऐसे में किसी का उसके पास आना बड़ी बात है, इसलिए बूढ़े पेड़ पर जब नन्हीं चिड़िया आती है, तो पेड़ उसका शुक्रिया करता है। इसे कविता 'शुक्रिया नन्हीं दोस्त!' में खूबसूरती से बयां किया है। 'समय की खिड़की से झांकती कविता...' की रचनाएं पारिवारिक-सामाजिक ताने-बाने में बुनी कविताएं हैं।

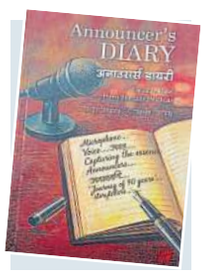

अनाउंसर्स डायरी
(डायरी)
प्रधान संपादक : पुरुषोत्तम श्रीवास
प्रकाशक : प्रवासी प्रेम पब्लिशिंग, साहिबाबाद
मूल्य : ₹725

'**यह** आकाशवाणी है...' आकाशवाणी की इस उद्घोषणा की गवाह श्रोताओं की कई पीढ़ियां रही हैं। इसका ध्येय वाक्य 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' केवल शब्दों तक सीमित नहीं है। चाहे संकट की स्थिति में देश को एकजुट करने की बात हो या मनोरंजन करना हो या फिर सूचना और शिक्षा का प्रचार-प्रसार करना हो, आकाशवाणी के उद्घोषकों ने उसकी आवाज बनकर देश के कोने-कोने में उसका संदेश पहुंचाया है। आकाशवाणी के इन नब्बे वर्षों की यात्रा को 'अनाउंसर्स डायरी' में चर्चित और अनुभवी उद्घोषकों के अनुभवों से संजोया गया है। पुस्तक में दो खंड हैं- हिंदी और अंग्रेजी में।

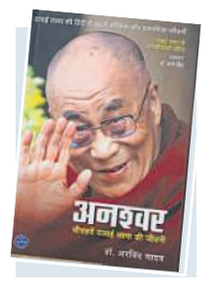

अनश्वर
(चौदहवें दलाई लामा की जीवनी)
लेखक : डॉ. अरविंद यादव
प्रकाशक : सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली
मूल्य : ₹1495

तिब्बती बौद्ध धर्म के गेलुग संप्रदाय के सबसे बड़े प्रमुख 14वें दलाई लामा का नाम तेनजिन ग्यात्सो है। तिब्बती संस्कृति और परंपरा में दलाई लामा को 'अवलोकितेश्वर' (करुणा के बोधिसत्व) का अवतार माना जाता है। पुस्तक 'अनश्वर' चौदहवें दलाई लामा की जीवनी है। 1959 में चीनी सैन्य कब्जे के विरुद्ध हुए विद्रोह के बाद उन्हें अपना देश छोड़ना पड़ा, तब से वे भारत में निर्वासित तिब्बती सरकार का नेतृत्व कर रहे हैं और तिब्बत की आजादी के लिए प्रयासरत हैं। इस वृहदाकार और शोधपूर्ण पुस्तक में दलाई लामा के असाधारण और संघर्षपूर्ण जीवन, निर्वासन, शांति के लिए उनके द्वारा किए जा रहे प्रयासों की गाथा है।

मां की ममता में तिरोहित हो गया तिरस्कार

दस साल की छोटी उम्र से लेकर अपने जीवन के आखिरी दिनों तक गानेवाले पं. मल्लिकार्जुन मंसूर को 'जयपुर-अतरौली घराने का सरताज', 'शुद्ध संगीत का आखिरी पुरोधा' के अलावा भी बहुत कुछ कहा जाता था। प्रस्तुत है उनकी आत्मकथा 'रसयात्रा' से एक अंश...

पुस्तक अंश

हमारा घर गांव के निचले टोले में था। घर में चार हिस्से थे, जिनमें मेरे बाबा और उनके तीन भाई रहा करते थे। घर का हर हिस्सा एक-दूसरे से अलग था। हर हिस्से में एक रसोई, एक बैठका और मवेशियों के लिए एक बाड़ा था। मेरे पिता ने बाबाओं के नाम पर ही अपने पुत्रों के नाम रखे, ताकि आने वाली पीढ़ियों में उनकी स्मृति बची रहे। सो यहां मुझे उनका नामोल्लेख कर देना चाहिए। सबसे बड़े मेरे बाबा बासप्पा, उनके बाद कालप्पा, तीसरे मालप्पा और सबसे छोटे थे लिंगप्पा।

इसी स्नेहसिक्त पुश्तैनी घर में मेरे पिता भीमरायप्पा गौड़ा और मां नीलम्मा ने अपना आशियाना बनाया। पिताजी गांव के मुखिया थे और मंसूर में कोई भी महत्वपूर्ण प्रयोजन उनकी सम्मानित उपस्थिति के बगैर अधूरा रहता। संगीत, नाटक औए डोडडता के विकट प्रेमी पिताजी अक्सर यहां नजदीक या दूर की मंडलियों को बुलाते, फिर घर पर सांस्कृतिक आयोजन

रसयात्रा
(आत्मकथा)
लेखक : पं. मल्लिकार्जुन मंसूर
अनुवाद : मृत्युंजय
प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
मूल्य : ₹250

होता। मां भी संगीत प्रेमी थीं। कुछ लोकगीत, लोरियां और भजन उन्हें याद थे और प्रायः मैं उन्हें सुरीली आवाज में गाते हुए सुनता। मां बेहद उदार व दयालु थीं। पड़ोसी जब भी मुश्किल में होते, उनकी मदद के लिए हाजिर रहतीं। मेहमानों को राजसी सम्मान मिलता। जंगम लोगों की सेवा से शुद्ध हमारा घर भजनों की पवित्र ध्वनि से गूंजता रहता।

मेरे पिता की आठ संतानें थीं- पांच बेटे और तीन बेटियां। बसवराज सबसे बड़े, फिर क्रमशः पर्वतम्मा, मल्लिकार्जुन, कालप्पा, लिंगप्पा, नागम्मा व शंकरप्पा और फिर सबसे छोटी शकुंतला। 31 दिसंबर, 1910 को अमावस्या के दिन मैं पैदा हुआ। बाबा ने पत्रा देखा, तो पता चला, मैं अशुभ मूल नक्षत्र में पैदा हुआ था। माना जाता था कि इस नक्षत्र में पैदा बालक अपने माता-पिता के लिए तबाही लाता है, इसलिए घर के बुजुर्गों ने मुझे मठ के सुपुर्द करने का फैसला ले लिया। मठ को गोद दिए जाने के मौके पर मां उदास-हताश हो गईं। यह देख मठ के दयालु गुरु यथाविधि उससे सहानुभूति जताते हुए बोले, 'इस बालक को मुझे दे दो, पर यह रहेगा यहीं।' मां खुशी से फूली नहीं समा रही थीं। इस तरह गोद लेने के संस्कार की औपचारिकता पूरी हुई। मुझे गुरु यथाविधि ने अपने हाथ में लिया और फिर मां ने तत्क्षण झपटकर मुझे वापस ले लिया।

खैर, इस संस्कार के बावजूद मुझ पर अशुभ का ठप्पा लगा ही रहा। तो संबंधियों के तिरस्कार से बेखबर मैं मां की सुखद ममता की छांव में रहने लगा। जब दुनिया किसी बच्चे को ठुकरा दे, तो उसके लिए मां का प्यार अपने आप लाखों गुना बढ़ जाता है। ऐसा ही मां के साथ हुआ। मां के निस्वार्थ प्यार से बड़ा इस दुनिया में कुछ नहीं। संसार जानता है कि आदि शंकराचार्य ने दुनियावी बंधनों का त्याग कर संन्यास ग्रहण किया था, फिर भी मां के स्नेह-बंधन के लोभ में वे उनके अंतिम संस्कार के लिए वापस आए। मां की महानता का सार उन्होंने इस श्लोक में व्यक्त किया है : '*कुपुत्रो जायते क्वचिदपि/कुमाता न भवति।*' - कोई पुत्र, कुपुत्र तो हो सकता है, पर माता, कभी भी कुमाता नहीं हो सकती।

मैं अक्सर इन पंक्तियों को याद करता हूं।

रोजनामचा

साप्ताहिक भविष्यफल

(28 जून से 04 जुलाई 2026)

पं. राघवेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

स्कैन करें
भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

मेष (21 मार्च-20 अप्रैल)
मन में उतार-चढ़ाव रहेंगे। 29 जून से माता की सेहत में सुधार होगा। परिवार में सुख-शांति रहेगी। नौकरी में तरक्की के अवसर मिलेंगे। आय में वृद्धि होगी। वाहन सुख में वृद्धि हो सकती है। खर्चों में वृद्धि होगी।

वृष (21 अप्रैल-20 मई)
आशा-निराशा के भाव मन में हो सकते हैं। आत्मसंयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखने का प्रयास करें। कारोबार में सुधार होगा। किसी मित्र का सहयोग भी मिल सकता है। आय में वृद्धि भी होगी।

मिथुन (21 मई-21 जून)
मन परेशान रहेगा। संयत रहें। व्यर्थ के क्रोध से बचें। फिर भी वाणी के प्रभाव से रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। कारोबार के विस्तार के लिए माता-पिता से धन की प्राप्ति हो सकती है। सेहत का ध्यान रखें।

कर्क (22 जून-23 जुलाई)
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। पठन-पाठन में रुचि बढ़ेगी। कला व संगीत के प्रति रुझान बढ़ सकता है। शैक्षिक कार्यों में सफलता मिलेगी। मान-सम्मान की प्राप्ति भी हो सकती है।

सिंह (24 जुलाई-22 अगस्त)
मन परेशान हो सकता है। आत्मसंयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखें। कारोबार में बदलाव के योग बन रहे हैं। परिवार के किसी बुजुर्ग से धन की प्राप्ति हो सकती है। परिश्रम अधिक रहेगा।

कन्या (23 अगस्त-22 सितंबर)
कारोबार में वृद्धि होगी। लाभ के अवसर मिलेंगे। कारोबार में विस्तार के लिए माता-पिता से धन मिल सकता है। कारोबार के लिए स्थान परिवर्तन के योग बन रहे हैं। घर-परिवार में धार्मिक कार्य हो सकते हैं।

तुला (23 सितंबर-23 अक्तूबर)
किसी मित्र के सहयोग से नौकरी के अवसर मिल सकते हैं। परिवार से दूर किसी दूसरे स्थान पर भी जा सकते हैं। भागदौड़ अधिक रहेगी। आय में वृद्धि भी होगी। आत्मविश्वास से काम लें।

वृश्चिक (24 अक्तूबर-21 नवंबर)
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा, परंतु मन में उतार-चढ़ाव भी हो सकते हैं। किसी नए कारोबार की शुरुआत हो सकती है, परंतु किसी दूसरे स्थान पर भी जा सकते हैं। परिवार का साथ रहेगा।

धनु (22 नवंबर-21 दिसंबर)
आत्मसंयत रहें। अपनी भावनाओं को वश में रखें। परिवार के साथ किसी धार्मिक स्थान पर जा सकते हैं। भागदौड़ अधिक रहेगी। खर्चों की अधिकता रहेगी। परेशान महसूस करेंगे।

मकर (22 दिसंबर-19 जनवरी)
पठन-पाठन में रुचि बढ़ेगी। मन में उतार-चढ़ाव भी हो सकते हैं। शैक्षिक कार्यों के सुखद परिणाम मिलेंगे। नौकरी में अफसरों के सहयोग से तरक्की के अवसर मिल सकते हैं। आय में वृद्धि भी होगी।

कुंभ (20 जनवरी-18 फरवरी)
मन परेशान हो सकता है। कारोबार में कठिनाई आ सकती है। भागदौड़ भी अधिक रहेगी। आय में कमी व खर्च अधिक की स्थिति हो सकती है। घर-परिवार में धार्मिक कार्य हो सकते हैं।

मीन (19 फरवरी-20 मार्च)
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। पठन-पाठन में रुचि बढ़ेगी। शैक्षिक कार्यों में सफलता मिलेगी। मान-सम्मान की प्राप्ति हो सकती है। परिश्रम अधिक रहेगा। रहन-सहन कष्टमय हो सकता है। खर्चों में वृद्धि होगी।

वर्ग पहेली : 8373

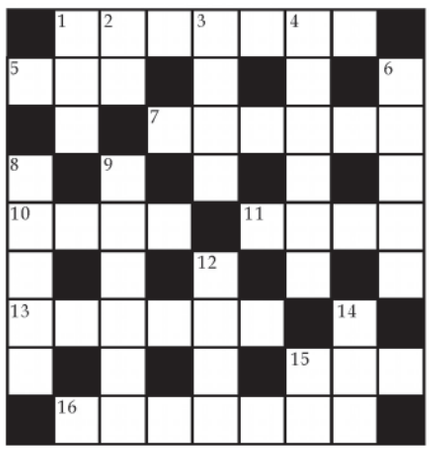

ऊपर से नीचे

1. ऊंचा करना; जगाना; सहारा देना; प्रगति कराना (3)
2. पंख; परंतु (2)
3. आसानी; सहजता; सुगमता (4)
4. जुर्माना वसूल करना; रसीद लिख कर देना (3,3)
6. लालच उत्पन्न करना; लालसा जगाना; लुब्ध करना; फंसाना (2,3)
8. उसी के अनुरूप; उसी के अनुसार; उसी तरह से (5)
9. अभ्यागत का आदर; आदर-सम्मान; आवभगत; खातिर (3,3)
12. नष्ट; चौपट (4)
14. पूरा करने वाला; पूर्तिकर्ता (3)
15. चिट्ठी; पत्र; लिखावट (2)

बाएं से दाएं

1. हंसी-ठट्ठा करना; दिल्लगी करना (4,3)
5. ऊंची धरती; चौरस और ऊंची जमीन; समतल ऊंची पर्वतीय भूमि (3)
7. चलने का ढंग बदलना; गति घटाना-बढ़ाना; शतरंज में चली हुई चाल को फिर से चलना (2,4)
10. वह जमीन जिस पर चलने से पैर धंस जाएं (4)
11. पनस; बड़ा, भारी व कांटेदार छिलके वाला फल (4)
13. जीवट दिखाना; जोखिम भरा काम करने का प्रयास करना; हिम्मत करना (3,3)
15. पीसने वाला नावनुमा पत्थर का कटोरा; औषधि घोटने का पात्र (3)
16. अंतिम समय तक; आखिरी दम तक; जीवन भर (3,2,2)

हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली
(उत्तर अगले अंक में)

वर्ग पहेली 8372 का उत्तर

सुडोकू : 8334

*मध्यम

			3	1		6		
				6	5		2	
	1						8	
5		9				3		
7			5		4			2
		8				7		6
	8						7	
	4		1	5				
		3		9	7			

खेलने का तरीका : दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। तर्क से इसे हल कर सकते हैं। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3x3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

हल : सुडोकू नं. 8333

9	1	8	6	4	5	2	7	3
2	4	5	7	9	3	1	6	8
7	3	6	8	2	1	9	5	4
6	2	7	4	1	9	8	3	5
8	9	3	5	7	6	4	2	1
4	5	1	3	8	2	6	9	7
3	6	4	2	5	8	7	1	9
5	8	9	1	6	7	3	4	2
1	7	2	9	3	4	5	8	6

व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋषभुकांत गोस्वामी

28 जून, रविवार, **शक संवत्** : 07 आषाढ़ (सौर) 1948, **पंजाब पंचांग** : 14 आषाढ़ मास प्रविष्टे 2083, **इस्लाम** : 12 मोहर्रम, 1448, **विक्रमी संवत्** : द्वितीय (शुद्ध) ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्दशी तिथि रात्रि 03.07 मिनट तक। मूल नक्षत्र, शुभ योग दोपहर 01.30 मिनट तक पश्चात शुक्ल योग, गर करण। चंद्रमा वृश्चिक राशि में रात्रि 01.09 मिनट तक उपरांत धनु राशि में। **सूर्य उत्तरायण।** सूर्य उत्तर गोल। ग्रीष्म ऋतु। सायं 04.30 मिनट से सायं 06 बजे तक राहुकालम्। भद्रा रात्रि 03.07 मिनट से। गंडमूल विचार।

वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

अपने आकार के कारण भी भूखंड होते हैं अशुभ :

- **तिकोना भूखंड** : तीन कोनेवाला भूखंड अच्छा नहीं माना जाता है। ऐसे भूखंड में कोर्ट, कानूनी विवाद, दुर्घटनाओं का भय तथा मानसिक तनाव बना रहता है।
- **बहुत कोनों वाला भूखंड** : ऐसे भूखंड, जिसमें बहुत सारे कोने निकले हुए हों। वह पारिवारिक कलह, अशांति, आर्थिक नुकसान की समस्या देता है।
- **गोल भूखंड** : गोल भूखंड पर बना घर आर्थिक उतार-चढ़ाव दे सकता है।
- **एल शेप वाला भूखंड** : एल शेप वाले भूखंड में दो दिशाएं होती ही नहीं। ऐसा भूखंड जीवन में कुछ-न-कुछ कमी बनाए रखता है।

नई दिल्ली

इंडियन एक्सप्रेस समूह

जनसत्ता सरोकार

सम-सामयिक

एक

जनसत्ता | 28 जून, 2026

जमीन वही, नाम अलग...खेल वही, चेहरे अलग। देश में एक पुरानी परंपरा है, जब सरकारी फाइलों में सड़क का नक्शा बनता है, रेल लाइन का ऐलान होता है, या सौर पार्क की योजना बनती है, तो उससे पहले, कभी-कभी उसी रात, किसी दूर के रिश्तेदार का नाम उस जमीन के कागजों पर दर्ज हो जाता है। यह भ्रष्टाचार का सबसे पुराना और सबसे शातिर रूप है, क्योंकि इसमें न घूस ली जाती है, न सरकारी खजाने से सीधे कुछ निकाला जाता है। बस भीतरी जानकारी का इस्तेमाल होता है। उज्जैन में मोहन यादव परिवार, राजस्थान के बीकानेर में वाड्रा, असम में हिमंत बिस्व सरमा की पत्नी, तेलंगाना में केशव राव, अरुणाचल प्रदेश में पेमा खांडू सभी अलग-अलग दलों के, अलग-अलग राज्यों के। लेकिन एक ही तौर-तरीका। सरोकार की पड़ताल।

साहब, बीवी, रिश्तेदार

सड़क बनने से पहले पहुंचते हैं सत्ता के संबंधी सरकारी परियोजना की सूचना है अहम

जब सरकारी नीति और परिवार की जमीन खरीद एक साथ चलें, तो यह संयोग नहीं, यह सत्ता का सबसे पुराना और सबसे शातिर दुरुपयोग है।

13 दिसंबर 2023 को मोहन यादव मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री बने। उसके बाद से जो हुआ, उसे भूमि रिकार्डों की गहन जांच के बाद उजागर किया गया। दो वर्षों में परिवार के सदस्यों ने उज्जैन में 137 भूखंड (कुल 168 एकड़) केवल 45 करोड़ रुपए में खरीदे। इनमें से 111 एकड़ उन सड़क परियोजनाओं के ठीक किनारे हैं जो यादव सरकार ने बाद में घोषित कीं। परिवार की जमीन उज्जैन मास्टर प्लान 2035 के उन लगभग सभी इलाकों में है जहां भूमि उपयोग कृषि से आवासीय में बदला गया। लेकिन यह कहानी अकेले उज्जैन की नहीं है। यह उस पुरानी परंपरा का नया अध्याय है, जो भारतीय राजनीति में 'इनसाइडर लैंड ट्रेडिंग' के नाम से जानी जानी चाहिए।

सत्ता में रहते हुए, सरकारी नीतियों की पूर्व जानकारी के आधार पर, परिवार के नाम जमीन खरीदना। यह खेल कांग्रेस ने खेला है, भाजपा ने खेला है, क्षेत्रीय दलों ने खेला है। तरीका नहीं बदलता, बस नाम बदलते हैं।

और यह सिर्फ भारत की बात नहीं। आस्ट्रेलिया में साल 1880 के दशक में रेल मंत्री ने अपनी जमीन के ऊपर से रेल लाइन निकलवाई। कनाडा में ग्लोबल ट्रांसपोर्टेशन हब के पास भूमि मंत्री के करीबी ने सरकारी दाम से दस गुना महंगे में बेची। शेयर बाजार में यह 'इनसाइडर ट्रेडिंग' है, जिसे अपराध माना जाता है। लेकिन जमीन के मामले में अभी तक इस तरह का कोई कानून भारत में नहीं है।

उज्जैन : खबर मिलते ही खबरदार हो जाते हैं सत्ताधीशों के रिश्तेदार

मोहन यादव मुख्यमंत्री बनने से पहले उज्जैन विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष (2004-2010), मध्य प्रदेश पर्यटन विकास निगम के प्रमुख (2011-13) और साल 2013 से उज्जैन-दक्षिण के विधायक रहे हैं। यानी तीन दशकों से उज्जैन के बुनियादी ढांचे और नीतियों से उनका सीधा जुड़ाव है। जब मास्टर प्लान 2035 मई 2023 में जारी होने वाला था, तो मार्च-अप्रैल 2023 में ही परिवार ने सवारखेड़ी में 30 एकड़ जमीन खरीद ली। बाद में उसी इलाके में भूमि उपयोग आवासीय में बदला गया। गंगेदी में 51 एकड़ (38 भूखंड) अप्रैल 2024 के बाद, जब उज्जैन-बदनागर और उज्जैन-इंदौर हाईवे अपग्रेड की घोषणा हुई।

उन्हेल में 29 एकड़, नए उज्जैन-नागदा हाईवे के दोनों किनारे। चंदेसरा में नौ एकड़, दो इंदौर-उज्जैन हाईवे के बीच। जयवंतपुरा में छह एकड़, उज्जैन-मक्सी मार्ग फोर-लेन के दक्षिणी किनारे पर। चचेरे भाई गोविंद ने गंगेदी में 41 एकड़ इंदौर के शांति महालोक बिल्डर्स को दे दी। इसमें 67.8 फीसद विकसित संपत्ति वापस गोविंद को मिलेगी। चचेरे भाई नीलेश ने सवारिया ब्रांड से चार आवास योजनाएं मध्य प्रदेश रेरा में दर्ज कीं।

पड़ताल का सार : मुख्यमंत्री बनने से पहले परिवार 108 भूखंड (179 एकड़) का मालिक था। मुख्यमंत्री बनने के बाद 137 भूखंड (168 एकड़) और जुड़े। इनमें से 111 एकड़ यादव सरकार की सड़क परियोजनाओं के किनारे हैं। परिवार उज्जैन मास्टर प्लान 2035 के लगभग हर उस क्षेत्र में है, जहां भूमि उपयोग बदला गया। मुख्यमंत्री और उनके कार्यालय ने इस खुलासे पर टिप्पणी नहीं की।

राजस्थान : राबर्ट वाड्रा और बीकानेर का सौर संपर्क

हरियाणा में गुरुग्राम की जमीन की कहानी तो चर्चित है-लेकिन वाड्रा का एक कम चर्चित मामला राजस्थान का है। बीकानेर के महाजन फायरिंग रेंज के बदले आबंटित जमीन के मामले में साल 2014 में राजस्थान सरकार ने 18 म्यूटेशन (स्वामित्व हस्तांतरण) रद्द किए। इन्हीं जमीन सौदों में वाड्रा की कंपनियां भी शामिल थीं।

वाड्रा पर आरोप था कि उन्हें केंद्र और राजस्थान की कांग्रेस सरकारों से बीकानेर में सोलर पार्क स्थापित होने की पूर्व जानकारी मिली। इससे उस इलाके की जमीन की कीमतें अचानक आसमान पर चली गईं। वाड्रा से जुड़ी कंपनियों ने उस जमीन में निवेश किया और बाद में मुनाफे पर बेचा। वाड्रा ने आरोप नकारे और कहा कि पुलिस ने तीन साल की जांच में उनसे जुड़ी किसी कंपनी के खिलाफ एक भी साक्ष्य नहीं पाया। बाद में सीबीआइ ने साल 2017 में इस मामले में 18 एफआइआर दर्ज की। मामला अभी भी लंबित है।

वाड्रा पर आरोप था कि उन्हें सोलर पार्क की योजना की पूर्व जानकारी मिली, जिससे उस इलाके की बंजर जमीन रातोंरात सोने में बदल गई। यही 'इनसाइडर लैंड ट्रेडिंग' का सबसे बड़ा उदाहरण है।

कैलाश विजयवर्गीय- महापौर काल का विवाद

इंदौर में सात बार के विधायक और वर्तमान में नगरीय विकास एवं आवास मंत्री कैलाश विजयवर्गीय का भी एक जमीन विवाद सार्वजनिक दस्तावेजों में दर्ज है। साल 2013 की एक रिपोर्ट के अनुसार, 82 वर्षीय पूर्व मंत्री सुरेश सेठ ने आरोप लगाया था कि जब विजयवर्गीय साल 2004 में इंदौर के महापौर थे, तब परदेशीपुरा क्षेत्र में मूलतः धनलक्ष्मी केमिकल्स को आबंटित तीन एकड़ जमीन नियमों की अनदेखी करके नंदानगर सहकारी समिति को दे दी गई। इसके प्रमुख विजयवर्गीय के करीबी मेंडोला थे। उस जमीन पर फ्लैट बने और बेचे गए। इससे सरकारी खजाने को 1.58 करोड़ रुपए का नुकसान हुआ।

अदालत ने साल 2010 में सेठ की शिकायत पर जांच के आदेश दिए। साल 2013 में आरोपपत्र दाखिल हुआ। सेठ के वकील ने विजयवर्गीय को भी आरोपी बनाने की याचिका दायर की। विजयवर्गीय ने खुद स्वीकार किया था कि उनकी अपनी पार्टी के विधायकों ने गैरकानूनी निर्माण से पैसे बनाए, हालांकि उन्होंने श्रेय कांग्रेस के भूमाफिया को दिया।

खेल का तरीका : सूचना ही असली पूंजी है

इन सभी मामलों का एक साझा धागा है- भीतरी जानकारी। शेयर बाजार में इसे 'इनसाइडर ट्रेडिंग' कहते हैं और यह अपराध है। लेकिन जमीन के मामले में भारत में कोई ऐसा कानून नहीं। सत्ता में बैठे व्यक्ति को पता होता है कि कहां सड़क बनेगी, कहां मास्टर प्लान बदलेगा, कहां सोलर पार्क आएगा। यह जानकारी आम नागरिक को नहीं होती। तब तक जमीन खरीदी जा चुकी होती है, परिवार के किसी दूर के रिश्तेदार के नाम।

सरकारी अधिकारी का जवाब हमेशा एक जैसा होता है : परिवार का पुराना कारोबार है। या सिर्फ पत्नी-बेटे को देखें, रिश्तेदारों को नहीं। या जमीन हाईवे से 100 मीटर दूर है। मोहन यादव मामले में हर संयोग पर एक अलग कहानी निकल कर आई। यही इस तरीके की ताकत है कि हर अकेला टुकड़ा एक संयोग लगता है, लेकिन साथ आने पर एक व्यवस्था बन जाता है।

कानून कब बनेगा?

भारत में भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम की धारा 13 सरकारी पद के आपराधिक कदाचार को अपराध मानती है, लेकिन 'इनसाइडर लैंड ट्रेडिंग' पर कोई स्पष्ट प्रावधान नहीं। मंत्रियों की संपत्ति घोषित होती है, लेकिन परिवार के दूर के सदस्यों की नहीं। चुनाव आयोग और लोकायुक्त के पास जांच की शक्ति है, लेकिन अक्सर इच्छाशक्ति नहीं होती।

जब तक सत्ता में बैठे लोगों के सभी नजदीकी रिश्तेदारों की संपत्ति का वार्षिक खुलासा अनिवार्य नहीं होता, जब तक जमीन रजिस्ट्री का डेटा वास्तविक समय में आनलाइन नहीं होता, जब तक इनसाइडर लैंड ट्रेडिंग को कानूनी परिभाषा नहीं मिलती, तब तक यह खेल जारी रहेगा। सड़क का नक्शा बनता रहेगा और उससे पहले, किसी दूर के रिश्तेदार के नाम जमीन दर्ज होती रहेगी।

-प्रस्तुति : संजय शर्मा

असम : नए भूमि कानून से पहले खरीद हुई

असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा की पत्नी रिनिकी भुइयां सरमा और उनकी कंपनी एकाए एस्टेट्स एलएलपी ने साल 2024 में माजुली में 18 बीघा जमीन खरीदी। एक मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, यह खरीद उसी दौर में हुई जब असम विधानसभा एक नया भूमि संशोधन विधेयक पास करने वाली थी जो संरक्षित क्षेत्रों के पांच किलोमीटर के दायरे में जमीन खरीद पर प्रतिबंध लगाने वाला था। यह खरीद कानून बनने से पहले हुई। इससे भी गंभीर मामला मीडिया पड़ताल में सामने आया। आरबीएस रियलटर्स प्राइवेट लिमिटेड, जिसकी सह-संस्थापक रिनिकी भुइयां सरमा थीं, ने 2006-09 के बीच गुवाहाटी हवाईअड्डे और टेक सिटी के पास भूमिहीनों के लिए आरक्षित 18 एकड़ सरकारी सीलिंग सरप्लस जमीन हासिल की। इस जमीन का आबंटन उस उपखंड भूमि सलाहकार समिति की सिफारिश पर हुआ, जिसके पदेन सदस्य स्थानीय विधायक यानी हिमंत थे। हिमंत ने सभी आरोप नकारे।

तेलंगाना : केशव राव परिवार और गोल्डस्टोन के तार

टीआरएस के राज्यसभा सांसद केशव राव की बेटी और पुत्र ने साल 2013 में हैदराबाद के इब्राहिमपटनम में 50 एकड़ जमीन खरीदी, जिसमें 38 एकड़ सरकारी वन भूमि निकली। खरीद गोल्डस्टोन प्रसाद से हुई जो उसी समय कुकटपल्ली उपपंजीयक के साथ 696 एकड़ सरकारी जमीन की अवैध बिक्री में मुख्य संदिग्ध था। इससे राज्य को 587 करोड़ रुपए का नुकसान हुआ। जमीन का पंजीकरण हाई कोर्ट के माध्यम से कराया गया। केशव राव ने सभी आरोप नकारे।

उत्तराखंड : चारधाम परियोजना की छांव में

उत्तराखंड में साल 2016 में 12,000 करोड़ रुपए की चारधाम महामार्ग विकास परियोजना का शिलान्यास हुआ। यह 889 किलोमीटर की बारहमासा सड़क यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ और बदरीनाथ को जोड़ने वाली परियोजना है। इस परियोजना के किनारे ऋषिकेश से लेकर माणा तक जमीन की कीमतें कई गुना बढ़ गईं। अखबारों में आई खबरों के मुताबिक हरिद्वार-ऋषिकेश क्षेत्र और राष्ट्रीय राजमार्ग-58 (ऋषिकेश-बदरीनाथ) के किनारे कई स्थानीय नेताओं के नाम या उनके परिवारों के नाम जमीन के सौदे हुए। परियोजना की घोषणा के आसपास। उत्तराखंड में जमीन के रिकार्ड सार्वजनिक रूप से उपलब्ध हैं, लेकिन व्यवस्थित जांच की कमी है। साल 2022-23 में जब परियोजना का 75 फीसद काम पूरा हुआ, तो देहरादून के पास मसूरी-चकराता मार्ग और हल्द्वानी-नैनीताल गलियारे के किनारे भूमि विवाद के मामले स्थानीय अदालतों में पहुंचे।

पेमा खांडू मामला : ईटानगर में जमीन आबंटन विवाद

अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री पेमा खांडू और उनके परिवार पर राजधानी ईटानगर और उसके आसपास के प्रमुख व्यावसायिक क्षेत्रों में सरकारी जमीन के अवैध आबंटन और कब्जे को लेकर गुवाहाटी हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में जनहित याचिकाएं दायर की गईं। आरोप है कि पेमा खांडू और उनके करीबियों ने अपने राजनीतिक प्रभाव का इस्तेमाल करके ईटानगर के मुख्य स्थानों पर सरकारी भूमि को अपने परिवार के सदस्यों और निजी कंपनियों के नाम आबंटित करवा लिया। सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग : याचिकाओं में कहा गया कि राजस्व विभाग के नियमों को ताक पर रखकर बिना किसी सार्वजनिक नीलामी या पारदर्शी प्रक्रिया के ये कीमती जमीनें कौड़ियों के भाव हस्तांतरित की गईं।

प्रमोद सावंत सरकार और जमीन का अवैध रूपांतरण

गोवा में भी जमीन का मामला बेहद संवेदनशील और बड़े राजनीतिक विवाद का कारण बना हुआ है। यहां मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत की सरकार द्वारा गोवा टाउन एंड कंट्री प्लानिंग (टीसीपी) एक्ट की धारा 16बी (धारा 16बी) के तहत बड़े पैमाने पर जमीन के जोनिंग में बदलाव (खेती या जंगल की जमीन को व्यावसायिक/सैटलमेंट जमीन में बदलना) करने का मामला बांबे हाई कोर्ट की गोवा बेंच और सुप्रीम कोर्ट पहुंचा।

वैश्विक समस्या : अपनी जमीन पर निकाली रेल योजना

आस्ट्रेलिया, 1880 : रेल मंत्री ने अपने हित में बना डाली योजना

विक्टोरिया का टामी बेंट घोटाला इतिहास का पहला दर्ज मामला-साल 1880 के दशक में विक्टोरिया राज्य के रेल मंत्री टामी बेंट ने एक नई रेल लाइन की योजना इस तरह बनाई कि वह उनके अपने निर्वाचन क्षेत्र से गुजरे। इससे उनकी खुद की जमीन की कीमत बढ़ गई। अखबारों ने तब लिखा था- सभी जानते थे बेंट बेईमान है। इतिहासकार फ्रैंक बोंगिओर्नो ने इसे आस्ट्रेलियाई राजनीतिक भ्रष्टाचार का पहला दर्ज उदाहरण बताया।

आस्ट्रेलिया, 2018 : लेपिंगटन ट्राएंगल- 2,200 करोड़ रुपए में 220 करोड़ रुपए की जमीन

पश्चिमी सिडनी हवाईअड्डे के लिए जमीन खरीद में घोटाला-साल 2018 में आस्ट्रेलियाई सरकार ने पश्चिमी सिडनी हवाईअड्डे के लिए लेपिंगटन ट्राएंगल की जमीन 30 मिलियन डालर (लगभग 220 करोड़ रुपए) में खरीदी, जबकि उसका वास्तविक मूल्य केवल तीन मिलियन डालर था। जमीन साल 2050 तक काम आने वाली नहीं थी। बाद में पता चला कि जमीन के मालिक पेरिच परिवार ने उसी साल सत्तारूढ़ लिबरल पार्टी को 58,800 डालर का चंदा दिया था।

कनाडा, 2013 : ग्लोबल ट्रांसपोर्टेशन हब- मंत्री के करीबी की जमीन दस गुना दाम पर बिकी

सैस्केचेवान जीटीएच जमीन घोटाला-सरकार ने 155 करोड़ रुपए में खरीदी 15 करोड़ रुपए की जमीन। साल 2013 में सैस्केचेवान प्रांत की सैस्केचेवान पार्टी सरकार ने रेजाइना में ग्लोबल ट्रांसपोर्टेशन हब (जीटीएच) के लिए 204 एकड़ जमीन 21.1 मिलियन डालर में खरीदी, जबकि उसका बाजार मूल्य केवल सात मिलियन डालर था। जमीन का एक हिस्सा उस रेजिना के डेवलपर एंथनी मार्क्वार्ट का था, जिसके करीबी संबंध तत्कालीन मंत्री से थे। एक जांच में पता चला कि मंत्री के फार्मिंग आपरेशन में टैपाउफ परिवार जमीन किराए पर देता था और टैपाउफ ने ही जमीन उस डेवलपर को बेची थी। साल 2016 में प्रांतीय लेखा परीक्षक ने घोटाले की पुष्टि की।

जर्मनी, 2020 : वायरकार्ड और सुपरविजरी अथारिटी की इनसाइडर ट्रेडिंग

बाफिन (जर्मन सेबी) के कर्मचारियों ने घोटाले की जानकारी पर शेयर खरीदे -वायरकार्ड दो अरब डालर के लेखा घोटाले में जर्मन वित्तीय नियामक बाफिन के कर्मचारियों पर आरोप लगा कि उन्होंने वायरकार्ड के डूबने की अंदरूनी जानकारी पर शेयर बेचे। इसके बाद जर्मन संसद ने धारा 11 फिनडीएजी के तहत बाफिन कर्मचारियों को किसी भी कंपनी के शेयर खरीदने पर प्रतिबंध लगा दिया। यह मामला ईयू एमएआर कानून की कमजोरी उजागर करने का उदाहरण बना।

अमेरिका, 2020 : कोविड सीनेटरों का इनसाइडर ट्रेडिंग मामला

स्टाक एक्ट के बावजूद सीनेटरों ने कोविड की जानकारी पर शेयर बेचे-जनवरी 2020 में अमेरिकी सीनेटरों को कोविड-19 पर गोपनीय जानकारी मिली। कुछ ही दिनों में रिपब्लिकन सीनेटर रिचर्ड बर और उनकी पत्नी ने 1.72 मिलियन डालर के शेयर बेचे। केली लोफ्लर ने भी भारी बिक्री की। जांच शुरू हुई पर डीओजे ने साल 2020 में बिना आरोप के बंद कर दी।

भारत के लिए सबक : क्या होना चाहिए?

विदेशी अनुभवों से भारत के लिए तीन स्पष्ट सबक निकलते हैं। पहला-परिभाषा : इनसाइडर लैंड ट्रेडिंग को कानूनी परिभाषा देनी होगी। शेयर बाजार की तरह जमीन मामले में भी अंदरूनी जानकारी के आधार पर खरीद को अपराध घोषित करना होगा। दूसरा-खुलासा : मंत्रियों और मुख्यमंत्रियों के सभी नजदीकी रिश्तेदारों यानी पत्नी, बच्चे, भाई-बहन, प्रथम चचेरे भाई तक की संपत्ति का वार्षिक खुलासा अनिवार्य हो। तीसरा-पारदर्शिता : जमीन रजिस्ट्री का डेटा वास्तविक समय में आनलाइन हो।

भारत के भविष्य के पांच संकेत

दूसरी नजर

पी चिदंबरम

मैं ने कई वर्षों तक भारत में सामाजिक और राजनीतिक रुझानों को देखा एवं समझा है। जो चीजें एक गहरी धारा जैसी लगती हैं, हो सकता है कि वे वैसी न हों और बस कुछ समय के लिए आए बादल की तरह हों। ऐसे बादल स्वागत योग्य बारिश तो ला सकते हैं, लेकिन वह जलवायु की स्थायी पहचान नहीं बनते।

वर्ष 1947 एक निर्णायक मोड़ था। आजादी के बाद से कई स्पष्ट प्रभाव और रुझान देखे गए, लेकिन वे ज्यादा समय तक नहीं टिके, जबकि कई ऐसे शुरुआती रुझान थे, जो ज्यादातर लोगों की नजर में नहीं आए और वे स्थायी बन गए। उदाहरण के लिए, महात्मा गांधी के प्रति गहरी श्रद्धा और सैकड़ों समर्पित गांधीवादियों के बावजूद गांधीवादी जीवन दर्शन, *अहिंसा, सत्याग्रह, चरखा* और सविनय अवज्ञा की भावना उनके निधन के कुछ दशकों बाद ही कमजोर पड़ गई। दूसरी ओर, भारत में तेजी से शहरीकरण का अंदाजा बहुत कम लोगों को था, जलवायु परिवर्तन की ओर भी कम ही लोगों का ध्यान गया, और इंसान तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के बीच के जटिल रिश्ते को तो और भी कम लोग समझ पाए।

एक कहावत है, 'भविष्यवाणी करना बहुत मुश्किल है, खासकर जब बात भविष्य की हो' (नोबेल पुरस्कार विजेता नील्स बोर और मशहूर बेसबाल खिलाड़ी योगी बेरा)। फिर भी, मैं इस मुश्किल कार्य में कदम रखने का साहस करूंगा। मैंने पांच ऐसे रुझानों को जाना-समझा है, जो ताकत और गति पकड़ सकते हैं। भले ही मुझे इनमें से कुछ रुझान पसंद न हों या उनसे घबराहट हो, लेकिन ऐसा लगता है कि इन्हें रोका नहीं जा सकता:

लोकतंत्र का गिरता स्तर

लोकतंत्र का अर्थ है जनता का शासन। इस व्यवस्था में हर व्यक्ति जन्म से आजाद होता है और उसे स्वतंत्रता के अनेक अधिकार प्राप्त होते हैं। लोकतांत्रिक सरकार वह है, जो लोगों के अधिकारों का सम्मान और बचाव करती है, और ऐसी स्वतंत्र संस्थाएं बनाती है, जो इन अधिकारों की रक्षा करती हैं और उन्हें सही तरीके से लागू करती हैं। *फ्रीडम हाउस, वी-डेम इंस्टीट्यूट और रिपोर्टर्स विदाउट बार्डर्स* जैसे शोध संस्थान विभिन्न मानकों के आधार पर देशों की आजादी और लोकतांत्रिक स्थिति का आकलन करते हैं। दुनिया के ज्यादातर देशों की रैंकिंग लगातार गिर रही है। भारत का स्कोर वर्ष 2005 में 77 था, जो अब घटकर 63-67 के बीच रह गया है। हो सकता है कि भारत सिर्फ 'चुनावी लोकतंत्र' बनकर रह जाए, जहां चुनाव तो हों, लेकिन वे पहले जितने स्वतंत्र और निष्पक्ष न रहें। ऐसा लगता है कि देश की जनता भारत की इस गिरती साख से परेशान नहीं है, क्योंकि उन्हें कल्याणकारी योजनाएं और आधारभूत संरचना मिल रही हैं, और दमनकारी सामाजिक ढांचे को कोई चुनौती नहीं मिल रही है। इस मामले में चीन की रैंकिंग कई वर्षों से 9/100 पर स्थिर है, लेकिन तमाम रिपोर्टों के अनुसार, वहां के लोग खुश हैं। हो सकता है कि भारत भी उसी रास्ते पर चल पड़े।

> लोकतंत्र का अर्थ है जनता का शासन। इस व्यवस्था में हर व्यक्ति जन्म से आजाद होता है और उसे स्वतंत्रता के अनेक अधिकार प्राप्त होते हैं। लोकतांत्रिक सरकार वह है, जो लोगों के अधिकारों का सम्मान और ऐसी स्वतंत्र संस्थाएं बनाती है, जो इन अधिकारों की रक्षा करती हैं और उन्हें सही तरीके से लागू करती हैं। हो सकता है कि भारत सिर्फ 'चुनावी लोकतंत्र' बनकर रह जाए, जहां चुनाव तो हों, लेकिन वे स्वतंत्र और निष्पक्ष न रहें।

एकाधिकार बनाम उद्यमी

अर्थव्यवस्था के कई क्षेत्रों पर द्वयाधिकार या अल्पाधिकार का दबदबा है- जैसे हवाई सेवा, दूरसंचार, सीमेंट, स्टील, बिजली, दवा, पेट्रोलियम, रक्षा उत्पाद, खनन और परचून। और भी क्षेत्र इसी रास्ते पर जा सकते हैं। छोटे व्यवसाय और सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम लगभग खत्म हो जाएंगे। गैर-सरकारी संगठनों का गला घोंट दिया जाएगा। आर्थिक शक्ति का वितरण तेजी से एकाधिकारवादियों के पक्ष में होता जाएगा। पूंजी और श्रम के बीच का संतुलन पूंजी के पक्ष में झुकना जारी रहेगा। आय का वितरण अमीरों और अति-अमीरों के पक्ष में हो जाएगा। इससे आय की असमानता बढ़ेगी और समाज पहले से अधिक असमान होता जाएगा।

आंतरिक पलायन, पहचान खत्म

अधिकांश बड़े शहर महानगरीय बन चुके हैं, जहां भाषाओं, धर्मों, संस्कृतियों तथा खान-पान की विविधता है। कई छोटे शहर भी इसी राह पर चल रहे हैं। शहरीकरण और बड़े पैमाने पर पारगमन प्रणालियां इस प्रवृत्ति को देश के भीतर और गहराई तक ले जाएंगी। कोई भी किसी एक स्थान से 'जुड़ा हुआ' नहीं रहेगा, 'पैतृक स्थान' संयुक्त परिवार की तरह विलुप्त हो जाएगा। मिलने वाले अधिकांश लोग अजनबी होंगे। दोस्तों का दायरा छोटा हो जाएगा और रिश्ते उपकरणों के माध्यम से बनेंगे। बातचीत मशीनों द्वारा संचालित होगी। यह धारणा गलत साबित हो सकती है कि कोई भी व्यक्ति अकेला नहीं रह सकता। भावनाओं के बजाय लेन-देन ही लोगों के बीच संबंधों को निर्धारित करेगा।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद बनाम अल्पसंख्यक

विज्ञान और छद्म-विज्ञान के बीच का फर्क मिट जाएगा। जैसा कि वासुदेवन मुकुंद ने लिखा था *(द हिंदू, 23 जून 2026)*- शैक्षिक प्राधिकारी *पौराणिक* विज्ञान को विज्ञान, पौराणिक कथाओं को इतिहास, रीति-रिवाजों को तकनीक और तथ्यों की पुष्टि को खुलेआम नजरअंदाज करने की प्रथा को संस्थागत रूप देंगे। आइआइटी को पौराणिक कथाओं, पुनर्जन्म और वैदिक जीव विज्ञान पर 'शोध' करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। सांस्कृतिक पुनरुत्थान मंदिरों के पुनर्निर्माण और हिंदू त्योहारों को मनाने के इर्द-गिर्द घूमेगा। कई शहरों में मांस की दुकानों पर प्रतिबंध लगाया जा सकता है। पश्चिम बंगाल के बाद, अन्य राज्य भी मध्याह्न भोजन योजना से अंडे हटा सकते हैं। और भी कई राज्यों में समान नागरिक संहिता लागू की जाएगी। हिंदुत्व के एजंडे के विरोध को कुचल दिया जाएगा। ज्यादा से ज्यादा बच्चे और वयस्क केवल एक भाषा हिंदी में ही बोल और लिख पाएंगे, जिससे विज्ञान, तकनीक और वैश्विक ज्ञान तक उनकी पहुंच सीमित हो सकती है (जब तक कि हिंदी, अंग्रेजी और अन्य भाषाओं की बराबरी नहीं कर लेती)। धार्मिक, भाषाई और जातीय अल्पसंख्यक इस डर में जिएंगे कि क्या एक ऐतिहासिक रूप से बहुलवादी देश में उनके बच्चों के लिए कोई जगह होगी।

अति-अमीर बनाम गरीबों की बड़ी आबादी

इन रुझानों का 144 करोड़ लोगों पर गहरा असर पड़ेगा, यह आबादी 167 करोड़ तक पहुंचकर स्थिर हो जाएगी और फिर घटने लगेगी। भारत की तरक्की होगी- चाहे विकास दर पांच फीसद हो या उससे ज्यादा, और सरकार चाहे कोई भी हो, क्योंकि भारतीय लोग अनाज उगाएंगे, उत्पाद तैयार करेंगे और उनका खुद इस्तेमाल करेंगे या निर्यात करेंगे। अमीर और अति अमीर लोगों की संख्या बढ़ेगी, लेकिन लाखों-करोड़ों लोग आर्थिक पिरामिड के सबसे निचले स्तर पर ही रहेंगे। इन लोगों के लिए मांग, उपभोग, विकास और जीवन स्तर निम्न ही रहेगा। इसके अलावा, अगर इन लोगों को किसी न किसी बहाने विकास की मुख्यधारा से बाहर रखा गया, तो उनकी स्थिति और खराब होगी। ऐसे में भारत पहले से अधिक असमान और ज्यादा बंटा हुआ होगा, जिससे समाज में आक्रोश बढ़ेगा।

इन पांच संकेतों पर सवाल उठाए जा सकते हैं या उनमें कुछ जोड़ा या घटाया जा सकता है, लेकिन इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि देश की *दिशा* और ये *संकेत* ही तय करेंगे कि आने वाले समय में दुनिया में भारत का स्थान क्या होगा।

भ्रष्टाचार की कड़ियां

वक्त की नब्ज

तवलीन सिंह

> मेरी जानकारी के कई लोग हैं महाराष्ट्र में जो सत्ता में आने से पहले अमीर नहीं थे, जो अचानक इतने अमीर हो गए हैं कि अब निजी हवाई जहाजों में घूमते हैं और जिनकी निजी विदेशी गाड़ियां करोड़ों की होती हैं। देसी गाड़ियों में चलते ही नहीं हैं। इस तरह की भ्रष्ट राजनीतिक सभ्यता दशकों से चली आ रही है, लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कभी कहा था 'ना खाऊंगा, ना खाने दूंगा'।

चलिए इस सप्ताह बात करते हैं भ्रष्टाचार की। इस विषय पर सोच ही रही थी कि एक उदाहरण प्रकट हुआ मेरे सामने। मुंबई में पिछले सप्ताह इस साल की पहली बारिश हुई थी और छप्पर फाड़ कर आसमान से पानी बरसा। जैसा अक्सर होता है जब तेज बारिश होती है, गाड़ियों की पार्किंग उतना ही मुश्किल है, जितना टैक्सी या आटो का मिलना। हुआ यों कि मैं पैदल चल कर ट्राइडेंट होटल में गई थी किसी से मिलने, लेकिन घर लौटना मुश्किल था, इसलिए कि बारिश बहुत तेज हो रही थी, तो मैंने अपने एक दोस्त से बात करके उसकी गाड़ी मंगवाई। जब उसका ड्राइवर मुझे लेने आया, तो काफी देर तक उसको ऊपर आने नहीं दिया गया, क्योंकि गाड़ियों की लंबी कतार लग चुकी थी।

वैसे भी दिक्कत थी बरसात की वजह से, लेकिन जाम लगने का सबसे बड़ा कारण यह था कि कई सारी बहुत बड़ी और बहुत महंगी गाड़ियां होटल के बरामदे में खड़ी थीं बिना किसी चालक के। मैंने जब एक दरबान से पूछा कि उन गाड़ियों को वहां लगाने क्यों दिया जा रहा है, तो उसने परेशान आवाज में कहा, 'जी यह सब मंत्रियों की गाड़ियां हैं। जब भी विधानसभा का सत्र चलता है, ये लोग इस होटल में आकर ठहरते हैं और अपनी गाड़ियां दिन भर यहीं छोड़ कर जाते हैं।' मैं जानती हूं कि अपने इस भारत देश में फटाफट, बिना मेहनत किए, अमीर होने का सबसे आसान रास्ता है राजनीति में आना, लेकिन उन गाड़ियों को देख कर और उन मंत्रियों की शान को देख कर मैं हैरान रह गई। पहली बात तो इतनी महंगी गाड़ियां खरीदते कैसे हैं हमारे जनसेवक और दूसरी बात पांचसितारा होटलों में रहते कैसे हैं? सरकारी तनख्वाह से ये पैसे नहीं आ सकते हैं, तो कहां से आता है? क्या इसको भ्रष्टाचार नहीं कहा जाए?

भ्रष्टाचार की बातें इस सप्ताह इसलिए करना चाहती हूं, क्योंकि 'इंडियन एक्सप्रेस' ने खोजी पत्रकारिता के जरिए मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री के बारे में ढूंढ निकाला है कि उन्होंने उज्जैन में अपने लिए और अपने पूरे परिवार के लिए शहर के उन जगहों पर जमीन खरीदी हैं, जिनकी कीमत अचानक उस समय बढ़ जाएंगी, जब उन इलाकों का विकास किया जाएगा। यह खुलासा भी किया गया है कि मुख्यमंत्री मोहन यादव और उनके परिवार की उज्जैन में जमीन दोगुनी हो गई है, जब से वे मुख्यमंत्री बने हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, मुख्यमंत्री के परिवार ने 137 प्लाट खरीदे हैं 168 एकड़ जमीन पर। मुख्यमंत्री ने अपनी सफाई में कहा है कि इस रिपोर्ट में कोई सच्चाई नहीं है और उनके समर्थक तथा भारतीय जनता पार्टी के प्रवक्ता कहते नहीं थके हैं कि राजनीति में आने से पहले उनका जमीन-जायदाद का कारोबार था। रहा होगा उनका कारोबार, लेकिन मुख्यमंत्री बन जाने के बाद अगर इस तरह उनके परिजनों ने इतनी सारी जमीन खरीदी है उज्जैन में, तो क्या इसलिए नहीं कि उनको जानकारी थी कि कौन से इलाकों में नए रिहाइशी और व्यावसायिक क्षेत्र बनने वाले हैं? इसको भ्रष्टाचार नहीं कह सकते हैं, तो किसको कह सकते है? मोहन यादव पहले 'डबल-इंजन' मुख्यमंत्री हैं, जिनके बारे में इस तरह की बातें सामने आई हैं, लेकिन सच यह है कि बहुत दिनों से बहुत सारी बातें होती रही हैं भाजपाइयों के भ्रष्टाचार की।

मेरी जानकारी के कई लोग हैं महाराष्ट्र में जो सत्ता में आने से पहले अमीर नहीं थे, जो अचानक इतने अमीर हो गए हैं कि अब निजी हवाई जहाजों में घूमते हैं और जिनकी निजी विदेशी गाड़ियां करोड़ों की होती हैं। देसी गाड़ियों में चलते ही नहीं हैं। इस तरह की भ्रष्ट राजनीतिक सभ्यता दशकों से चली आ रही है, लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कभी कहा था 'ना खाऊंगा, ना खाने दूंगा'। सो जब उनके मंत्री और मुख्यमंत्री दिखते हैं भ्रष्टाचार में पूरी तरह लिप्त, तो कुछ ज्यादा तकलीफ तो होती ही है।

उज्जैन की खबर आने से पहले खबर आई थी अयोध्या से, जहां चढ़ावा चोरी हुआ है रामजी के मंदिर से और इस पैमाने पर कि जिन्होंने इसको होने दिया है, उनको कभी न कभी हिसाब देना पड़ेगा। वैसे ही जैसे चोरी करने वालों से हिसाब मांगा जा रहा है। हीरों के हार चोरी हुए हैं, सोना चोरी हुआ है और नकद पैसा करोड़ों में। यह भी मालूम हुआ है कि यह सब इसलिए हुआ, क्योंकि चढ़ावे की गिनती की जाती थी लापरवाही से। मंदिर के प्रशासकों को कई बार कहा गया था कि इतना पैसा जब आता है, तो उसको गिनने का काम किसी अनुभवी कंपनी को देना चाहिए न कि मंदिर के सेवकों को। अब जो चोरी पकड़ी गई है, तो क्या बुलडोजर बाबा उनके घरों को बुलडोजर से गिराएंगे? छोटे-मोटे चोरों के घर अगर ढहाए जा सकते हैं, तो उनके क्यों नहीं जिन्होंने भगवान के घर से चोरी की है?

तो क्या भ्रष्टाचार को हम कभी रोक पाएंगे अपने इस बदनसीब, बेहाल देश में? रोकना ही होगा, वरना हमको विश्वगुरु बनने का सपना भूल जाना चाहिए। उन देशों में जहां इस पैमाने पर भ्रष्टाचार फैल जाता है, उनके विकसित होने का सवाल नहीं होता है। निवेशक ऐसे देशों में निवेश करने से घबराते हैं। ऐसा नहीं है कि भ्रष्ट राजनेता और आला अधिकारी सिर्फ भारत में हैं। विकसित देशों में भी भ्रष्ट लोग होते हैं, लेकिन फर्क यह है कि वहां उन लोगों को आसानी से दंडित किया जा सकता है, क्योंकि उन देशों में कानून प्रणाली आधुनिक तरीकों से चलती है। अपने देश में तो आतंकवादियों को सजा देने में ही कई दशक लग जाते हैं, सो जो आर्थिक अपराध होते हैं, उनकी बारी देर से आती है। भ्रष्टाचार बहुत बड़ा मुद्दा बन गया है आम लोगों के लिए, लेकिन लगता है कि यह खबर दिल्ली के ऊंचे तख्तों तक नहीं पहुंची है।

सवाल और विमर्श

संदर्भ

राकेश सिन्हा

> संघ के आलोचक संगठन के अहम पहलुओं को भूल जाते हैं। इसलिए वर्ष 1950 से अब तक संघ-विरोधी उसके प्रति अज्ञानता का पिरामिड बन कर रह गए हैं। वर्ष 2025-26 संघ का शताब्दी वर्ष है। यह एक सुनहरा अवसर था, जब सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक पहलुओं पर गंभीर विमर्श होता। मगर इसकी शुरुआत तक नहीं हो पाई। यह एक अवसर खोने जैसा है। शास्त्रार्थ का देश नए युग में जी रहा है जिसे 'आरोप-प्रत्यारोपार्थ' का युग कह सकते हैं।

कर्नाटक के गृह मंत्री प्रियांक खरगे ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत को पत्र लिख कर कुछ प्रश्न पूछे हैं और इसके पंजीकृत नहीं होने का कारण जानना चाहा है। भारतीय विमर्श परंपरा में प्रश्नोत्तर का विशेष महत्त्व है। प्रश्न करने वाला स्वयं विषय को समझता है और उस पर अपनी आलोचनात्मक राय रखता है। प्रश्नों से वह विचार पर द्वंद्व और अज्ञानता को दूर करना चाहता है। खरगे न तो संघ को समझना चाहते हैं, न ही उनकी नीयत संघ के विचार पर गहन विमर्श करने की है। उन्हें इस बात का व्यावहारिक ज्ञान जरूर है कि संघ विरोध में सुर्खियां मिलेंगी। इसमें वे सफल रहे। आज वे अन्य राज्यों में अपने समकक्षों की तुलना में देश में सबसे अधिक परिचित नाम हैं।

राजनीतिज्ञों का एक वर्ग पिछले कई दशकों से इस तरह के सतही विवादों से राजनीति में अपनी तात्कालिक प्रासंगिकता बढ़ाता रहा है। वर्ष 1974-75 में स्वयं इंदिरा गांधी हर बात के लिए संघ पर अंगुली उठाती रहीं, तो वर्ष 1977 में देश में जनता पार्टी की सरकार बनने के बाद मधु लिमये, कृष्णकांत और राजनारायण जैसे नेता संघ से छद्म युद्ध करते रहे। इससे भी पूर्व 1960 के दशक में जवाहर लाल नेहरू की समर्थक सुभद्रा जोशी ने सांप्रदायिकता के खिलाफ समिति बना कर संघ विरोधी दर्जनों रचनाओं का प्रकाशन किया था। लिखने वाले सभी प्रियांक खरगे जैसे ही लोग थे। लिहाजा राज्य पोषित यह अभियान जमीन पर बेअसर रहा।

वर्ष 1936 की एक घटना इस संदर्भ में प्रासंगिक है। महात्मा गांधी के सहयोगी और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता जमनालाल बजाज ने संघ के संस्थापक हेडगेवार को संघ संबंधित प्रश्नों की सूची भेजी थी। इस पर उनका जवाब रोचक था। उन्होंने उत्तर में लिखा 'आप हेडमास्टर नहीं हैं कि मैं एक स्कूली छात्र के रूप में आपके प्रश्नों का जवाब दूं।' बजाज वर्धा के रहने वाले थे जहां संघ की नागपुर के बाद सबसे मजबूत स्थिति थी। दो वर्ष पूर्व गांधी जमनालाल बजाज के साथ वर्धा में संघ शिविर देखने आए थे। उन्होंने स्वयंसेवकों के साथ संवाद कर संघ के व्यावहारिक पक्ष, विशेषकर जाति, अस्पृश्यता, आर्थिक बराबरी आदि को समझना चाहा। बाद में उन्होंने हेडगेवार से संवाद किया। तेरह साल बाद वे सितंबर 1947 में दिल्ली में संघ शिविर पुनः आए। वहां उनका स्वयंसेवकों के साथ लंबा प्रश्नोत्तर हुआ। संघ को समझने का यह ईमानदार प्रयास था।

उनके बाद जयप्रकाश नारायण ने इसी रास्ते को अख्तियार किया। वे आरंभ में संघ विरोधी थे। मगर वे इसे समझना चाहते थे। इसकी ललक उन्होंने वर्ष 1968 में सांप्रदायिकता विरोधी कमेटी के प्रथम सम्मेलन में दिखाई। एक के बाद दूसरे वक्ताओं का संघ विरोध में अलंकृत भाषण के बीच जयप्रकाश नारायण (जो इसके उद्घाटनकर्ता और मुख्य अतिथि थे) ने हस्तक्षेप करते हुए कहा कि 'लगता है यह सांप्रदायिकता नहीं, बल्कि संघ विरोधी सम्मेलन है।' बाद में वे संघ को समझने के लिए इसके निकट आए। उसी निकटता के क्रम में उनका पटना में 1977 में संघ शिविर में जाना हुआ था। हेडगेवार दृढ़ता से मानते थे कि संघ, राजनीति की तात्कालिक या दीर्घकालिक आवश्यकता पूर्ति के लिए नहीं बना है। भागवत ने हेडगेवार द्वारा बजाज को लिखे गए पत्र के भाव को ही सुसंगत तरीके से रखा है कि संघ को निकट से देख कर ही इसके साथ रचनात्मक संवाद संभव है। संघ की शुरुआत संस्था के रूप में हुई ही नहीं। इसकी स्थापना के छह महीने बाद इसका नामकरण हुआ। पदाधिकारी तीन वर्षों बाद बने। कार्यालय बनने में एक दशक लग गया। स्थापना के पीछे एकमात्र लक्ष्य हिंदुओं में राष्ट्रीय पहचान, राष्ट्रवादी वृत्ति और सामाजिक बराबरी का भाव पैदा करना है। प्रेरणा लेने-देने के लिए पंजीकरण नहीं करना पड़ता है।

संघ से ही प्रेरित होकर स्वयंसेवक समाज के लिए उपयोगी काम विभिन्न पंजीकृत संगठनों, वनवासी कल्याण आश्रम, सेवा भारती, भारतीय मजदूर संघ, सहकार भारती इत्यादि के माध्यम से करते हैं। अतः संघ औपचारिक संगठनों का एक अनौपचारिक केंद्र है। ऐसा उदाहरण अमेरिका में भी है। मार्टिन लूथर किंग (जूनियर) द्वारा सदर्न क्रिश्चियन लीडरशिप कांफ्रेंस की स्थापना वर्ष 1957 में की गई थी। यह नागरिक अधिकारों के लिए काम करने वाले अनेक संस्थाओं का गैर पंजीकृत अनौपचारिक केंद्र था । सार्वजनिक नैतिकता की कल्पना से जो संगठन जितना करीब होता है, उसका समाज में प्रभाव उतना अधिक होता है। यही कारण है कि जब संघ पचास और साठ के दशकों में छोटा संगठन था, तब भी यह राजसत्ता से लेकर समाज की दृष्टि अपनी ओर खींचता रहा।

संघ के आलोचक संगठन के इस पहलू को भूल जाते हैं। इसलिए वर्ष 1950 से अब तक संघ-विरोधी उसके प्रति अज्ञानता का पिरामिड बन कर रह गए हैं। वर्ष 2025-26 संघ का शताब्दी वर्ष है। यह एक सुनहरा अवसर था, जब सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक पहलुओं पर गंभीर विमर्श होता। मगर इसकी शुरुआत तक नहीं हो पाई। यह एक अवसर खोने जैसा है। शास्त्रार्थ का देश नए युग में जी रहा है जिसे 'आरोप-प्रत्यारोपार्थ' का युग कह सकते हैं। ऐसा किसी भी समाज की सामूहिक बौद्धिकता के लिए आत्मघाती होता है। यह स्थिति चालीस के दशक में नहीं थी। इसका उदाहरण मार्क्सवाद से निकटता रखने वाले बालाजी हुद्दार थे, जिन्होंने 25 जून 1940 में संघ को भारत में 'नव संस्कृति की स्थापना का आंदोलन' कहा था। वैचारिक विमर्श में सामाजिकता और लचीलापन विचार के विकास के सूचकांक को हमेशा आगे बढ़ाता है।

दूध का दूध और पानी का पानी

बाखबर

सुधीश पचौरी

> फिर आई राम मंदिर की 'चंदा चोरी' को लेकर बिठाई 'एसआइटी' की रिपोर्ट और बहसों में विपक्ष की मांग कि सीबीआइ जांच करती या न्यायालय जांच करता, तो बेहतर होता...'एसआइटी' तो किसी को बचाने, किसी को फंसाने के लिए बनाई गई है।

अमेरिकी-ईरानी 'डील' में इजराइल 'आउट'। फिर एक दिन 'पुष्पा' वाला संवाद तमिल राजनीति में छाया दिखा। एक दिन द्रमुक के एक नेता ने अपनी गर्दन के नीचे पुष्पा की तरह हाथ फिरा कर कहा कि 'अपुन झुकने का नहीं', तो जवाब में तमिलनाडु के नए मुख्यमंत्री जोसेफ विजय ने इसी तरह गर्दन के नीचे हाथ फिरा कर कहा 'अपुन भी झुकने का नहीं...'।

अब इसके बाद आपरेशन टाइगर। उद्धव पक्ष के छह सांसद 'असली शिवसेना' में शामिल और अमित शाह का तंज- अब सिर्फ एक ही शिवसेना है...। फिर एक दिन बंगाल में मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी द्वारा 'सुहरावर्दी लेन' का नाम 'गोपाल पाठा लेन' करने की खबर... और विपक्ष का विलाप कि भगवाकरण किया जा रहा है... ।

फिर एक चैनल पर प्रधानमंत्री का संबोधन कि हमारा मंत्र है- 'देश प्रथम'। कश्मीर में लगता था कि कुछ नहीं हो सकता। हमने करके दिखाया... नक्सलवाद आखिरी सांसें ले रहा है...। बारह वर्ष में भारत की निराशा को आशा में बदला। लोग अपेक्षा किससे करेंगे। जो करेगा उसी से करेंगे। इसके बाद सभागार में देर तक 'मोदी-मोदी, मोदी-मोदी' होता रहा...।

इसी बीच विदेश मंत्रालय द्वारा 'एनजीओ फंडिग' को लेकर कुछ नई शर्तें लगाना और इसके बाद गैर सरकारी संगठन खड्ग हस्त दिखे। फिर आई राम मंदिर की 'चंदा चोरी' को लेकर बिठाई 'एसआइटी' की रिपोर्ट और बहसों में विपक्ष की मांग कि सीबीआइ जांच करती या न्यायालय जांच करता, तो बेहतर होता...'एसआइटी' तो किसी को बचाने, किसी को फंसाने के लिए बनाई गई है। जबकि सत्ता पक्ष कहता रहा कि किसी को नहीं बख्शा जाएगा। शाम तक कई चैनल बताने लगे कि एसआइटी की रिपोर्ट में बताए गए आठ आरोपियों पर 'एफआइआर'... मालूम हुआ कि ये सब चंदे-चढ़ावे को गिन कर बैंक में जमा करने का काम करते थे।

उधर, विपक्ष कहता रहा कि बड़ी मछलियां छोड़ दी गई हैं, सिर्फ छोटी मछली पकड़ी हैं...हर बहस में चंदे-चढ़ावे का प्रबंधन करने वाले प्रमुख चंपत राय तथा कुछ अन्य बड़े नाम आते रहे। कई एंकर और चर्चक तक कहते रहे कि यह कैसे हो सकता है कि नीचे के लोग चोरी करते रहें और ऊपर वालों को खबर ही न हो...।

एक विपक्षी ने कहा भी कि आरोपियों में चंपत राय का नाम क्यों नहीं है? कांग्रेस ने मांग की कि सुप्रीम कोर्ट की निगरानी में जांच होनी चाहिए...। मौजूदा ट्रस्ट को भंग करें...। बहसों में इसे 2027 के उत्तर प्रदेश के चुनावों से जोड़ कर देखा जाने लगा और कई कहते रहे कि अगर जांच में 'दूध का दूध और पानी का पानी' न हुआ, तो इसका असर सत्तादल की साख पर पड़ सकता है। इसी क्रम में एक चैनल पर मंदिर निर्माण के प्रमुख नृपेंद्र मिश्र तक ने कह दिया कि चंदे जैसी व्यवस्था ही नहीं थी। यह मंदिर की प्रबंधन प्रणाली पर बड़ा धब्बा है...।

इसके बाद 'लव, शव और धोखा' वाली एक भयावह कहानी सामने आई। अब तक की कहानी के अनुसार, शादी से कुछ दिन पहले, एक युवती ने अपने मंगेतर को 'निपटाने' की कोशिश की, लेकिन कामयाब न हुई। आरोप है कि अगली बार 'लौहगढ़' जाकर रील बनाने के बहाने, अपने प्रेमी के जरिए उसने मंगेतर को धक्का देकर चार सौ फुट गहरी खाई में गिरवा दिया। इसके बाद भी, आरोपी युवती 'इंस्टाग्राम' पर मंगेतर को लेकर भावुकता भरी पोस्ट डालती रही कि तुम मेरे जन्मदिन पर मुझे यूं ही छोड़ कर चले गए...।

इसके बाद आए सिख धर्म की 'बेअदबी' मामले में दो-दो वीडियो और आरोप कि 'बेअदबी' के 'दोषी' पंजाब के मुख्यमंत्री मान हैं... आम आदमी के पार्टी के प्रवक्ता कहते रहे कि यह आरोप उनको फंसाने की साजिश है...। फिर बहसें विवाद की राजनीति पर आ गई और कुछ कहते रहे कि यह सारा विवाद पंजाब के आगामी विधानसभा चुनावों के लिए किया जा रहा है...।

फिर शुरू हुई जातिवाद की 'तिरछी' राजनीति। एक दिन मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री के कथित जमीन घोटाले को लेकर जैसे ही खबर आई, वैसे ही विपक्ष के कुछ नेता भाजपा को 'भ्रष्टाचारी' बता कर कूदने लगे। इसके बाद विदेश मंत्रालय का स्पष्टीकरण आया कि पासपोर्ट नागरिकता का अधिकार नहीं देता... विपक्ष के एक हिस्से ने इसे तुरंत पकड़ा कि यह 'एनआरसी' लाने का बहाना है... कि एक झटके में जनता की नागरिकता छीन ली गई...।

दूसरी ओर, मुहर्रम पर उज्जैन में आतंकवादी हमले से बचने के अभ्यास के वीडियो ने कई लोगों को झकझोर दिया। एक एंकर ने साफ कहा कि 'क्रेन' पर कार को चालीस फुट ऊंचाई पर ले जाकर टांगा गया। उस पर खड़े कुछ युवाओं ने 'वी हेव अराइव्ड' (हम आ गए हैं) के नारे के झंडे फहराए... फिर विस्फोट किया और कार देर तक जलती रही।

शुक्रवार को मुख्यमंत्री योगी ने एक सभा में आलोचकों से कहा कि 'एसआइटी' की रिपोर्ट आते ही कार्रवाई शुरू हुई है। दूध का दूध पानी का पानी होगा...अयोध्या को बदनाम न करें...। आस्था के साथ खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं...जो राम को नहीं मानते वे आस्था न सिखाएं...।

बुआ अब नहीं हैं

गिरीश पंकज

कहानी

उसे भरोसा था कि एक-न-एक दिन सौरभ अपने बचपन के दिनों के महत्त्व को समझ कर बुआ के पास जरूर आएगा। अंजना सौरभ को याद दिलाने की कोशिश करती।

बुआ की उम्र पचासी के आसपास हो गई है। आज भी वह जब जवान हो चुके नाती सौरभ को देखती है, तो खुशी से झूम उठती है। उसे अपने पास बुलाती है, लेकिन सौरभ उसके पास ही नहीं आता। बुआ का वृद्ध-मुरझाया चेहरा, शरीर पर पसरी झुर्रियां उसे पसंद नहीं। लाठी टेक कर बुआ का धीरे-धीरे चलना, बार-बार खांसने से सौरभ को खीझ होती है। जब कभी बुआ घर आती, तो वह कुछ देर में ही उकता कर बाहर निकल जाता। सौरभ की बेरुखी देख कर बुआ की आंखों में आंसू आ जाते हैं। वह रोती है अकेले में। याद करती है सौरभ का बचपन, जब तीन-चार साल का था, तब न जाने कितने घंटे अपनी बुआ की छाती से चिपका रहता। मां से जिद करता, 'मैं तो बुआ के पास रहूंगा। वह कितना अच्छा खाना बनाती है। मेरे साथ खूब खेलती है।' कई बार अंजना सौरभ को बुआ के घर छोड़ देती थी, तब बुआ बड़े प्रेम से उसे अपने पास रखती।

नन्हे से बच्चे को नए कपड़े पहनाती, भूख लगने पर उसे बड़े प्रेम से खाना खिलाती। मगर सौरभ को अब कुछ भी याद नहीं। कैसे याद रहता, तीन-चार साल का ही तो था। स्वाभाविक है, बचपन की घटनाएं उसे याद न हों, लेकिन जब उसकी मां अंजना उन दिनों की याद दिलाती है, तब तो बुआ के प्रति उसके मन में कुछ प्रेमभाव उपजता। मगर उस पर कोई असर नहीं होता। बुआ अकसर सोचती, किसी से कहती नहीं कि कोई इतना निर्मम कैसे हो सकता है। फिर भी बुआ के मन में सौरभ के प्रति प्रेम कम नहीं हुआ। उसे पूरा भरोसा था कि एक-न-एक दिन सौरभ अपने बचपन के दिनों के महत्त्व को समझ कर बुआ के पास जरूर आएगा। अंजना सौरभ को बार-बार याद दिलाने की कोशिश करती है, 'बेटा, मैं तो काम करने बाहर चली जाती थी, लेकिन यह बुआ ही है, जो तेरा लालन-पालन करती थी। तू पल भर के लिए इनसे दूर नहीं होता था। तू मेरे पास ही नहीं आता था। कहता था, मैं बुआ नानी के पास ही रहूंगा।' इतना सुन कर भी सौरभ के मन में बुआ के प्रति कोई प्रेम नहीं उपजा।

बुआ की धुंधली हो चुकी आंखों में जब भी उनका चौबीस साल का नाती सौरभ आता तो उनके मुरझाए चेहरे पर रौनक बिखर जाती। लाठी के सहारे कांपते कदमों से आगे बढ़ते हुए आवाज देती, 'सौरभ..! मेरा बच्चा, इधर आ... मेरे पास।' लेकिन छह फुट का गबरू जवान सौरभ अपनी बुआ की तरफ देख कर दूर ही ठिठक जाता। उसकी भौंहें सिकुड़ जातीं। उसे बुआ के चेहरे की गहरी झुर्रियां, उनकी कांपती आवाज और उम्र के ढलते पड़ाव की वो देह-गंध बिल्कुल पसंद नहीं थी। वह बिना कुछ बोले, चिढ़कर दूसरे कमरे की तरफ चला जाता। बुआ का बढ़ा हुआ हाथ हवा में ही रीता रह जाता। उनकी आंखों के कोर गीले हो जाते। एक ठंडी आह होंठों से निकलती, बस।

उस दिन कमरे के कोने में बैठी बुआ की नजरें शून्य में तैरने लगीं। उनकी आंखों के सामने करीब बीस साल पुराने पल जीवंत हो उठे। तब सौरभ महज तीन या चार साल का था। वह चौबीस घंटे अपनी बुआ की छाती से चिपका रहता था। मां अंजना तो सुबह ही नौकरी पर निकल जाती थी, पीछे से सौरभ की पूरी दुनिया उसकी सेवानिवृत्त बुआ ही थी।

बुआ को याद आया कि कैसे सौरभ खेलते-खेलते कभी उनकी गोदी में ही पाटी कर देता, तो कभी उनकी साड़ी पेशाब से भिगो देता। वह हंसते हुए नन्हे बच्चे को नहलाती, उसके कपड़े बदलती, उसे पाउडर लगाकर नए कपड़े पहनाती और चूमकर अपनी छाती से लगा लेती। भूख लगने पर जब नन्हा सौरभ रोता, तो उसे अपने हाथों से गरमा गरम खाना खिलाती। कभी-कभी सौरभ का रोना बुआ के गले की फांस बन जाता था। फिर भी हंसते हुए उसे चुप कराती। फ्रिज में रखी आइसक्रीम खाने देती, या कोई चाकलेट। वह सारे ऐसे जतन करती, जिससे सौरभ चुप हो जाए। आज सौरभ को कुछ भी याद नहीं। बताओ, समझाओ, तो भी कोई मतलब नहीं।

उसके लिए अतीत का वह निश्छल प्रेम आज की झुर्रियों के सामने बेमानी हो चुका था। सौरभ की मां अंजना सौरभ की बेरुखी देखती, तो उसका दिल कचोट उठता। उस दिन सौरभ के कमरे में गईं और उसे डांटते हुए समझाने लगीं, 'सौरभ! तू भूल गया कि जब मैं काम के सिलसिले में दिन-दिन भर बाहर रहती थी, तब इस घर में तेरा लालन-पालन किसने किया? यह बुआ ही थीं, जिन्होंने अपना लंबा समय तेरे बचपन पर वार दिया। आज जो तू इतना साफ-सुथरा और पढ़ा-लिखा बना घूम रहा है न, इसके पीछे बुआ की वो साड़ियां हैं, जिन्हें तूने न जाने कितनी बार गंदी की थी, मगर उन्होंने हंसते हुए साफ किया था। आज उनकी झुर्रियों से तुझे एलर्जी हो रही। कल को मेरा चेहरा भी झुर्रियों से भर जाएगा, तो तू क्या मुझसे भी नफरत करेगा? और तू क्या समझता है कि तू इन झुर्रियों से बचा रहेगा? जब तेरा चेहरा भी झुर्रियों से भर जाएगा, तब तेरा बेटा भी तुझसे दूर भागेगा। तू इतनी दूर तक की भला क्यों नहीं सोचता। बुढ़ापा जीवन की सच्चाई है। इस सत्य को तू भला कब समझेगा?' सौरभ ने लापरवाही से कंधे उचकाए और मोबाइल की तरफ देखते हुए बोला, 'अरे माम, तब की बात अलग थी। बच्चों की सेवा तो सब करते ही हैं। इसमें भला कौन सी बड़ी बात है। अब वो बहुत बूढ़ी हो चुकी हैं, चिड़चिड़ी लगती हैं। मुझे उनके पास बैठना अच्छा नहीं लगता।'

सौरभ के अंदर अपनी बुआ के लिए कोई प्रेम, कोई कृतज्ञता नहीं जागी। वह अपनी ही दुनिया में मगन रहा। उधर, अपने घर के उदास आंगन में बैठी बुआ ने आसमान की तरफ देखा। उनकी आंखों से टपका आंसू गाल की एक गहरी झुर्री में कहीं समा गया। उन्होंने मन-ही-मन भगवान से कहा, 'मेरा सौरभ जहां भी रहे, खुशहाल रहे। भले ही वह मुझे पसंद न करे, है तो मेरा नाती ही। मैं तो उसके लिए हमेशा दुआ करती रहूंगी। मैं बचपन के उस नन्हे सौरभ को कभी नहीं भूल सकती, जो मेरी छाती से चिपटा रहता था। मेरे साथ घंटों खेलता रहता था।'

एक दिन समय पलटा। सौरभ का मन बदला, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। सौरभ काम के सिलसिले में बाहर चला गया था। कुछ दिनों के बाद वह लौटा तो मां ने रोते हुए बताया, 'तेरी बुआ अब इस संसार में नहीं रही।' यह सुनकर सौरभ अवाक रह गया। कुछ देर तक वह खामोश ही रहा, फिर उसकी आंखों से झर-झर आंसू बहने लगे। वह जोर-जोर से रोने लगा। अचानक उसने मां से कहा, 'अभी...फौरन बुआ के घर चलो।' मां ने कहा, 'लेकिन वहां तेरी बुआ तुझे नहीं मिलेगी।' सौरभ बोला, 'बुआ नहीं मिलेगी, तो क्या हुआ, उसकी तस्वीर तो वहां होगी। मैं उसे प्रणाम करूंगा। अपने किए पर शर्मिंदा हूं, उससे माफी मांगूंगा।' अंजना मन-ही-मन सोच रही थी कि जीते-जी तो सौरभ ने बुआ का सम्मान नहीं किया, लेकिन अब मरने के बाद पश्चाताप कर रहा है, तो भी कोई बात नहीं ।

समय सूचक

शक्ति, भक्ति और ज्ञान के संगम

जनसत्ता सरोकार

'जो कविता लिखता है, वह कवि नहीं, जिसकी कविता उसका जीवन बन जाए और जिसका जीवन कविता बन जाए, वही सच्चा कवि है।' ये उद्धरण उस कवि के हैं जिन्हें मात्र 38 वर्ष की आयु मिली। उन्हें आधुनिक तमिल साहित्य का जनक कहा गया। एक ऐसे कवि, जिनकी साहित्यिक रचनाओं का राष्ट्रीयकरण किया गया। सुब्रमण्य भारती के शब्द सिर्फ कविताएं नहीं रचते थे, बल्कि भारत के नक्शे पर स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व का अपने तरीके से आधुनिक आख्यान कहते थे। पत्रकारिता को एक आधुनिक विधा कहा जाता है। औपनिवेशिक भारत में आजादी की मांग उठाने वाले ज्यादातर आंदोलनकारियों ने पत्रकारिता की विधा को भी अपनाया। पत्रकार, समाज सुधारक, राष्ट्रवादी चिंतक के रूप में उन्होंने मानवता की मुक्ति का गान लिखा। भारती का जन्म 11 दिसंबर 1882 को तमिलनाडु के इटायापुरम में हुआ था। महज ग्यारह वर्ष की आयु में उन्हें भारती की उपाधि मिल गई थी, अर्थात देवी सरस्वती का वरदपुत्र। औपनिवेशिक शासन का विरोध करते हुए उन्होंने तमिल समाचारपत्र व अन्य पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं लिखीं। आम लोगों के कंठ से उनकी कविताएं ब्रितानी हुकूमत के खिलाफ नारे की तरह निकलने लगीं। कहा जाता है कि भारती की कविताओं ने स्वतंत्रता आंदोलन में वही भूमिका निभाई जो बंगाल में राष्ट्रवादी साहित्य ने निभाई थी। भारती ने पांडिचेरी में श्रीअरविंद के साथ भी काम किया था। श्रीअरविंद का उनके बारे में कहना था कि भारती में शक्ति, भक्ति और ज्ञान का समन्वय है। उनकी रचनाओं में काव्य और राष्ट्रवाद का अद्भुत मिलन होता है। 1921 में चेन्नई के पार्थसारथी मंदिर में सुब्रमण्य भारती एक हाथी के द्वारा घायल हो गए। इस हादसे के कारण उनका स्वास्थ्य बिगड़ता गया। आर्थिक कठिनाइयों और बीमारियों से जूझते हुए मात्र 38 साल में उनका निधन हो गया।

सुब्रमण्य भारती

टीवी का चक्कर

विमला रस्तोगी

बाल कथा

एक दिन ज्योति के पापा को किसी काम से मुंबई जाना था, मां ने उनकी अटैची तैयार कर दी। फिर याद आया कि कुछ सामान बाजार से लाना रह गया। मां-पापा दोनों बाजार जा रहे हैं, ज्योति को भी अपने लिए कुछ लाना था, वह भी उनके साथ जाने को तैयार हो गई। नवनी ने कहा, 'मैं घर पर हूं आप सब बाजार होकर आओ।'

वनिता व ज्योतिका दोनों बहनें हैं। घर में दोनों को नवनी व ज्योति ही बोलते हैं। ज्योति नौ वर्ष की है और नवनी सात वर्ष की। नवनी को टीवी देखने का बहुत शौक है। कहने को छोटी है पर टीवी में, मोबाइल में खूब मन लगता है। सब चैनल बदल लेती है। मोबाइल पर गेम खेल लेती है। स्कूल से आते ही टीवी देखने बैठ जाती है। टीवी देखते हुए खाना खाती है। मम्मी इतना समझाती हैं, पर उसकी समझ में नहीं आता।

बड़ी बहन ज्योति स्कूल से आकर कपड़े बदलती, डायनिंग टेबल पर बैठ खाना खाती, स्कूल की बातें मां को बताती। एक दिन मां ने नवनी से पूछा-'आज क्या होमवर्क मिला है स्कूल से?' नवनी ने सुना ही नहीं, वह टीवी देखने लगी। मां ने डांटते हुए कहा-'नवनी मैं तुमसे पूछ रही हूं।' 'ओह मां, जब करूंगी तो दिखा दूंगी।' नवनी ने कहा।

'तुमसे तो पूछना ही बेकार है, तेरा सारा ध्यान टीवी में लगा रहता है।' मां ने झुंझलाकर कहा और अपने काम में लग गई। शाम के समय ज्योति पार्क में चली जाती कुछ देर को, पर नवनी पास में अपनी सहेली मिनी के घर चली जाती। उसे वहां भी टीवी देखने का मौका मिल जाता था। टीवी देखने के चक्कर में वह खेलना भी पसंद नहीं करती थी।

एक दिन ज्योति के पापा को किसी काम से मुंबई जाना था, मां ने उनकी अटैची तैयार कर दी। फिर याद आया कि कुछ सामान बाजार से लाना रह गया। मां-पापा दोनों बाजार जा रहे हैं, ज्योति को भी अपने लिए कुछ लाना था, वह भी उनके साथ जाने को तैयार हो गई। नवनी ने कहा, 'मैं घर पर हूं आप सब बाजार होकर आओ।'

'ठीक है, तुम अंदर से दरवाजा बंद कर लो। किसी अजनबी के लिए दरवाजा मत खोल देना।' 'मैं सब जानती हूं मां।' कहकर नवनी ने दरवाजा बंद किया और झट से दीवान पर जाकर बैठ गई। उसका पूरा ध्यान टीवी देखने में था। मां-पापा को बाजार से लौटने में कुछ देर हो गई। आकर घंटी बजाई पर नवनी ने दरवाजा नहीं खोला। दरवाजे में एक जगह लोहे की बारीक सरियों से जाली बनी थी, झांक कर देखा, टीवी तेज आवाज में चल रहा है और नवनी गहरी नींद में सो रही है। मोबाइल दूसरे कमरे में पड़ा है।

मम्मी-पापा ने इतना दरवाजा खटखटाया आवाजें दीं, नवनी नहीं उठी, इधर पापा की चिंता बढ़ रही थी, उनका मुंबई जाना बहुत जरूरी था। अगर नवनी नहीं जगी तो ट्रेन छूट जाएगी। पापा मां पर नाराज होने लगे, 'तुमने नवनी को सिर पर चढ़ा रखा है तुम्हारे लाड़ ने उसे बिगाड़ दिया है। बच्ची का दिन भर इतना टीवी देखना क्या अच्छा है?'

'अब मैं उसे सख्ती से समझाऊंगी, मुझे भी आपके जाने की चिंता हो रही है।' मां-पापा की परेशानी देखकर ज्योति भी परेशान हो रही थी, वह अपने हाथों को रगड़ते हुए कुछ सोच रही थी। पापा की बेचैनी बढ़ती जा रही थी। मम्मी भी असहाय सी लग रही थी। दरवाजे को हाथ से पीट रही थी। शोर सुन कर सामने वाले फ्लैट की आंटी भी बाहर आ गईं।

मम्मी ने उन्हें सारी बात बताई। उसी समय ज्योति को एक उपाय सूझा-उसने पड़ोस वाली आंटी से पूछा, 'आंटी आपका पाइप कहां रखा है?' 'बालकनी में नल के पास।' ज्योति भागकर आंटी के घर में गई। पाइप उठाया, उसे उनकी रसोई के नल में लगाया, (इस फ्लैट में रसोई दरवाजे से ही लगी हुई थी) पाइप का एक सिरा पकड़ती हुई अपने घर के दरवाजे तक आई। पाइप काफी लंबा था। ज्योति ने बारीक सरियों से बनी जाली में पाइप डाल उसे आगे को सरकाया अपनी दो अंगुलियां भी जाली में से निकाली जो पाइप को पकड़ रही थी, फिर मम्मी से बोली-'मम्मी आप आंटी की रसोई में जाकर नल खोलकर आओ।'

मम्मी जैसे ही नल खोलकर आईं, पाइप से तेज धार में पानी निकलने लगा। ज्योति ने अपनी अंगुली से पाइप को घुमाकर बौछार नवनी के मुंह की तरफ कर दी। मुंह पर पानी पड़ते ही नवनी अचकचा कर उठी। उसे कुछ समझ नहीं आया और वह आंखें मलने लगी।'नवनी जल्दी से दरवाजा खोल', लगभग चीखकर बोली ज्योति। नवनी ने दरवाजा खोला, 'कैसे घोड़े बेचकर सो गई तू। तेरे पापा को जाने में देर हो रही है।' मम्मी तेज स्वर में बोली। ज्योति भागकर नल बंद करके आई।

'इसका टीवी देखना बंद करो।' पापा ने इतना कहा और अपनी अटैची में कुछ पेपर रखे, टैक्सी बुलाई, फटाफट कपड़े बदलकर तैयार हो गए। 'आज ज्योति की सूझ-बूझ काम आ गई वरना मेरी ट्रेन छूट जाती।' पापा के इतना कहते ही टैक्सी भी आ गई।

'सारी पापा।' नवनी ने सिर झुका कर पापा से माफी मांगी। 'अब मैं ज्यादा टीवी नहीं देखूंगी।' कहते-कहते नवनी रो पड़ी। ज्योति ने उसे संभाला। उसने कहा, 'अरे पापा को हैप्पी जर्नी तो बोलो।' पापा की टैक्सी घर से दूर जाने के बाद ज्योति ने छोटी बहन की तरफ देख कर कहा, 'अरे नवनी आ, पहले अपने कपड़े बदल, भीग गए हैं, बीमार पड़ जाएगी।' ज्योति नवनी को कमरे में लेकर आई फिर कपड़े बदलने के लिए दिए। 'सारी दीदी'। नवनी ने फिर कहा। 'अच्छा ठीक है आगे से ध्यान रखना' ज्योति ने कहा। तब तक मम्मी अदरक वाली चाय और नाश्ता ले आईं।

अपराध का आकर्षण

जनसत्ता सरोकार

मार्गदर्शन

चाहे वह सिया गोयल को धिक्कारने के लिए हो, चाहे सामाजिक उपदेश देने के लिए या फिर इंटरनेट के खातों पर अपनी दृश्यता बनाए रखने के लिए। सोशल मीडिया का हर नामचीन सिया गोयल पर लिख रहा है। ज्यादातर लोग घटना का सामान्यीकरण करते हुए कह रहे हैं कि राजा रघुवंशी वाले मामले में सोनम को कड़ी सजा मिल गई होती तो सिया गोयल की ऐसी हिम्मत नहीं होती। वैसे, हममें से ज्यादातर लोग यह नहीं जानते हैं कि अभी तक आए इस तरह के मामलों में अदालत में कौन से सबूत पेश किए गए, किन मुद्दों पर जिरह की गई और किन कारणों से किसी खास मामले में आरोपी को जमानत दी गई।

पिछले मामलों में आरोपियों को अब तक कड़ी सजा नहीं मिल पाई है तो क्या इसी कारण से सिया गोयल ने ऐसा कदम उठाया? अपराधशास्त्र ऐसे मसले को अलग तरीके से देखता है। मानव मन अति क्लिष्ट होता है। उसके अंदर कब किस चीज को लेकर आकर्षण पैदा हो जाए, कहा नहीं जा सकता है। इसलिए यहां ये सब तर्क बेमानी हैं कि सिया को परिवार में कैसे संस्कार मिले या ऐसे अपराधों में कड़ी सजा नहीं मिली है।

फ्रांसीसी अपराधशास्त्री टार्डे का कहना है कि मनुष्य का बहुत-सा सामाजिक व्यवहार अनुकरण पर आधारित होता है। हम सभी अपने परिवेश में हो रहे व्यवहारों से प्रभावित होते हैं। अगर कोई व्यवहार बहुत चर्चित हो जाए, सार्वजनिक मंचों पर बहस का विषय बन जाए तो वह कई के अवचेतन मन में अलग तरह की घुसपैठ कर लेता है। वह इन चीजों की तुलना अपनी परिस्थितियों से करने लगता है।

कई शोधकर्ताओं ने नकल के अपराध (कापीकैट क्राइम) की अवधारणा भी रखी है। खासकर सामूहिक हिंसा, स्कूल या सार्वजनिक स्थानों पर हमले, आत्महत्या या आतंकवादी हमले के मामलों में देखा गया है कि इनकी नकल करने की कोशिश की गई है। इसलिए कई विशेषज्ञ अपराध की खबरनवीसी में संयम बरतने की सलाह देते हैं। अब तो कृत्रिम बौद्धिकता के इस जमाने में अपराध का नाट्य रूपांतरण किसी आम नाटक जैसा नहीं होता है। इसमें अपराध को लेकर भय नहीं भव्यता दिखने लगती है।

स्टैनली कोहेन ने अपने सिद्धांतों में बताने की कोशिश की है कि किस तरह मीडिया और सार्वजनिक विमर्श कभी-कभी किसी सामाजिक समस्या को इतनी अहमियत दे देते हैं कि वह सामूहिक अवचेतना में एक असामान्य स्थिति पैदा कर देती है। इसलिए मनोवैज्ञानिक हमेशा इस बात को लेकर आगाह करते हैं कि अपराध की तकनीकी जानकारी को सीमित रखा जाए। सामाजिक संरचना में अपराध को जानकारी तक ही सीमित रखना अच्छा होता है। आपकी रचनात्मक, उपदेशात्मक, विवरणात्मक प्रस्तुति आपकी इच्छानुसार असर करेगी, यह आप तय नहीं कर सकते हैं। अपराध इस धरती की सबसे क्लिष्ट अवधारणा है। इसे मीम और चुटकुलों से दूर रखना ही समाज की सेहत के लिए बेहतर है।

एक बच्चा और तीन अपराधी

जनसत्ता सरोकार

अमर किरदार

कहानी एक अमीर परिवार की है जो अपने बच्चे की तस्वीरें खिंचवाने की योजना बनाते हैं। अगले दिन के अखबारों में बिंक की ये तस्वीरें आने वाली हैं। तीन अपहरणकर्ता फोटोग्राफरों के रूप में बिंक के घर में प्रवेश कर जाते हैं।

नौ महीने का बच्चा जो कोई संवाद नहीं बोलता है। घुटनों के बल पर ही वह अपने तीन अपहरणकर्ताओं को घुटने पर ले आता है। एक छोटे बच्चे का किरदार, जिसे दर्शक जितनी बार भी देखने बैठते हैं हंसते-हंसते लोट-पोट हो जाते हैं। हास्य जब परिस्थितिजन्य उत्पन्न होता है तो उसकी गुणवत्ता और बढ़ जाती है। ऐसा ही एक प्यारा किरदार है बेबी बिंक का। पैट्रिक रीड जानसन की निर्देशित फिल्म 'बेबीज डे आउट' का यह बाल किरदार पूरी दुनिया के दर्शकों के दिल में अपनी जगह बना चुका है।

एक जुलाई 1994 को प्रदर्शित हुई 99 मिनट की इस फिल्म में बेबी बिंक दर्शकों को पूरी तरह अपने साथ बांधे हुए रखता है। कहानी एक अमीर परिवार की है जो अपने नौ महीने के बच्चे की तस्वीरें खिंचवाने की योजना बनाते हैं। अगले दिन के अखबारों में बिंक की ये तस्वीरें आने वाली हैं। तीन अपहरणकर्ता फोटोग्राफरों के रूप में बिंक के घर में प्रवेश कर जाते हैं। वे बिंक का अपहरण कर 50 लाख डालर की फिरौती मांगने की जुगत में हैं।

लेकिन बिंक अपने घुटनों के बल ही अपराधियों के चंगुल से भाग निकलता है। नन्हे बिंक के जेहन में वे तस्वीरें हैं जो उसने अपनी पसंदीदा चित्रात्मक पुस्तक 'बेबीज डे आउट' में देखी हैं। पुस्तक में देखी तस्वीरें सामने आते ही वह उसे अपने वास्तविक जीवन का हिस्सा मानता है। इसी चक्कर में वह बस की सवारी करता है और इसके बाद एक दुकान में प्रवेश करता है। वह व्यस्त सड़कों के बीच भी पहुंच जाता है। फिर उसे दिखता है चिड़ियाघर और वो उसके अंदर पहुंच जाता है। चिड़ियाघर में गोरिल्ला के बाड़े के पास पहुंच जाता है। इसके बाद वह निर्माण स्थल और वृद्ध सैनिकों के आश्रम में पहुंचता है। तीनों अपहर्ता उसका पीछा करने में कई तरह की हास्यास्पद स्थितियों का शिकार हो जाते हैं। बिंक को पकड़ने के चक्कर में वे ऊंचाई से गिरते हैं तो उनके शरीर में आग भी लग जाती है।

यह फिल्म प्रदर्शित होने के बाद न तो टिकट-खिड़की पर धमाल मचा पाई थी और न ही समीक्षकों को आकर्षित कर पाई थी। लेकिन भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश जैसे देशों में बेबी बिंक को दर्शकों का भरपूर प्यार मिला। यह फिल्म टीवी पर लगातार प्रदर्शित होती रही है और पारिवारिक मनोरंजन के रूप में पूरे परिवार के साथ देखी जाती रही है। इस फिल्म की जान इसकी पटकथा में है। लेखक जान ह्यूजेस ने एक बच्चे के लिए जो परिस्थितियां रची हैं वो हंसने के लिए मजबूर कर देती हैं। खास कर अपराधियों को बेवकूफ दिखाया गया है तो वे बच्चे के साथ क्रूरता करते नहीं दिखते हैं, बल्कि बच्चा उन्हें इतना परेशान करता है कि अपराधियों के लिए सहानुभूति उमड़ जाती है। इस फिल्म को उनकी ही फिल्म 'होम अलोन' का छोटा रूप कहा जाता है जो बहुत ज्यादा सफल हुई थी। बेबी बिंक की भूमिका दो जुड़वां भाइयों एडम वार्टन और जैकब मार्टन ने मिल कर निभाई थी।

सेहत बनाए मुनक्का ऊर्जा मिले भरपूर

प्रायः कहा जाता है कि स्वस्थ रहना है, तो मुनक्का जरूर खाइए। दरअसल, इसमें अंगूर के सभी पोषक तत्त्व पाए जाते हैं। इसे पानी में भिगो कर लें या दूध के साथ या फिर सीधे खाएं, यह हर तरह से फायदा करता है। मुनक्के की तासीर गर्म होती है। इसलिए गर्मियों में इसका सीमित सेवन करना चाहिए। आम तौर पर बड़े अंगूर को सुखा कर मुनक्का तैयार किया जाता है। अगर इसे नुस्खे के तौर पर आजमाया जाए, तो यह कई रोगों को ठीक कर देता है। आयुर्वेद में भी इसे महत्त्व दिया गया है। कुछ औषधियों में भी इसका उपयोग होता है।

ऊर्जा का स्रोत

मुनक्का शरीर को तुरंत ऊर्जा प्रदान करता है। यह ग्लूकोज का भी उत्तम स्रोत है। कठिन दिनचर्या वालों, दुर्बल लोगों और खिलाड़ियों जिन्हें तुरंत ऊर्जा की आवश्यकता होती है, उन्हें मुनक्का जरूर खाना चाहिए। इसमें भरपूर लौह तत्त्व और खनिज पाए जाने से थकान कम होती है। सबसे बड़ी बात कि यह खराब कोलेस्ट्राल (एलडीएल) को कम करता है। इससे हृदय का स्वास्थ्य ठीक रहता है। मुनक्का में एंटीआक्सीडेंट और पोटेशियम पाए जाने से रक्तचाप काबू में रहता है। वहीं धमनियों में अवरोध होने की संभावना कम हो जाती है। इसमें मौजूद फाइबर कब्ज से छुटकारा दिलाता है। मुनक्का में कैल्शियम और मैग्नीशियम होने से हड्डियां मजबूत रहती हैं।

रक्ताल्पता में लाभकारी

मुनक्का में भरपूर लौह तत्त्व होने से यह एनीमिया से लड़ने की ताकत देता है। यह विटामिन-बी की कमी भी पूरी करता है। इसका सेवन करने वाले व्यक्ति में पर्याप्त खून बनता है। कमजोरी भी दूर होती है। मुनक्का लाल रक्त कोशिकाओं के निर्माण में मदद करता है। इसके लिए एक आसान-सा नुस्खा है। रात को सोते समय नौ-दस मुनक्के को पानी में भिगो कर रख दें। सुबह इन्हें अच्छी तरह चबा कर खाएं। इसके कई फायदे हैं- शरीर में खून की मात्रा तो बढ़ती ही है, साथ ही रक्त भी शुद्ध हो जाता है। यहां तक कि नाक से खून बहने की समस्या भी ठीक हो जाती है। ध्यान रहे कि नुस्खे के तौर पर मुनक्के का सेवन दो से चार हफ्ते ही करना चाहिए।

त्वचा बने चमकदार

मुनक्का त्वचा को सुंदर और स्वस्थ बनाता है। यह त्वचा की कोशिकाओं की रक्षा भी करता है। काला मुनक्का शरीर से विषाक्त तत्त्वों को बाहर कर देता है, जिससे त्वचा साफ और चमकदार बन जाती है। वहीं इसमें विटामिन 'ए' और 'ई' होने से त्वचा की बाहरी परत में नई कोशिकाएं बनने में मदद मिलती है। गौरतलब है कि मुनक्का में 'रेस्वेराट्रेल' पाया जाता है जो त्वचा के स्वास्थ्य को बनाए रखता है। यह रक्त शुद्ध करने के साथ त्वचा को साफ और चमकदार बनाता है। इसलिए लोगों को सीमित मात्रा में रोज पांच-छह मुनक्का खाना चाहिए। इसे रात भर भिगो कर सुबह खाया जा सकता है।

हड्डियां रहें मजबूत

नुस्खे

मुनक्का में बोरान नामक सूक्ष्म पोषक तत्त्व पाया जाता है जो हड्डियों तक कैल्शियम पहुंचाने में मदद करता है। इसमें पोटेशियम की मात्रा अधिक होने से भी हड्डियों को फायदा पहुंचता है। सामान्य लोगों में यह जोड़ों और दांतों की समस्या को भी दूर करता है। नुस्खा वही है- रात में भिगो कर इसका सेवन करें। मुनक्का में विटामिन 'ए' और बीटा कैरोटीन होने से आंखों की रोशनी तेज हो जाती है।

संवाद की मर्यादा

भाषा संवाद के साथ-साथ संस्कारों के आदान-प्रदान का सबसे बड़ा माध्यम होती है। किसी भी समाज की भाषा जितनी मर्यादित और शिष्ट होती है, वह समाज उतना ही परिपक्व, सभ्य, सुसंस्कृत और संवेदनशील माना जाता है। समाज की पहचान केवल उसके विकास, तकनीक या आर्थिक स्थिति से नहीं होती, बल्कि उसकी भाषा से भी होती है। भाषा परिवर्तनशील होती है और हर युग में भाषा में नए शब्द जुड़ते हैं, अभिव्यक्ति के तरीके बदलते हैं।

वर्तमान समय में हमारी रोजमर्रा की भाषा जिस संक्रमण से गुजर रही है, वह काफी भयानक है। अश्लीलता, अभद्रता और गाली-गलौज के साथ-साथ भाषा में आक्रामकता और तीखापन बढ़ता जा रहा है, जिसकी वजह से न केवल संवाद का स्वरूप बदल रहा है, बल्कि अभिव्यक्ति के तरीकों में भी बदलाव आ रहा है।

भाषा-संस्कृति

सतीश खनगवाल

मर्यादा दरकिनार

हाल ही में एक वीडियो प्रचारित हुआ, जिसमें कुछ नाबालिग लड़कियों द्वारा मेट्रो में गाली-गलौज से भरपूर भाषा का जमकर इस्तेमाल किया गया। हालांकि समाज में आसपास नजर डालने पर पता चलता है कि इसमें कोई खास हैरानी की बात नहीं थी, क्योंकि हममें से ज्यादातर लोग युवाओं और अन्य लोगों को अमर्यादित भाषा बोलते देखने और झेलने को लेकर नए नहीं होंगे। कई बार तो स्कूल-कालेज में पढ़ने वाले युवाओं की भाषा सुनकर कानों पर हाथ रखने का मन करता है।

जिस बेफिक्री से ऐसे युवा अमर्यादित भाषा का प्रयोग करते हैं, ऐसा लगता है कि इन युवाओं को दीन-दुनिया से कोई मतलब ही नहीं है। इन्हें न छोटे बच्चों की परवाह है, न अधेड़ों से कोई डर और न बुजुर्गों से कोई शर्म। कई बार लड़कियां भी आपत्तिजनक भाषा का इस्तेमाल करती दिख जाती हैं, हालांकि उन्हें इस बात की तनिक भी भनक नहीं है कि ऐसी भाषा बोलते हुए वे पितृसत्तात्मक मानसिकता से प्रेरित होती हैं। अब हालत यह हो गई है कि असभ्य भाषा पर आसपास के लोगों ने प्रतिक्रिया देना भी बंद कर दिया है। सब कुछ एकदम सामान्य-सा प्रतीत होता है। लगता है जैसे हमने इस अमर्यादित और असभ्य भाषा को स्वीकार कर लिया है।

भारतीय समाज में भाषाई शालीनता को बहुत अधिक महत्त्व दिया गया है। भाषा और अभिव्यक्ति के तौर-तरीकों को व्यक्ति के चरित्र और उसके परिवार के संस्कारों का पैमाना माना जाता है। इसलिए जन्म से ही बच्चे को संस्कारों से युक्त भाषा और अभिव्यक्ति के शालीन तौर-तरीके सिखाए जाते हैं। पहले जहां भी बच्चों की आवाज ऊंची होती, भाषा की मर्यादा लांघी जाती, भौंडे तरीके से अभिव्यक्ति होती, तो आसपास के लोग उसी क्षण टोकते और डांटते।

शालीनता के बजाय

मगर नब्बे के दशक के बाद जैसे-जैसे पुस्तकें पढ़ने और लिखने की संस्कृति कमजोर होती गई, वैसे-वैसे फिल्में और टेलीविजन के दौर ने धीरे-धीरे भाषा को परिवर्तित करने का कार्य किया। खासतौर पर पिछले एक दशक में सोशल मीडिया और ओटीटी मंचों ने तो आग में ऐसा घी डाला कि भाषाई मर्यादा और शालीनता खत्म हो गई। किताबें पढ़ने और उससे अपने बौद्धिक विकास के सवाल को लोगों ने व्यापक पैमाने पर दरकिनार करना शुरू कर दिया। इससे उपजे हल्केपन का नतीजा यह हुआ कि जो शब्द कभी एकांत में भी बोलने पर शर्म महसूस होती थी, देखते ही देखते मनोरंजन और सोशल मीडिया की मुख्यधारा का हिस्सा बन गए। जो लोग भदेस होने और साहित्य या रचना में वास्तविकता की छौंक होने के तर्क को उचित ठहराने में लगे रहे हैं, उन्हें नहीं पता है कि अगर यही प्रवृत्ति सामान्य होकर उनके अपने घर-परिवार में प्रवेश कर जाए, तब उनका तर्क क्या होगा और वे उसे कितना सही कह पाएंगे।

आश्चर्य की बात तो यह है कि 'शब्द संभारे बोलिये, शब्द के हाथ न पांव, एक शब्द औषधि करे, एक शब्द करे घाव' और 'ऐसी वाणी बोलिए मन का आपा खोय, औरन को सीतल करे आपहुं सीतल होय' जैसी नीति की बात करने वाले हमारे समाज में आधुनिक मूल्यों की दुहाई देने वाले नेता भी सरेआम आपत्तिजनक भाषा का इस्तेमाल करते दिखाई देने लगे हैं। जबकि इन नेताओं पर समाज को एक दिशा देने का दायित्व होता है। जो नेता खुद अपनी भाषा पर नियंत्रण नहीं रख सकते, वे समाज को क्या संदेश देंगे, यह समझ से परे है। शायद ही कोई नेता विचारों को समृद्ध करने वाले विमर्शों या फिर पुस्तकों के संसार के विस्तार की बात करता दिखता है।

भाषाई संक्रमण

इस समय हमारा समाज एक भयानक भाषाई संक्रमण से गुजर रहा है। अगर हम वक्त रहते नहीं समझे, तो वह दिन दूर नहीं, जब शर्म-लिहाज के हर पर्दे गिर जाएंगे। संस्कार की सबसे पहली पाठशाला घर होती है। इसलिए अभिभावक स्वयं बच्चों के सामने शालीन भाषा का प्रयोग करें और एक आदर्श प्रस्तुत करें। विद्यालयों में शिक्षा के समांतर पुस्तक संस्कृति को फिर से मजबूत करने के साथ-साथ भाषाई संस्कारों पर भी बल दिया जाए। आसपास के लोग स्तरहीन भाषा को स्वीकार करने के स्थान पर अपने मौन को तोड़ें। सोशल मीडिया पर सामग्री तैयार करके डालने वाले, फिल्म निर्माता, अभिनेता, लेखक आदि समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को गहराई से समझें। हमें यह समझना होगा कि आधुनिक होने का अर्थ अभद्र और मर्यादाहीन होना नहीं है। हमें यह भी समझने की जरूरत है कि किताबों को पढ़ने-पढ़ाने के दौर को फिर लाए बिना भाषा की मिठास, गरिमा और सौंदर्यबोध को कायम नहीं रखा जा सकता।

संस्कार की सबसे पहली पाठशाला घर होती है। इसलिए अभिभावक स्वयं बच्चों के सामने शालीन भाषा का प्रयोग करें और एक आदर्श प्रस्तुत करें। विद्यालयों में शिक्षा के समांतर पुस्तक संस्कृति को फिर से मजबूत करने के साथ-साथ भाषाई संस्कारों पर भी बल दिया जाए। लोग स्तरहीन भाषा को स्वीकार करने के स्थान पर अपने मौन को तोड़ें।

चुनौतियों से पार पाने का कौशल

जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं और इस दौरान नई-नई चुनौतियों का सामना भी करना पड़ता है। मगर यह बात महत्त्वपूर्ण है कि कोई व्यक्ति मुश्किलों से सामना करने के लिए कितना सक्षम है। अगर बच्चों के भीतर शुरू से ही इस कौशल को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया जाए, तो आगे चलकर उनकी राह काफी आसान हो जाती है। इसके लिए जरूरी है कि बच्चों को स्वतंत्र रूप से समस्याओं का समाधान खोजने के तरीके सिखाए जाएं और उन्हें असफलताओं से सीखने के लिए प्रेरित किया जाए। बच्चों को यह समझाना जरूरी है कि जीतना ही सब कुछ नहीं होता, बल्कि हार से भी सबक सीखना चाहिए। जब वे किसी खेल या परीक्षा में पिछड़ जाते हैं, तो निराश या हताश होने के बजाय अगर वे उससे प्रेरणा लें, तो आगे और बेहतर कर सकते हैं।

जीवन शैली

खेल से शुरुआत

बच्चों में संघर्ष के जरिए चुनौतियों से मुकाबला करने की क्षमता विकसित करने की शुरुआत खेल भावना से की जा सकती है। खेल में कभी जीत होती है, तो कभी हार, लेकिन बच्चों को इस बात का एहसास कराया जाना चाहिए कि दोनों ही हालात से बहुत कुछ सीखने को मिलता है। अगर बच्चा खेल में हार जाए, तो उसे इस बात के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए कि हार का मतलब निराशा नहीं, बल्कि अपनी कमजोरियों को दूर कर जीत की राह निकालना है। इससे बच्चे के भीतर संघर्ष करने की भावना जागृत होगी, जो उसमें हर मुश्किल में डटे रहने का साहस और जज्बा पैदा करेगी। माता-पिता बच्चों के साथ अपनी असफलताओं के बाद जीत हासिल करने के किस्से भी साझा कर सकते हैं, इससे उन्हें एहसास होगा कि असफलता जीवन का एक हिस्सा है और इससे घबराने के बजाय सीखने की जरूरत है।

खेल में कभी जीत होती है, तो कभी हार, लेकिन बच्चों को इस बात का एहसास कराया जाना चाहिए कि दोनों ही हालात से बहुत कुछ सीखने को मिलता है।

जिम्मेदारी का एहसास

बच्चों को उनकी उम्र के अनुसार छोटे-छोटे काम सौंपे जा सकते हैं, जैसे- स्कूल बैग तैयार करना, खिलौने समेटना या अपनी किताबों को टेबल पर व्यवस्थित करना। जब वे खुद काम करेंगे, तो गलतियां भी होंगी, लेकिन यही गलतियां उन्हें सुधार करना भी सिखाएंगी। मसलन, अगर बच्चा अपना टिफिन भूल जाता है, तो तुरंत उसकी मदद करने के बजाय उसे खुद इस गलती का अहसास करने दें, ताकि अगली बार वह अपने सामान को लेकर पूरी तरह सतर्क रहे। जब बच्चे को अपनी जिम्मेदारी का एहसास हो जाता है, तो आत्मनिर्भरता की दिशा में उसका यह पहला कदम होता है।

धैर्य की ताकत

आज के तकनीकी और सोशल मीडिया के दौर में बच्चों से लेकर युवाओं तक हर कोई तुरंत नतीजे चाहता है। ऐसा न होने पर उनके भीतर निराशा घर कर जाती है और वे हतोत्साहित होने लगते हैं। ऐसे में उन्हें यह समझाना जरूरी है कि मेहनत के साथ-साथ धैर्य रखना भी महत्त्वपूर्ण है। सफलता की राह में चुनौतियां भी आती हैं, मगर नियमित प्रयासों से बाधा को दूर किया जा सकता है। इसके लिए धैर्य रखने की जरूरत होती है। अगर बचपन से ही बच्चे को मानसिक रूप से मजबूत बनाया जाए, तो वह बड़ा होकर किसी भी मुश्किल से घबराने के बजाय उसका सामना करने के लिए तैयार रहेगा।

थोड़ी-सी कोताही गुम होती रोशनी

ये आंखें ही हैं जो जीवन भर सब कुछ देखती हैं, चाहे वह अच्छा हो या बुरा। वहीं जीवन में कई बार ऐसी स्थिति भी आती है जब लोग एक-दूसरे से नजरें चुराने लगते हैं। मगर जब कोई आपकी आंखों की रोशनी ही चुराने लगे, तब क्या करेंगे? एक दिन ऐसा भी आता है, जब लगता है कि आंखों के आगे अंधेरा छा गया है। इसकी वजह है- काला मोतिया।

सेहत

अगर समय पर काला मोतिया का उपचार न हो, तो आंखों की रोशनी चली जाती है। गौरतलब है कि पूरी दुनिया में लाखों लोग इस मर्ज के शिकार होते हैं। चिंता की बात यह है कि इसके लक्षण आसानी से नहीं दिखाई देते। नतीजा यह कि धीरे-धीरे आंखों की 'आप्टिक नर्व' पर दबाव बढ़ता जाता है। इससे आंखों को क्षति पहुंचती है। 'आप्टिक नर्व' पर इस दबाव को चिकित्सीय भाषा में 'इंट्रा आक्युलर प्रेशर' कहा जाता है। यह 'आप्टिक नर्व' ही है, जो किसी भी चीज को पहचान कर दिमाग को संदेश देती है।

जड़ और लक्षण

दरअसल, 'आप्टिक नर्व' को नुकसान पहुंचने के कारण लोगों को काला मोतिया होता है। तब आंखों में तरलता बनी रहने में दिक्कत पैदा होती है। इससे तंत्रिका पर दबाव बढ़ता जाता है। हालांकि इसके कई कारण हो सकते हैं। यों बढ़ती उम्र भी काला मोतिया होने की वजह बनती है। या फिर परिवार में किसी को काला मोतिया हुआ हो। इसके अलावा मधुमेह, माइग्रेन, उच्च रक्तचाप भी इसकी वजह हो सकती है। इसके अलावा आंखों की शल्य चिकित्सा भी कभी-कभी इस समस्या का कारण बन जाती है। सामान्यतः काला मोतिया होने की कोई निश्चित उम्र तय नहीं है। मगर अधेड़ावस्था में इसकी संभावना अधिक होती है। किसी को 'ओपन एंगल ग्लूकोमा' हो गया है, तो उसके लक्षण शुरुआत में नहीं दिखते। जब समस्या गंभीर होने लगती है, तब आंखों में धब्बे दिखने लगते हैं। आंखों और सिर में दर्द होना भी एक लक्षण है। कभी-कभी आंखों में लाली भी दिखाई देती है। रोशनी के चारों ओर रंगीन घेरा दिखाई देना भी गंभीर लक्षण है। एक समय आता है जब साफ-साफ दिखना कम होने लगता है। तब तक मरीज की आधी दृष्टि पर प्रभाव पड़ चुका होता है।

आधुनिक उपचार

अगर काला मोतिया किसी की आंखों की रोशनी को क्षति पहुंचा चुका है, तो फिर उपचार आसान नहीं रहता। इलाज में जितनी देरी होती है, ठीक होने की संभावना क्षीण होती चली जाती है। समय रहते इलाज किया जाए, तो आंखों की रोशनी कुछ हद तक बचाई जा सकती है। जांच के बाद नेत्र विशेषज्ञ तय करते हैं कि उपचार के किस विकल्प पर काम किया जाए। आजकल विशेषज्ञ लेजर थेरेपी, ग्लूकोमा फिल्टरिंग सर्जरी और लेजर ट्रेबेक्यूलोप्लास्टी सर्जरी से उपचार करने लगे हैं। यह कारगर है। मगर ध्यान रहे कि आंखों की शल्य चिकित्सा बेहद बारीक होने के कारण जटिल होती है।

आंखों की सलामती

काला मोतिया को आंखों के लिए घातक इसलिए कहा गया है, क्योंकि इसका घेरा चुपचाप बढ़ता जाता है। मरीज को इसका पता भी नहीं चलता। इससे बचने का यही उपाय है कि आंखों की सुरक्षा करने के साथ-साथ समय-समय पर इसकी जांच कराते रहें। इससे सही समय पर आंखों में किसी भी समस्या का पता चल जाता है और इलाज से मर्ज काबू में होने की उम्मीद बढ़ जाती है। आंखों की सलामती के लिए हर किसी को पोषक आहार लेना चाहिए, खासतौर से विटामिन ए से युक्त आहार। संतुलित भोजन के साथ ताजे फल-हरी सब्जियां लें। आहार में अंडे, मछली, दूध, घी और पनीर शामिल करें।

(यह लेख सिर्फ सामान्य जानकारी और जागरूकता के लिए है। उपचार या स्वास्थ्य संबंधी सलाह के लिए विशेषज्ञ की मदद लें।)

पौष्टिकता और स्वाद का संयोजन

आलू कुलचा

आलू कुलचा देखने में लगभग परांठे की तरह ही होता है, लेकिन इसमें आटे की जगह मैदे का इस्तेमाल किया जाता है और इसमें दही एवं बेकिंग सोडा मिलाया जाता है, जिससे यह फूल कर नरम हो जाता है। इसका स्वाद परांठे से अलग होता है और बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक सभी को यह पसंद आता है।

सामग्री

मैदाः 250-300 ग्राम, आलू- 200 ग्राम, दहीः तीन-चार चम्मच, बेकिंग सोडाः आधा चम्मच, अजवाइनः एक चम्मच, नमकः स्वादानुसार, हरी मिर्चः दो-तीन, अदरकः एक इंच, अमचूर पाउडरः आधा छोटा चम्मच, धनिया पाउडरः एक चम्मच, गरम मसाला पाउडरः एक चम्मच।

विधि

एक थाली में मैदा लीजिए और उसमें दही, बेकिंग सोडा, हल्का सा नमक और तेल डालें। इन सभी को हाथ से अच्छी तरह मिलाने के बाद इसे गुनगुने पानी के साथ नरम होने तक गूंथ लें। इसके बाद गुंथे आटे पर हाथ से चारों ओर तेल लगाएं और कपड़े या बर्तन से ढक कर दो-तीन घंटे के लिए छोड़ दें। इस बीच आलू को उबाल लें और ठंडा होने पर उसके छिलके निकाल कर हाथ से अच्छी तरह मसलें। फिर इसमें नमक, कटी हुई हरी मिर्च, अदरक, धनिया पाउडर, अमचूर पाउडर, लाल मिर्च, गरम मसाला पाउडर और हरा धनिया डालें। इन सभी को हाथ से मिला दें। अब गूंथे हुए मैदे की मध्यम आकार की लोइयां बनाएं। फिर एक लोई को बेलन की मदद से चपाती की तरह गोलाकार चपटा बनाएं और उस पर उबले आलू का मिश्रण बिखेर कर उसे हाथ से दबा दें। इसके बाद चपाती को चारों ओर से उठाकर बंद कर दें और उसका गोला बनाकर उसे पहले हाथ से फिर बेलन की मदद से चपटा करें। अब इसे गरम तवे पर सेकें और दोनों तरफ देसी घी का लेप लगाएं। इसी तरह दूसरे कुलचे भी तैयार करें। इन्हें चाय या अपनी मनपसंद चटनी के साथ परोसें।

रसोई

अचारी मूली

कुछ लोगों को मूली की सामान्य सब्जी का स्वाद पसंद नहीं आता है, मगर इसे अचारी मसालों के साथ बनाया जाए, तो इसका जायका बेहतरीन हो जाता है। मूली सेहत के लिए फायदेमंद होती है और इसे सलाद के रूप में भी लिया जा सकता है। अचारी मूली की खुशबू हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करती है।

सामग्री

मूलीः 400-500 ग्राम, सौंफ पाउडरः एक चम्मच, धनिया पाउडरः एक चम्मच, जीराः एक चम्मच, लाल मिर्च पाउडरः आधा चम्मच, हल्दी पाउडरः आधा चम्मच, कलौंजीः आधा चम्मच, अदरकः एक इंच, अजवाइनः आधा चम्मच, अमचूरः आधा छोटा चम्मच, नमकः स्वादानुसार।

विधि

सबसे पहले मूली को अच्छे से धो लें और फिर मध्यम आकार के टुकड़ों में काटें। इसे एक थाली में रखकर ऊपर से हल्का सा नमक छिड़कें और कुछ देर के लिए ढक कर रख दें, ताकि इसमें से अतिरिक्त पानी निकल जाए। अब मूली के टुकड़ों में किसी नुकीली चीज से छोटे-छोटे छेद कर लें, ताकि उनमें मसाला भर जाए। अब इनके ऊपर हल्का सा तेल छिड़क कर सौंफ पाउडर, धनिया पाउडर, हल्दी, अजवाइन, लाल मिर्च पाउडर, नमक और गरम मसाला इसमें डालें। इन्हें हाथ से अच्छी तरह मिलाएं, ताकि सभी मसाले मूली के टुकड़ों में रच जाएं। अब एक कड़ाही में तेल गरम करें और उसमें जीरा और कलौंजी हल्का सा भून लें। इसके बाद कूटा हुआ अदरक इसमें डालें और सुगंधित होने तक भूनें। फिर मूली के टुकड़ों को इसमें डाल दें और धीमी आंच पर तीन-चार मिनट तक ढक्कन रखकर पकाएं। ध्यान रहे कि बीच-बीच में इसे चम्मच से चलाते रहें, ताकि यह तले से न चिपके। इसके बाद अमचूर पाउडर तथा हरा धनिया इसमें डालें और अच्छी तरह मिलाने के बाद आंच बंद कर दें। इसे चपाती, ब्रेड या नान के साथ परोसा जा सकता है।

दैनिक जागरण

अपनी भूल स्वीकारना उसे सुधारने की पहली सीढ़ी है

अमेरिका-ईरान में भिड़ंत

अमेरिका और ईरान के बीच शांति समझौता होने के दस दिन के अंदर ही दोनों के बीच फिर से सैन्य झड़पें शुरू हो जाना पश्चिम एशिया और साथ ही विश्व के लिए एक बुरी खबर है। अमेरिका और ईरान के बीच नए सिरे से टकराव इसलिए शुरू हुआ, क्योंकि पिछले दिनों ओमान के तट पर सिंगापुर के ध्वज वाले एक मालवाहक जहाज को निशाना बनाया गया। हालांकि इस जहाज पर हमले में कोई बड़ा नुकसान नहीं हुआ, लेकिन इस हमले के पीछे ईरान का हाथ माना गया। इस हमले का नतीजा यह हुआ कि होर्मुज समुद्री मार्ग से जहाजों की निकासी का काम फिर से रोक देना पड़ा। एक अनुमान के अनुसार होर्मुज में अभी पांच सौ से अधिक जहाज फंसे हुए हैं। ईरान की ओर से सिंगापुर के झंडे वाले जहाज को निशाना बनाए जाने का एक परिणाम यह भी हुआ कि तेल के मूल्यों में मामूली ही सही, वृद्धि भी देखी गई। ईरान ने उक्त जहाज पर हमला इसलिए किया, क्योंकि उसके अनुसार उसने उसकी कथित चेतावनी की अनदेखी की। हालांकि अमेरिका और ईरान के बीच यह समझौता हुआ है कि 60 दिनों तक होर्मुज से जहाजों को बिना किसी शुल्क के निकलने दिया जाएगा, लेकिन इसके बाद भी ईरान इस पर अड़ा है कि इस जल मार्ग से जो भी जहाज निकलें, वे उसकी अनुमति लेकर ही निकलें। वास्तव में ईरान इस कोशिश में है कि होर्मुज पर उसका आधिपत्य स्वीकार किया जाए। यह उसकी मनमानी के अलावा और कुछ नहीं।

होर्मुज सरीखे दुनिया के सभी समुद्री व्यापारिक मार्ग स्वतंत्र नौवहन के लिए खुले हैं। एक अंतरराष्ट्रीय संधि के अनुसार किसी देश को अपने तटवर्ती समुद्री मार्ग से किसी तरह की वसूली करने या टैक्स लेने का अधिकार नहीं है। ईरान होर्मुज के मामले में यह अधिकार जबरन हासिल करना चाहता है। उसे यह अधिकार नहीं दिया जा सकता, क्योंकि होर्मुज पर उसका दावा उसकी दादागीरी के अलावा और कुछ नहीं। यह एक ऐसा मामला है, जिसमें ईरान के रुख का समर्थन नहीं किया जा सकता। यह ठीक है कि अमेरिका और इजरायल ने ईरान को अनावश्यक रूप से निशाना बनाया और पश्चिम एशिया की शांति को खतरे में डालने के साथ ही विश्व अर्थव्यवस्था के लिए संकट पैदा किया, लेकिन होर्मुज को अपने नियंत्रण में लेने की ईरान की कोशिश उसे खलनायक ही सिद्ध करने वाली है। संभवतः होर्मुज पर ईरान के अनैतिक तरीके से आधिपत्य जमाने की कोशिश का जवाब देने के लिए ही अमेरिकी सेना ने उसके ठिकानों पर बमबारी की, लेकिन ईरान ने भी खाड़ी देशों में अमेरिकी सैन्य ठिकानों को निशाना बनाने में देरी नहीं की। अमेरिका और ईरान के बीच इस ताजा सैन्य झड़प से इसे लेकर संदेह पैदा हो गया है कि दोनों के बीच जिस शांति समझौते पर सहमति बनी, वह कितना टिकाऊ साबित होगा?

व्यवस्थित यात्रा

उत्तराखंड में चारधाम यात्रा केवल आस्था का प्रतीक नहीं, अपितु प्रकृति और संस्कृति से जुड़ने का अद्भुत माध्यम भी है। फिर यात्राएं हमें सामाजिक सौहार्द, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, नए विचार, नए दृष्टिकोण के विकास और भाईचारा कायम रखने का संदेश भी देती हैं। पिछले दिनों यात्रा संचालन को जिस तरह प्रभावित करने की कोशिशें हुई हैं, उसे किसी भी कीमत में उचित नहीं ठहराया जा सकता। उत्तराखंड में हर वर्ष लाखों तीर्थयात्री और पर्यटक आते हैं। प्रदेश सरकार की बेहतर व्यवस्थाओं के फलस्वरूप हर वर्ष चारधाम यात्रा रिकार्ड बनाती है। ऐसे में तीर्थयात्रियों और पर्यटकों को सुरक्षित, सकारात्मक माहौल उपलब्ध कराने और अराजकता रोकने के उद्देश्य एसओपी (स्टैंडर्ड आपरेटिंग प्रोसिजर) बनाने का राज्य सरकार का निर्णय स्वागतयोग्य है। देवभूमि हमेशा से अतिथि देवो भवः के भाव का अनुसरण करती है और यह चरितार्थ होता भी दिखता है। इस क्रम में मर्यादा और अनुशासन का पालन आवश्यक हो जाता है। यह भाव तभी परवान चढ़ता दिखेगा जब हर कोई अपने दायित्वों के प्रति जवाबदेह दिखे और जिम्मेदारी भी समझे। चाहे यहां आने वाले तीर्थयात्री हों या पर्यटक या फिर आमजन के साथ प्रशासन के जिम्मेदार लोग। इसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि कानून से ऊपर कोई नहीं है। सामाजिक सौहार्द और शांति व्यवस्था प्रभावित करने की छूट किसी को नहीं दी जानी चाहिए। ऐसे लोगों पर सख्ती होनी ही चाहिए जो अराजक माहौल के लिए जिम्मेदार हैं।

> चारधाम यात्रा संचालन को प्रभावित करने की कोशिशों पर सख्ती से एक बड़ा संदेश सामने आ सकेगा

नागरिकता का प्रमाण पत्र

संजय गुप्त

भारत जैसे देश में जहां तरह-तरह के प्रमाण पत्र छल-छद्म से बन जाते हैं, वहां कोई ऐसा दस्तावेज होना ही चाहिए, जो नागरिकता सिद्ध करे

अवधेश राजपूत

पिछले दिनों विदेश मंत्रालय ने जब यह कहा कि पासपोर्ट नागरिकता का प्रमाण नहीं है, बल्कि मात्र यात्रा का दस्तावेज है तो एक बहस चल पड़ी। अनेक लोग संशय में आकर सवाल करने लगे कि यदि पासपोर्ट को नागरिकता का प्रमाण नहीं माना जाएगा तो फिर विदेश में कोई भारतीय नागरिक किस तरह अपनी नागरिकता प्रमाणित कर सकता है? ध्यान रहे कि यह प्रबल धारणा रही है कि पासपोर्ट नागरिकता का एक भरोसेमंद प्रमाण होता है। इसका कारण यह है कि पासपोर्ट गहन छानबीन के बाद ही प्रदान किया जाता है और पासपोर्ट विभाग की ओर से यह सुनिश्चित किया जाता है कि किसी अन्य देश का नागरिक भारत का पासपोर्ट हासिल न कर सके। यदि कोई गलत जानकारी देकर पासपोर्ट हासिल कर लेता है तो उसके खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई भी होती है। समस्या केवल यह नहीं है कि पासपोर्ट नागरिकता का प्रमाण नहीं है। समस्या यह है कि आधार, ड्राइविंग लाइसेंस, मतदाता पहचान पत्र और ऐसे ही अन्य कई दस्तावेजों को भी नागरिकता का प्रमाण नहीं माना जाता। मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण यानी एसआइआर के दौरान चुनाव आयोग ने भी ऐसा ही कहा और सुप्रीम कोर्ट ने भी।

पासपोर्ट के मामले में विदेश मंत्रालय के स्पष्टीकरण के बाद यह साफ हुआ कि पासपोर्ट अधिनियम भी यही कहता है कि यह महज यात्रा की अनुमति देने वाला एक दस्तावेज है, न कि नागरिकता का प्रमाण पत्र। संसद से 1967 में पारित पासपोर्ट अधिनियम के अनुसार केंद्र सरकार जनहित में या विशेष परिस्थितियों में उन व्यक्तियों को भी पासपोर्ट जारी कर सकती है, जो भारत के नागरिक नहीं हैं। इस अधिनियम की धाराओं के आधार पर बंबई उच्च न्यायालय ने एक मामले में यह निर्णय भी दिया था कि पासपोर्ट नागरिकता का प्रमाण पत्र नहीं है। स्पष्ट है कि पासपोर्ट मामले में विदेश मंत्रालय के स्पष्टीकरण के बाद मामले के राजनीतिकरण करने का कोई औचित्य नहीं। इसलिए और भी नहीं, क्योंकि पासपोर्ट अधिनियम तो कांग्रेस की सरकार के समय में पारित हुआ था। यदि पासपोर्ट वास्तव में नागरिकता का प्रमाण पत्र होता तो उक्त अधिनियम में ऐसा दर्ज किया जाता।

नागरिकता का निर्धारण सिटिजनशिप एक्ट, 1955 के तहत होता है। इस अधिनियम के अनुसार नागरिकता का निर्धारण कुछ प्रमुख आधारों पर होता है, जैसे जन्म और वंश। भारत में जन्मा वह व्यक्ति भारतीय नागरिक है, जिसके माता-पिता भी भारत में जन्मे हों। इसी तरह भारत के बाहर जन्मा व्यक्ति भी भारतीय नागरिक हो सकता है, यदि उसके जन्म के समय उसके माता-पिता में से कोई एक भारत का नागरिक रहा हो। भारतीय मूल के ऐसे व्यक्ति, जो भारत में सात साल तक रह चुके हों या भारतीय नागरिकों से विवाहित हों, वे भी भारत की नागरिकता प्राप्त करने के अधिकारी हो सकते हैं। ऐसा विदेशी नागरिक, जो 12 वर्ष से भारत में रह रहा हो, उसे भी भारत की नागरिकता प्रदान की जा सकती है। इसके अलावा यदि कोई नया क्षेत्र भारत का हिस्सा बनता है, तो उस क्षेत्र के लोगों को भारत सरकार द्वारा नागरिकता प्रदान की जाती है। विडंबना यह है कि सिटिजनशिप एक्ट में नागरिकता का निर्धारण करने वाले नियम तो स्पष्ट किए गए हैं, लेकिन इस एक्ट के तहत भारतीय नागरिकों को कोई विशिष्ट पहचान पत्र नहीं दिया जाता, जैसा कि कई देशों में किया जाता है। अपने देश में ऐसा इसके बाद भी नहीं किया जाता कि यह एक्ट इसकी सिफारिश करता है कि भारत सरकार प्रत्येक नागरिक का अनिवार्य पंजीकरण कर सकती है, उसे राष्ट्रीय पहचान पत्र जारी कर सकती है और अपने नागरिकों का रजिस्टर यानी एनआरसी तैयार कर सकती है। भारत में बहुत कम ऐसे लोग हैं, जिनके पास उनके माता-पिता के जन्म प्रमाण पत्र होंगे। तमाम लोग तो ऐसे हैं, जिनका खुद का भी जन्म प्रमाण पत्र नहीं है। इसी कारण अगर किसी कारण नौकरशाही किसी की नागरिकता पर सवाल उठा दे तो उसके लिए यह प्रमाणित करना कठिन हो जाता है कि वह भारत का नागरिक है।

अब जब विदेश मंत्रालय ने यह स्पष्ट कर दिया कि पासपोर्ट नागरिकता का प्रमाण पत्र नहीं है तब फिर बेहतर होगा कि सरकार यह स्पष्ट करे कि भारतीय नागरिकों की नागरिकता को प्रमाणित करने वाले किसी तरह के पहचान पत्र जारी करने की उसकी कोई योजना है या नहीं? एक समय जब लालकृष्ण आडवाणी गृह मंत्री थे तो उन्होंने नागरिकता प्रमाण पत्र के लिए राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर यानी एनआरसी तैयार करने की पहल की थी, लेकिन वह आगे नहीं बढ़ सकी। इसके बाद मनमोहन सिंह सरकार के समय गृह मंत्री के रूप में चिदंबरम ने आधार को एनआरसी से जोड़ने की कोशिश की, लेकिन यह कोशिश भी कामयाब नहीं हो सकी और इस तरह आधार पहचान पत्र के रूप में ही मान्य होकर रह गया। इसके बाद मोदी सरकार ने जब नागरिकता कानून में संशोधन किया तो उसकी ओर से यह कहा गया कि इसके बाद एनआरसी तैयार किया जाएगा, मगर नागरिकता संशोधन कानून यानी सीएए के खिलाफ विपक्षी दलों की ओर से एक अभियान छेड़ दिया गया। इसका नतीजा यह हुआ कि इस कानून को लागू करने में तो देरी हुई ही, एनआरसी की प्रक्रिया भी ठंडे बस्ते में चली गई। एनआरसी की आवश्यकता इसलिए जताई गई थी, ताकि घुसपैठियों की पहचान की जा सके।

एनआरसी के बाद एसआइआर के जरिये घुसपैठियों की पहचान के जतन किए गए, लेकिन एसआइआर घुसपैठियों की पहचान करने की ठोस प्रक्रिया नहीं। चुनाव आयोग केवल यही सुनिश्चित करता है कि मतदाता पहचान पत्र भारतीय नागरिक को ही मिले। वह ऐसे किसी व्यक्ति को मतदाता पहचान पत्र जारी करने से इन्कार कर सकता है, जिसकी नागरिकता के बारे में उसे संदेह हो, लेकिन वह भारत का नागरिक है या नहीं, यह सिद्ध करना उसका काम नहीं। यह काम तो गृह मंत्रालय का है। इन स्थितियों में यह आवश्यक हो जाता है कि सरकार नागरिकता साबित करने वाले किसी दस्तावेज को जारी करने की व्यवस्था करे। ऐसे किसी दस्तावेज को लेकर पक्ष-विपक्ष के बीच सहमति बननी चाहिए। भारत जैसे देश में जहां तरह-तरह के दस्तावेज छल-छद्म से बन जाते हैं, वहां कोई एक ऐसा प्रमाण पत्र होना चाहिए, जो नागरिकता का दस्तावेज हो।

response@jagran.com

बाड़ ही खा रही है खेत को

हास्य-व्यंग्य

कई दिनों बाद ककुआ कल शाम को दिखाई दिए। मैंने पूछा, 'बहुत ढीले दिखाई दे रहे हो? अब तो ईरान वाली लड़ाई भी खत्म हो गई है। सोना-चांदी भी गिरने लगा है। फिर किस बात की परेशानी है?' मेरे इतना कहते ही ककुआ का सपाट चेहरा पीड़ा से भर गया, 'भाड़ में जाए लड़ाई और सोना-चांदी। मंदिर में जैसी लूट हुई और आस्था के साथ जो खिलवाड़ हुआ, उससे मन बहुत खिन्न है।' ककुआ की मनोदशा देखकर मुझे भी बहुत दुख हुआ। मैंने उन्हें सांत्वना देने की कोशिश की, 'हां, गड़बड़ तो बहुत हुई है ककुआ, मगर जांच भी बिठा दी गई है। कोई अपराधी बचेगा नहीं।' ककुआ अब बिफर उठे, 'उससे कुछ नहीं होने वाला। बड़े नाम बच निकलेंगे और छोटे-मोटे लोग बलि चढ़ जाएंगे। आखिर इतने दिन से यह धत् कर्म जारी था और किसी को कोई खबर नहीं हुई। इस पाप में नीचे से ऊपर तक सब मिले हुए हैं। सबसे बड़ा धक्का तो इस बात से लगा है कि यह घिनौना काम किसी बाहर वाले ने नहीं किया है। सोमनाथ मंदिर तो विदेशी मलेच्छ लूटने आया था, लेकिन यहां तो जिन पर रखवाली का जिम्मा था, वही भरोसे को धक्का देने से बाज नहीं आए। बाड़ ही खेत को खा जाए तो फिर क्या बचता है? हमें तो लगता है कि जैसे हमारे कलेजे में ही किसी ने कटार घोंप दी हो।'

संतोष त्रिवेदी

जब अपना ही सिक्का खोटा निकल जाए तो दूसरे लोग उपहास उड़ाएंगे ही। अपनों के घात से उबरना आसान नहीं हैं

'नहीं ककुआ, तनिक तो भरोसा रखो सरकार पर। कुछ लोगों पर शक की सुई घूम रही है। उम्मीद है वह सुई जल्द रुकेगी और सारे चोर पकड़े जाएंगे। आप उल्टा-सुल्टा काहे सोच रहे हैं। अब तो रपट भी दर्ज हो गई है।' मैंने तसल्ली देने की कोशिश की। ककुआ अभी भी संतुष्ट नहीं दिख रहे थे। लंबी सांस लेते हुए बोले, 'हमने दुनिया देखी है, बबुआ! इतनी बड़ी चोरी हो रही थी और रामलला के पटवारी और चौकीदार सब आंख बंद किए थे। हमें तो केवल राघवेंद्र सरकार पर भरोसा है। ऐसे दुष्टों के लिए उन्होंने स्वयं कहा है, 'जौ नहिं दंड करौं खल तोरा,भ्रस्ट होइ स्रुतिमारग मोरा।' अब वही इन राक्षस लोगों का नाश करेंगे।' कहते हुए ककुआ आसमान की ओर ताकने लगे।

बड़ी देर से हमारी बातचीत सुन रहा पानवाला बीच में कूद पड़ा, 'बाबू जी, गलत तो हुआ है। हम तो यह भी सुने हैं कि कागभुसुंडी जी भी उड़ा दिए गए हैं। गरुड़जी को उन्होंने ही रामकथा सुनाई थी। कहीं यह लूटकथा भी न किसी को सुना दें, इसलिए उनको भी ठिकाने लगा दिया गया है। ऐसा एक न्यूजवाला कह रहा था।' ऐसा कहते हुए उसने पान का बीड़ा ककुआ की ओर बढ़ा दिया। पान को मुंह में दबाते हुए ककुआ दहाड़ा कि यह पाप हजम नहीं होगा इन लोगों को। तभी बनवारी चाचा साइकिल से आते हुए दिखाई दिए। ककुआ को 'राम-राम' कहते हुए वह तनिक मुस्कुराए और आगे बढ़ गए। पान थूकते ककुआ बोले, 'विधर्मी तक को हंसने का मौका हमने ही दिया है।

पान वाले की दुकान में काफी लोग जमा हो चुके थे। सभी गुस्से में दिख रहे थे। तभी एक नेताजी आए और शुरू हो गए, 'कुछ लोग सनातन को बदनाम करने का प्रयास कर रहे हैं। भगवान हमारे हैं, मंदिर भी हमारा है। विरोधियों को केवल गोली और बोली चलाना आता है। सारे अपराधी पकड़े जा चुके हैं। आप लोग किसी बहकावे में न आएं। भगवान तो हमारी रक्षा करते हैं, हम उनकी रक्षा करेंगे, ऐसा सोच भी कैसे सकते हैं?'

यह सुनते ही वहां सन्नाटा छा गया और ककुआ हमसे बिना राम-राम किए आगे बढ़ गए।

response@jagran.com

ऊर्जा

विश्वास की पूंजी

मनुष्य का सामाजिक जीवन विश्वास की अदृश्य डोर से बंधा हुआ है। यह डोर जितनी सुदृढ़ होती है, समाज उतना ही सुरक्षित, सभ्य और समृद्ध बनता है। हालांकि, जब कोई व्यक्ति उसे सौंपे गए धन, दायित्व, पद अथवा गोपनीयता के साथ छल करता है, तब वह केवल किसी एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि संपूर्ण सामाजिक विश्वास का हनन करता है। यह ऐसा नैतिक अपराध है, जिसकी क्षति का मूल्य धन से नहीं आंका जा सकता।

भारतीय चिंतन में सत्य, निष्ठा और उत्तरदायित्व को धर्म का मूल माना गया है। प्रत्येक युग में यह संदेश प्रतिध्वनित होता रहा है कि विश्वास ही चरित्र की सबसे बड़ी पूंजी है। जब आपको कोई महत्तर कार्य या संपत्ति के रक्षण का दायित्व सौंपा जाता है, तब उसकी रक्षा करना आपका धर्म होता है। इसमें चूक या गड़बड़ होना अपने धर्म के पालन में असफल होना है। यह असफलता स्वयं की प्रतिष्ठा के नाश का कारण बनती है। महाभारत के यक्ष-प्रश्न प्रसंग में कहा गया है कि जो स्व धर्म का नाश करता है, धर्म उसका नाश कर देता है।

संप्रति, नैतिकता का ह्रास पद के दुरुपयोग, संस्थागत भ्रष्टाचार, अनुचित लाभ तक विस्तारित हो गया है। तात्कालिक लाभ के मोह में व्यक्ति यह भूल जाता है कि अर्जित संपत्ति से अधिक मूल्यवान उसकी विश्वसनीयता होती है। धन का अभाव पुनः दूर किया जा सकता है, किंतु विश्वास एक बार टूट जाए तो उसका पुनर्निर्माण अत्यंत कठिन होता है। जो व्यक्ति अपने दायित्व का पूरे विश्वास और शुद्ध अंतःकरण से पालन करने की परीक्षा में सफल होता है, वही समाज की दृष्टि में सम्मानित और इतिहास की दृष्टि में स्मरणीय बनता है। विश्वास की रक्षा ही सच्ची मानवता है, क्योंकि सभ्यता की सबसे मजबूत नींव ईंट-पत्थरों से नहीं, बल्कि अटूट विश्वास से निर्मित होती है।

प्रशांत अग्निहोत्री

तथ्य-कथ्य

किस देश में वाट्सएप के कितने यूजर

(संख्या करोड़ में)

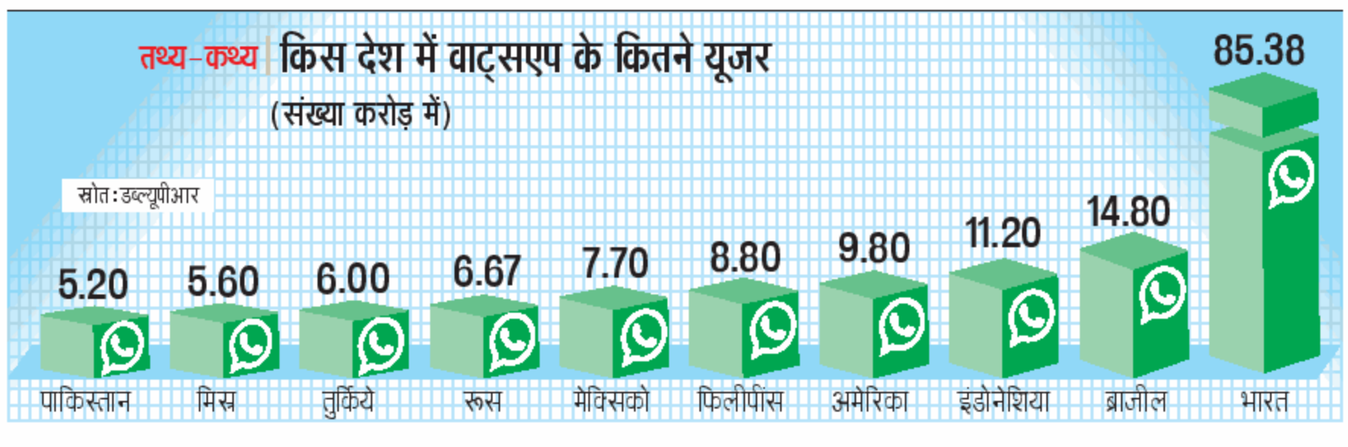

क्षुद्रग्रह के नमूने में छिपी जीवन सामग्री

मुकुल व्यास

रीयुगु के नमूनों में प्यूरीन और पाइरीमिडीन के अध्ययन से क्षुद्रग्रहों के रासायनिक इतिहास को समझा जा रहा है

रीयुगु क्षुद्रग्रह पर डीएनए और आरएनए के सभी पांच आनुवंशिक "अक्षरों" की मौजूदगी से इस विचार को नया बल मिला है कि जीवन के लिए आवश्यक आणविक वस्तुएं पृथ्वी पर पहुंचने से पहले ही अंतरिक्ष में बन गई थीं। विज्ञानियों ने एक नए अध्ययन में बताया है कि रीयुगु के नमूने में जीवन के पांचों बुनियादी न्यूक्लियोबेस मौजूद हैं जिन्हें हम जीवन के आणविक अक्षर भी कह सकते हैं। क्षुद्रग्रह के छोटे-छोटे कण उन वस्तुओं के बारे में रासायनिक सुराग सुरक्षित रख सकते हैं जिन्होंने पृथ्वी पर जीवन की शुरुआत में मदद की होगी। दरअसल, जापान की अंतरिक्ष एजेंसी जाक्सा का हायाबूसा 2 मिशन वर्ष 2020 में रीयुगु का पदार्थ अंतरिक्ष से वापस लाया था। 2023 में अंतरराष्ट्रीय शोधकर्ताओं ने रीयुगु के नमूने में यूरेसिल न्यूक्लियोबेस मिलने की रिपोर्ट दी थी।

अब 'नेचर एस्ट्रोनामी' में जापानी विज्ञानियों द्वारा प्रकाशित एक अध्ययन ने पुष्टि की है कि क्षुद्रग्रह के उस शुद्ध पदार्थ में सभी पांचों न्यूक्लियोबेस मौजूद हैं। इस खोज से पता चलता है कि जीवन से जुड़ी ये चीजें शुरुआती सौरमंडल में आम रही होंगी। रीयुगु के नमूने में जो पांच मुख्य न्यूक्लियोबेस खोजे गए हैं वे हैं: एडेनिन और गुआनिन (जिन्हें प्यूरीन कहा जाता है), और साइटोसिन, थाइमिन व यूरेसिल (जिन्हें पाइरीमिडीन कहा जाता है)। ये अणु शुगर और फास्फेट के साथ मिलकर न्यूक्लियोटाइड बनाते हैं जो आनुवंशिक सामग्री के बुनियादी हिस्से होते हैं। न्यूक्लियोबेस के बिना वह आनुवंशिक कोड मौजूद नहीं हो सकता जो जीवों को विकसित होने में मदद करता है।

थोड़ा पीछे चलें तो हायाबूसा 2 मिशन रीयुगु क्षुद्रग्रह से कुल 5.4 ग्राम शुद्ध पदार्थ लेकर आया था। शोधकर्ताओं ने पानी और हाइड्रोक्लोरिक एसिड का इस्तेमाल करके कार्बनिक अणु निकाले और फिर आगे की जांच के लिए उन्हें शुद्ध किया। उन्होंने रीयुगु के जिन दो नमूनों का विश्लेषण किया, उनमें सभी पांच न्यूक्लियोबेस लगभग एक जैसी मात्रा में मिले। नए नतीजे अंतरिक्ष की चट्टानों पर पहले हुई खोजों से मेल खाते हैं। 1969 में आस्ट्रेलिया में और 1864 में फ्रांस में गिरे ओगाय उल्कापिंड से पहले भी कई तरह के कार्बनिक अणु मिले हैं, जिनमें न्यूक्लियोबेस भी शामिल हैं। पृथ्वी पर गिरने वाले उल्कापिंड अपनी यात्रा के दौरान दूषित हो सकते हैं। लेकिन नासा के बेनू मिशन से मिले शुद्ध नमूने में भी सभी पांच न्यूक्लियोबेस मिले थे।

रीयुगु और बेनू क्षुद्रग्रह और ओगाय उल्कापिंड का मूल पिंड प्रारंभिक सौरमंडल के अवशेष हैं। वे लगभग 4.5 अरब वर्षों तक पदार्थ को काफी हद तक बिना बदले सुरक्षित रख सकते हैं। अब रीयुगु पर सभी पांच न्यूक्लियोबेस मिलने से पता चलता है कि जीवन के लिए आवश्यक आणविक वस्तुएं शायद अरबों साल पहले ही अंतरिक्ष में बन रही थीं।

(लेखक विज्ञान के जानकार हैं)

प्रवासी परेशानी

चुनावों के दौरान अलग-अलग राज्यों में अपने तीखे तेवरों का तड़का लगाने वाले असदुद्दीन ओवैसी इन दिनों सपा और कांग्रेस की आंख की किरकिरी बने हुए हैं। वैचारिक धारा की बात करें तो उनका सीधा टकराव भाजपा से है, लेकिन राजनीति में कहीं प्रहार और कहीं घाव वाला मामला भी होता है। उत्तर प्रदेश में पूर्वांचल हमेशा भाजपा के लिए चुनौतीपूर्ण रहा है, जबकि सपा की पकड़ यहां मजबूत मानी जाती है। ओवैसी ने न सिर्फ यहां से आगामी विधानसभा चुनाव के लिए अपना प्रचार अभियान शुरू कर दिया है, बल्कि उनकी पार्टी ने प्रभावशाली राजभर समाज के महापुरुष महाराजा सुहेलदेव को काल्पनिक बताते हुए महमूद सालार गाजी को सूफी संत बता दिया। इस पर जुबानी जंग तो भाजपा और ओवैसी की पार्टी में चल रही है, लेकिन गला सपा और कांग्रेस का सूख रहा है। कह रहे हैं कि अंचल का मुसलमान ओवैसी को जिताने नहीं जा रहा, लेकिन डर यह है कि प्रवासी परेशानी बने ओवैसी की बयानबाजी राजभर और मुस्लिमों के बीच पाला न खींच दे। सपा और कांग्रेस बहुत दुविधा से गुजर रही हैं।

बढ़ाई दुविधा

राजरंग

बांग्लादेश में भारतीय उच्चायुक्त के रूप में दिनेश त्रिवेदी की नियुक्ति के साथ ही सुस्त पड़े उच्चायोग में जबरदस्त गमाहट का माहौल है। हो भी क्यों नहीं, क्योंकि त्रिवेदी कोई सामान्य उच्चायुक्त नहीं हैं। उनका दर्जा कैबिनेट मंत्री के समतुल्य कर दिया गया है। कूटनीति के इतिहास में इस 'प्रमोशन' को देखकर विदेश मंत्रालय के अफसरों के माथे पर बल पड़ गए हैं। इसमें पेच यही है कि जब विदेश सचिव ढाका जाएंगे तो पदानुक्रम में कौन किससे ऊपर होगा? उच्चायुक्त तो विदेश सचिव के अधीन होते हैं, लेकिन वरीयता अनुक्रम में दर्जा कैबिनेट का ऊपर होता है। प्रोटोकाल के इस धर्मसंकट का सामना पिछले कई दशकों में तो देखने को नहीं मिला। यही कारण है कि अभी विदेश मंत्रालय में इसे लेकर मंथन किया जा रहा है और कोई बीच की राह तलाशी जा रही है। ऐसी राह, जिसमें दोनों पदों के लिए एक जैसी कुर्सी और समान सलामी आदि-इत्यादि। व्यवहार में कैबिनेट दर्जे की बात करें तो इससे त्रिवेदी की पहुंच सीधे प्रधानमंत्री तक होगी। शायद बांग्लादेश के साथ भविष्य के संबंधों को देखते हुए ही त्रिवेदी को यह दर्जा दिया गया है, लेकिन बात प्रोटोकाल की आएगी तो फिर वे विदेश सचिव ही क्या विदेश मंत्री के समकक्ष होंगे। वैसे मूलरूप से गुजराती और सामान्य रूप से हिंदी भाषी एवं बंगाल की राजनीति में सक्रिय रहे त्रिवेदी इतने समझदार हैं कि उन्हें पता है कि कब, क्हां और किस तरह के प्रोटोकाल का पालन करना है।

बदला वक्त

तृणमूल कांग्रेस में फूट का मुद्दा चुनाव आयोग की देहरी तक पहुंच गया है। जल्द ही दोनों गुट आयोग में अपना पक्ष रखते हुए नजर आएंगे। ऐसे में चुनाव आयोग के भीतर भी चर्चा तेज हो गई है इस मामले में ममता बनर्जी का रवैया कैसा होगा? पिछली बार जब वे चुनाव आयोग आई थीं तो बंगाल की मुख्यमंत्री थीं। अपने प्रतिबद्ध वोट बैंक के सहारे सत्ता में वापसी की उम्मीद भी लगाए बैठी थीं तो तब उन्होंने मुख्य चुनाव आयुक्त के सामने मेज पर तेज-तेज हाथ मारकर न सिर्फ तीखे तेवर दिखाए, बल्कि उन्हें भला-बुरा भी कहा था। उनके साथ आई सांसदों की टीम का रवैया भी ऐसा ही था, लेकिन अब वे सत्ता से बाहर हैं। उनके कई साथियों ने भी उनका साथ छोड़ दिया है। जो कुछ बच गए हैं, उनमें से भी कई ऐसे हैं जो समय-समय पर असंतोष जाहिर करने से पीछे नहीं रहते। चूंकि पिछले दौरे के मुकाबले ममता बनर्जी की राजनीतिक हैसियत ही पूरी तरह से बदल गई है, इसलिए चुनाव आयोग में इसी बात पर चर्चा हो रही है कि बदले हुए हालात में क्या उनके तेवर भी बदलेंगे या नहीं?

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व. नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा-201309 से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष: नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।

18 से 35 करोड़ तक लोग भारत में मोटापे या अधिक वजन (ओवरवेट) की समस्या से ग्रस्त हैं, राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस-6) के अनुसार। लगभग 31 प्रतिशत महिलाएं और 27.7 प्रतिशत पुरुष इस समस्या की चपेट में हैं, जिसमें शहरी क्षेत्रों के लोगों की संख्या बहुत अधिक है।

आजकल

कम्युनिस्ट खतरों के प्रति चेताते ट्रंप

अनंत विजय
anant@nda.jagran.com

अमेरिका में हैती और सीरिया जैसे देशों से आकर बसने वालों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। ऐसे में वहां के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के संबंधित बयान चर्चा में हैं। उन्होंने इस बात को लेकर चिंता जताई है कि अमेरिका में कम्युनिस्ट एक बार फिर से क्रिश्चियन और चर्च के खिलाफ उठ खड़े हुए हैं। इसे रोकने के लिए उन्होंने एक आयोग का गठन भी किया था। भारत में भी कमोबेश इस तरह की स्थिति को कम्युनिस्ट कायम रखना चाहते हैं। लिहाजा भारत में भी इनके विरुद्ध निरंतर लिखे जाने और बोले जाने की जरूरत है

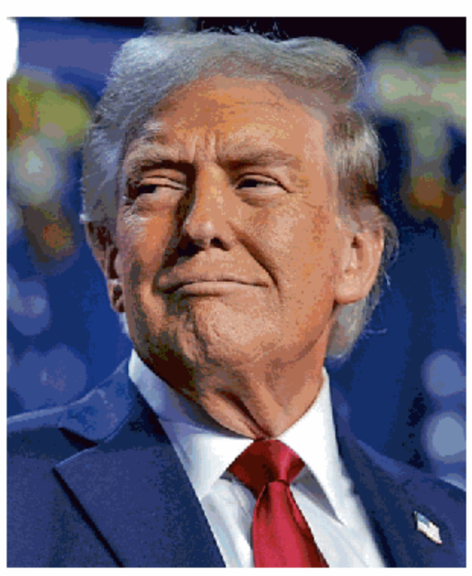

डोनाल्ड ट्रंप। फाइल

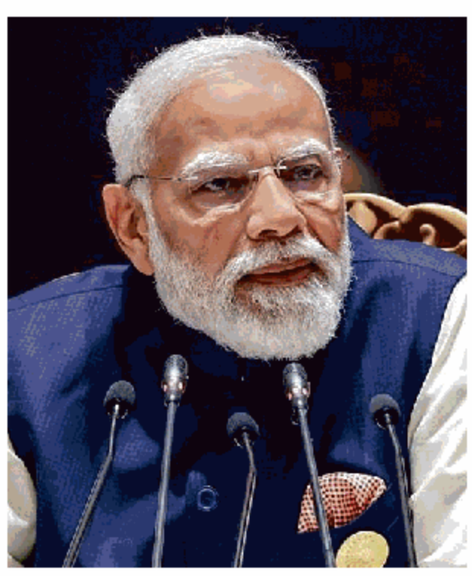

नरेन्द्र मोदी। फाइल

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बयानों की वैश्विक स्तर पर चर्चा होती ही रहती है। लेकिन उनका एक बयान इन दिनों अमेरिका में खूब चर्चा बटोर रहा है। इंटरनेट मीडिया पर उसके पक्ष विपक्ष में लगातार टिप्पणियां प्रकाशित हो रही हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने अपने एक सार्वजनिक भाषण में कम्युनिस्टों के आसन्न खतरे के बारे बेहद कठोर बातें की हैं। उन्होंने कहा, 'कम्युनिस्ट एक बार फिर से क्रिश्चियन और चर्च के विरुद्ध युद्ध आरंभ करना चाहते हैं। वे सरकार और चर्च को अलग करके देखने की वकालत करते रहते हैं। आपने देखा कि किस तरह से कम्युनिस्टों ने एकजुट होकर न्यूयार्क में चुनाव जीता। वे पूरी तरह से अमेरिकी जीवन पद्धति को समाप्त करना चाहते हैं। कम्युनिज्म को फैलाना बहुत आसान है, पर जो इसकी चपेट में आता है वह गंदगी में जीवन जीने को मजबूर होता है। न तो खाना मिलता है, न ही आवास की व्यवस्था हो पाती है, न ही कानून व्यवस्था बन पाती है। वहां कुछ भी नहीं होता है और तीसरी दुनिया के देशों की तरह हो जाते हैं, जहां सभी पीड़ित होते हैं या मरने के लिए अभिशप्त।'

दरअसल अमेरिका में क्रिश्चियनिटी और चर्च पर लगातार हो रहे प्रहारों को ध्यान में रखते हुए ट्रंप प्रशासन ने रिलीजियस लिबर्टी कमीशन बनाया था। उसके चेयरमैन ने अपने अध्ययन के आधार पर कहा कि 'वे (कम्युनिस्ट) अमेरिका से गाड (भगवान) को हटाना चाहते हैं, चर्चों को बंद करना चाहते हैं और आस्थावान अमेरिकियों को दंडित करना चाहते हैं। अमेरिका की कट्टरपंथी ताकतें अमेरिका से गाड को मिटाना चाहती हैं, लेकिन ऐसा होने नहीं देंगे। अमेरिका फर्स्ट का अर्थ है गाड फर्स्ट।' उन्होंने अमेरिकी जनता का आह्वान किया कि वे देश में मौजूद कट्टरपंथी ताकतों के विरुद्ध खड़े हों और अपनी रिलीजियस लिबर्टी के लिए अंतिम सांस तक लड़ें।

रिलीजियस लिबर्टी और कम्युनिस्टों की प्रविधि की इस बहस में साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार जीतने वाले रूसी लेखक सोल्झेनित्सिन का लिखा एक वाक्य अमेरिका में इंटरनेट मीडिया पर जमकर उद्धृत किया जा रहा है। सोल्झेनित्सिन ने रूस में राजनीतिक उत्पीड़न पर लिखकर पूरी दुनिया को बताया था। सोल्झेनित्सिन ने लिखा था कि 'कम्युनिस्ट सिस्टम में अपराधियों को बख्श दिया जाता है और राजनीतिक विरोधियों को अपराधी बना दिया जाता है।' दरअसल अमेरिकी प्रशासन इस समय क्रिश्चियनिटी के प्रति अनुरागी लोगों की संख्या कम होने को लेकर चिंतित है। एक अनुमान के मुताबिक, इस समय अमेरिका के शहर न्यूयार्क में 40 प्रतिशत लोग गैर क्रिश्चियन हैं। वहां इस बात पर बहस हो रही है कि क्या प्रवासियों के कारण देश की अस्मिता और वहां का रिलीजन संकट में है। अमेरिका में जिस तरह से हैती और सीरियन समुदाय के लोगों की संख्या बढ़ रही है, उसके विरुद्ध जनमानस तैयार करने का प्रयास ट्रंप और उनके सहयोगी कर रहे हैं। अब तो इस पर भी बात होने लगी है कि जिस धर्म को मानने वाले आतंकवादियों ने वर्ल्ड ट्रेड टावर पर हमला किया और अमेरिका को चुनौती दी, उसी समुदाय के लोग एक बार फिर इकट्ठा होकर क्रिश्चियनिटी को चुनौती देते प्रतीत हो रहे हैं। उस समुदाय को कम्युनिस्टों का प्रत्यक्ष समर्थन भी मिल रहा है। अमेरिकियों का एक पढ़ा लिखा तबका भी उनके समर्थन में दिखता है। स्वतंत्रता के नाम पर जिस तरह से तुष्टीकरण को बढ़ावा दिया जा रहा है, उसको लेकर ट्रंप और उनकी पार्टी के लोग अमेरिका में चिंता का माहौल बनाने का प्रयास करते दिख रहे हैं।

भारत में कम्युनिस्टों की स्थिति को देखें तो ऊपरी तौर पर यह लगता है कि चुनावों में उनकी निरंतर हार के बाद वे अपने सबसे बुरे दौर में हैं। कम्युनिस्ट भले ही कमजोर प्रतीत हो रहे हों, लेकिन जिस तरह से उन्होंने कांग्रेस पार्टी को समर्थन करना आरंभ किया है, उसको रेखांकित करना आवश्यक है। कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष राहुल गांधी ने पार्टी के हैदराबाद प्लेनरी सेशन में स्पष्ट रूप से यह माना था कि पार्टी हिंदुत्व के कारण नहीं, बल्कि अपनी संगठन की कमजोरी से जूझ रही है। वही राहुल गांधी कालांतर में कम्युनिस्टों के एजेंडे पर आते दिखे। आज कांग्रेस पार्टी की नीतियों में कम्युनिस्ट विचारों की छाप स्पष्ट दिखती है। हिंदुत्व पर आक्रमण अब पार्टी के केंद्र में है। इसके अलावा, अकादमिक जगत में अब भी कम्युनिस्टों के प्रभाव को महसूस किया जा सकता है। विशेषकर भाषा और संस्कृति के विषयों में जिस तरह की पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं, उनमें वामपंथी विचार और उसके पैरोकारों की बहुलता है। अब भी कई विश्वविद्यालयों में कल्चरल स्टडीज के पाठ्यक्रम में वाम विचार की प्रधानता है। यह वही विचार है जो भारत और भारतीयता के विषयों और सिद्धांतों का निषेध करने के लिए विदेशी और आयातित विचारों को लेकर आते हैं। विदेशी विचारों के आधार पर अकादमिक जगत में विमर्श होते हैं। अमेरिका में भी पढ़े-लिखे लोगों के एक वर्ग के कम्युनिस्ट विचार को आगे बढ़ाने वाले के तौर पर पहचान की गई है। भारत में तो स्वाधीनता के बाद लंबे समय तक उनको ही पढ़ा लिखा माना जाता रहा जो कम्युनिस्ट थे या फिर मार्क्स के अनुयायी थे। कहना न होगा कि अब भी यह प्रवृत्ति अकादमिक जगत में है कि वहां कोई पढ़ा लिखा या विद्वान तभी समझा जाता है जब उसका आत्मा लेफ्ट की तरफ झुका हो। यह बात भी फैलाई गई कि दक्षिणपंथ में प्रतिभा की कमी है।

यह अनायास नहीं है कि अमेरिका अपने देश और धर्म को सांस्कृतिक मार्क्सवाद से बचाकर रखना चाहता है। वहां चिंता इस बात को लेकर है कि सांस्कृतिक मार्क्सवाद पहले परिवार नाम की संस्था को नुकसान पहुंचाता है। फिर धर्म को निशाना बनाता है और निजी संपत्ति को लेकर विरोध का माहौल बनाता है। इन सब लक्ष्यों को पूरा करके वह राष्ट्र को नुकसान पहुंचाने के लक्ष्य की ओर बढ़ता है। हमारे देश में भी स्वाधीनता के बाद सांस्कृतिक मार्क्सवाद के दुष्परिणामों को देखा जा सकता है। किस तरह से संयुक्त परिवार की अवधारणा को एकल परिवार की तरफ मोड़ दिया गया। धर्म की तुलना अफीम से करके नास्तिकता को बढ़ावा दिया गया। जो लोग धार्मिक प्रतीक चिन्हों को धारण करते थे, उनको पोंगापंथी या दकियानूसी करार दिए जाते सबने देखा है। पिछले लोकसभा चुनाव में निजी संपत्ति के स्कैनिंग करवाने जैसे बयान भी सुने गए थे। इसके बाद राष्ट्र की अवधारणा को प्रश्नांकित कर उसको कमजोर करने के मंसूबे भी स्पष्ट ही हैं। सांस्कृतिक मार्क्सवाद की इस राह की सबसे बड़ी बाधा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और उनके विचार हैं। सभ्यतागत मूल्यों की पुनर्स्थापना के प्रयत्नों से नरेन्द्र मोदी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की जड़ें मजबूत कर रहे हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि अमेरिका की तरह भारत में कम्युनिस्टों के विरोध में बोला और लिखा जाना चाहिए। महत्वपूर्ण यह भी है कि अकादमिक जगत में उनके वर्चस्व को चुनौती देने का संगठित प्रयास हो।

भारतीय संस्कृति

वैश्विक नेतृत्व का आधार

डा. विनोद नारायण इंदुरकर
अध्यक्ष, सीसीआरटी, संस्कृति मंत्रालय

पिछले एक दशक में भारत की वैश्विक पहचान में एक उल्लेखनीय परिवर्तन आया है। कभी जिस देश की चर्चा मुख्यतः उसकी अर्थव्यवस्था, जनसंख्या या सामरिक क्षमता के संदर्भ में होती थी, आज वही भारत अपनी सभ्यतागत विरासत, सांस्कृतिक आत्मविश्वास और मानवीय मूल्यों के कारण वैश्विक विमर्श के केंद्र में है। हाल ही में फ्रांस के एवियां में संपन्न जी-7 शिखर सम्मेलन और भारत की ब्रिक्स अध्यक्षता के अंतर्गत वाराणसी में आयोजित द्वितीय 'ब्रिक्स संस्कृति कार्य समूह' की बैठक इस परिवर्तन के दो महत्त्वपूर्ण उदाहरण हैं। एक मंच पर वैश्विक अर्थव्यवस्था, प्रौद्योगिकी और सुरक्षा जैसे विषयों पर चर्चा हुई, तो दूसरे मंच पर रचनात्मक अर्थव्यवस्था, सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण, कृत्रिम बुद्धिमत्ता के सांस्कृतिक आयाम और संस्कृति-आधारित सतत विकास पर गंभीर मंथन हुआ।

यह संयोग नहीं, बल्कि बदलती विश्व व्यवस्था का संकेत है कि संस्कृति आज कूटनीति का परिशिष्ट नहीं, बल्कि वैश्विक नेतृत्व का एक प्रभावशाली आधार बन चुकी है। पिछले 12 वर्षों में भारत ने इसी सोच को अपनी विदेश नीति और सांस्कृतिक दृष्टि का अभिन्न हिस्सा बनाया है। परिणामस्वरूप, भारतीय संस्कृति आज केवल संग्रहालयों और स्मारकों तक सीमित नहीं, बल्कि विश्व समुदाय के साथ संवाद, साझेदारी और विश्वास का एक सशक्त माध्यम बनकर उभरी है। इसी परिवर्तन के केंद्र में संस्कृति मंत्रालय की दूरदर्शी पहलें और उसके अधीन कार्यरत संस्थानों की सक्रिय भूमिका रही है, जिन्होंने भारत की सांस्कृतिक विरासत को वैश्विक मंचों तक पहुंचाने में नई ऊर्जा और नई दिशा प्रदान की है।

दार्शनिक दृष्टि से देखा जाए तो संस्कृति किसी समाज का सामूहिक आत्मा होता है। भारत जैसे बहुभाषिक राष्ट्र में यह सांस्कृतिक आत्मा असंख्य रूपों में प्रकट होता है। किंतु इन विविध अभिव्यक्तियों को एक साझा राष्ट्रीय चेतना में रूपांतरित करना एक अत्यंत सूक्ष्म और चुनौतीपूर्ण कार्य है। भारत की सांस्कृतिक शक्ति केवल उसकी मूर्त धरोहरों में नहीं, बल्कि उसकी अमूर्त विरासत में भी निहित है। लोक परंपराएं, जनजातीय कलाएं, लोकसंगीत, शिल्प, मौखिक इतिहास और पांडुलिपियां हमारी सभ्यता की ऐसी निधियां हैं, जिन्हें संरक्षित करने के लिए केवल संग्रहालय पर्याप्त नहीं हैं। इसके लिए दस्तावेजीकरण, शोध और समाज की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। सीसीआरटी इसी दायित्व का निर्वहन करता है।

डिजिटल युग ने संस्कृति के सामने नई चुनौतियां प्रस्तुत की हैं, लेकिन नई संभावनाएं भी खोली हैं। आज यदि किसी दूरस्थ गांव का लोक कलाकार डिजिटल मंच के माध्यम से पूरे देश तक पहुंच सकता है, यदि किसी दुर्लभ पांडुलिपि को डिजिटल रूप में सुरक्षित किया जा सकता है, तो यह तकनीक व परंपरा के समन्वय का परिणाम है।

संस्कृति की सबसे बड़ी परीक्षा तब होती है, जब उसे नई पीढ़ी अपनाती है। यदि युवाओं के भीतर अपनी परंपराओं के प्रति सम्मान और जिज्ञासा नहीं होगी, तो कोई भी संरक्षण प्रयास स्थायी नहीं हो सकता। युवा कलाकारों को छात्रवृत्तियां, गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से प्रशिक्षण और राष्ट्रीय सांस्कृतिक शिविर जैसी पहलें महत्वपूर्ण हैं।

पोस्ट

आयरिश क्रिकेटरों ने बेहतरीन जज्बे के साथ प्रदर्शन किया है। भारत के विरुद्ध मिली पहली जीत उनके लिए बहुत मायने रखती है और इससे आयरिश क्रिकेट को बहुत प्रोत्साहन मिलेगा। वहीं, भारतीय टीम को लिए यह हार आईना दिखाने वाली रही।
हर्षा भोगले@bhogleharsha

रामजन्मभूमि चढ़ावा चोरी मामले में जिन लोगों के नाम प्राथमिकी में दर्ज किए गए हैं, वे इस गड़बड़झाले की छोटी मछलियां मात्र हैं। यह गड़बड़ी तो लंबे समय से जारी थी। प्रतीत होता है कि वरिष्ठ अधिकारी या तो अक्षम्य रूप से लापरवाह थे या फिर उनकी इसमें सीधी संलिप्तता थी। उन्होंने समूचे हिंदू समुदाय, पीएम मोदी और सीएम योगी को शर्मसार किया है।
प्रकाश सिंह@singh_prakash

चंपत राय और अनिल मिश्र के इस्तीफे की सूचना कोषाध्यक्ष गोविंद देव गिरि के माध्यम से आई है। स्वयं उन्हें भी त्यागपत्र दे देना चाहिए। चोरी तो कोष से हुई है। कोषाध्यक्ष पहले स्वयं त्यागपत्र देने की जगह दूसरों के त्यागपत्र ले रहे हैं। ऊपर से बिना हस्ताक्षर के पत्र जारी कर रहे हैं। इस ट्रस्ट में कुछ भी नियमों के अनुसार होता ही नहीं है क्या?
दिव्य कुमार सोती@DivyaSoti

राम मंदिर में जिन्हें चौकीदार बनाया, उन्होंने ही डाका डाला। सबसे दुखदायी बात यह रही कि चोरी करने कोई बाहर से नहीं आया था।
रजत शर्मा@RajatSharmaLive

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट का नए सिरे से गठन होना चाहिए?

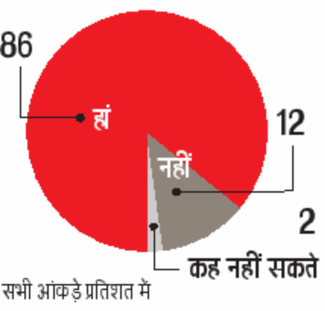

सभी आंकड़े प्रतिशत में

आज का सवाल

क्या वैभव सूर्यवंशी को अंतिम एकादश में शामिल किया जाना चाहिए?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है

जनपथ

टिन्नू यादव से कहें चाचा चंपत राय,
बेटा तेरे गैंग ने लिया रुपैया खाय।
लिया रुपैया खाय चढ़ावा कर के चोरी,
आज रहे पछताय तुम्हें हम सौंप तिजोरी!
रोज-रोज आरोप लग रहे अब तो नव-नव,
देकर दाग अनंत गया है टिन्नू यादव!!
-ओम प्रकाश तिवारी

रचनाकर्म

वजन घटाने का मिथक और सच

ब्रह्मानंद मिश्र

यह पुस्तक वजन बढ़ने के विज्ञान को समझाती है और इसके लिए प्रयुक्त नई दवाओं के प्रभावों को बताती है। वजन घटाने के उपायों पर चर्चा करने के साथ यह अनेक भ्रमों का निवारण भी करती है...

पुस्तक : वजन घटाने की क्रांति : मिथक, सच और विज्ञान
लेखक : डा. अंबरीश मित्थल (शिवम विज के साथ), **प्रकाशक :** डायमंड बुक्स
मूल्य : 225 रुपये

भोजन की कमी वाले दौर में मोटापे को अच्छी सेहत और अमीरी की निशानी माना जाता था। धारणा तो यह भी थी कि इससे बीमारी से लड़ने में मदद मिलती है। दुबला होने का मतलब था कि व्यक्ति बीमार और चिंता से ग्रसित है, लेकिन मोटापे और जीवनशैली की गलतियों के चलते जब मृत्युदर बढ़ने लगी, तो 20वीं सदी में ही लोगों को समझ में आ गया कि मोटापा तो एक बीमारी है। यह ऐसी जड़ है, जिससे डायबिटीज, हृदयरोग जैसी अनेक बीमारियों की शाखाएं भी निकलती हैं।

हालांकि, समाज में आज भी एक बड़ा तबका है, जो मोटापे को बदसूरती के रूप में ही देखता है, न कि बीमारी के रूप में। चिकित्सक उन्हें इस बात को समझाने में संघर्ष करते हैं कि मोटापा डायबिटीज, घुटने के दर्द, उच्च रक्तचाप, बढ़े हुए कोलेस्ट्राल जैसी बीमारियां भी दे सकता है। इसे रोकने के लिए आज भी सबसे आसान और प्रभावी उपाय है- जीवनशैली में सुधार। शहरी जीवनशैली में पले मोटे लोग जब इससे निजात पाने की कोशिश करते हैं तो कभी भूखे रहने, तो कभी क्रैश डाइट (कम कैलोरी का भोजन) जैसे उपाय करने लगते हैं, जबकि सबसे अधिक सुधार और संतुलन की जरूरत हार्मोन, मेटाबालिज्म और जीवनशैली के लिए होती है। ऐसे ही लोगों के लिए डा. अंबरीश मित्थल की यह पुस्तक एक गाइड की तरह काम करती है।

आज दुनियाभर में जीएलपी-1 दवाओं को लेकर चर्चा हो रही है, जिनसे गैर-संचारी रोगों की रोकथाम और प्रबंधन का प्रयास किया जा रहा है। फिर भी, महंगे इलाज, इसके दुष्प्रभाव और मोटापे की दोबारा वापसी जैसे तमाम किंतु-परंतु लोगों में मन बने हुए हैं। भारत के मशहूर एंडोक्रिनोलाजिस्ट डा. अंबरीश मित्थल ने इस पुस्तक में इसका जवाब देने के साथ वजन बढ़ने के विज्ञान को भी सरलता से समझाया है।

यह पुस्तक अनेक भ्रमों और आधी-अधूरी जानकारियों से भी आपको बाहर निकालेगी, ताकि आप व्यावहारिक रास्ते पर चलते हुए मोटापा-मुक्त सुखद जीवन का आनंद ले सकें। लेखक ने दवाओं के दुरुपयोग के बारे में भी सचेत किया है, जैसे- क्या शादी के दो महीने पहले दवाई से वजन घटाकर स्लिम हुआ जा सकता है, क्या ये दवाएं डायबिटीज को खत्म कर देंगी, कहीं इनका अन्य अंगों पर साइड इफेक्ट्स तो नहीं होगा, दोस्त ले रहे हैं तो क्या मैं भी ट्राइ कर लूं... जैसे सवाल अगर मन में आ रहे हैं, तो यह पुस्तक आपको जरूर पढ़नी चाहिए। पुस्तक में दी गई केस स्टडीज के जरिये भी आप सही निर्णय लेने में सफल होंगे। ओजेंपिक, मौंजारो और जीएलपी-1 जैसी मोटापा रोधी दवाओं के प्रयोग, फायदे, नुकसान के बारे में आज इंटरनेट मीडिया पर जानकारियों की भरमार है, लेकिन वे कितनी विश्वसनीय हैं, इसे परखने के लिए यह पुस्तक एक विश्वसनीय और प्रासंगिक स्रोत की तरह है।

यह पुस्तक मोटापाग्रस्त व्यक्ति के लिए कोई चमत्कारिक समाधान नहीं दे रही है, पर एक समग्र दृष्टिकोण विकसित करने में जरूर मदद करेगी, ताकि चिकित्सकीय निगरानी में पहुंचने से पहले आप जीवनशैली में आवश्यक सुधार, आहार को लेकर सतर्कता, दिनचर्या में सक्रियता लाने जैसे छोटे-मोटे उपाय कर सकें। डा. अंबरीश के पास डायबिटीज, मोटापा और हार्मोनल विकारों जैसे मेटाबालिक रोगों के उपचार में लगभग चार दशकों का वृहद अनुभव है। उनके अनेक शोध पत्र प्रकाशित हुए हैं और वे वैश्विक चिकित्सा चर्चाओं में योगदान भी देते हैं। उनके इसी अनुभव का नतीजा है कि पुस्तक बहुत ही सरल भाषा में आपको बहुत गहरी जानकारियां उपलब्ध करा देती है।

गीता से जीवन में मार्गदर्शन

कन्हैया झा

पुस्तक : सफलता के गीता-सूत्र
लेखक : चैतन्य चरण
प्रकाशक : पेंगुइन रैंडम हाउस इंप्रिंट
मूल्य : 299 रुपये

क्या कभी आपको ऐसा महसूस हुआ है कि आप जीवन में मेहनत तो बहुत कर रहे हैं, परंतु सही दिशा नहीं मिल रही है? निर्णय लेने के समय क्या आपके मन में किसी तरह का संशय और डर पैदा हो जाता है? क्या आप अपने जीवन या कार्यक्षेत्र में एक प्रभावशाली नेता बनना चाहते हैं? यह पुस्तक ऐसी ही उलझनों का सरल और प्रेरक समाधान प्रस्तुत करती है। वस्तुतः यह पुस्तक बताती है कि जीवन की प्रत्येक उपलब्धि केवल भाग्य से नहीं, बल्कि सही कर्म, स्पष्ट निर्णय और सशक्त नेतृत्व से बनती है। जब व्यक्ति अपने कर्मों को समझदारी से चुनना सीख जाता है, निर्णयों में दृढ़ता पा लेता है और अपने भीतर के नेता को जाग्रत कर लेता है, तब सफलता संभावना नहीं रह जाती है, बल्कि वास्तविकता बन जाती है।

गीता में श्रीकृष्ण एक शानदार वैश्विक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं, जिसने अर्जुन को निर्णय लेने के लिए एक गंभीर, परंतु व्यावहारिक आधार प्रदान किया। हालांकि गीता के वैश्विक दृष्टिकोण का निश्चित वर्णन जटिल है और इसके वक्ता इसे सदियों से समझाते रहे हैं। पुस्तक में गीता को प्रगतिशील दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया गया है।

वस्तुतः नेतृत्व से गीता का संबंध इसकी परिस्थितियों से ही स्पष्ट हो जाता है। यह नेतृत्व के मुद्दे पर किसी एक पल में सामने आए परिणाम को लेकर दो नेताओं के बीच बातचीत है। गीता के मुख्य वक्ता कृष्ण ने स्वयं को उस समय का सबसे अग्रणी लीडर साबित किया। लेखक ने बातचीत के माध्यम से विषय को सहज रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। पुस्तक 10 अध्यायों में विभाजित है, जिनमें से कुछ के शीर्षक इस प्रकार हैं : ब्रह्मांड एक यूनिवर्सिटी है, परवाह करें चिंता नहीं, मन को संभालें, जवाबदेही के बारे में सोचें, पूजा के रूप में काम, कभी दिल छोटा न करें आदि। पाठकों के लिए यह पुस्तक एक मार्गदर्शक की तरह साबित हो सकती है।

पहाड़ी जीवन की अंतर्ध्वनियां

यतीन्द्र मिश्र

हिमालय एक पर्वत-शृंखला से कहीं अधिक प्रकृति, मनुष्य, इतिहास और वर्तमान के सह-अस्तित्व की विराट दुनिया है। इसे देखने की एक दृष्टि उसके सौंदर्य में खो जाने की है और दूसरी उन लोगों के जीवन को समझने की, जो इन पहाड़ों के बीच अपने सुख-दुख, संघर्ष और सपनों के साथ जीते हैं। उमेश पंत की 'छानी-खरीकों में : जहां रास्ता नहीं होता' इन्हीं दोनों दृष्टियों का यात्रा-आख्यान है। पुस्तक 'अस्कोट-आराकोट अभियान' की पृष्ठभूमि में आकार लेती है, लगभग 1150 किलोमीटर लंबी यह पदयात्रा, जो हिमालयी समाज और उसके बदलते जीवन-संदर्भों को समझने का एक सामूहिक प्रयास है। लेखक अपनी यात्रा उत्तराखंड के भुला दिए गए गांवों पर केंद्रित करते हुए भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय परिवर्तनों के बीच उस अनदेखे यथार्थ को सामने लाते हैं, जो पर्यटन-विज्ञापनों की चमकदार छवियों के पीछे अक्सर ओझल रह जाता है। वे दृश्य के भीतर छिपे जीवन को पकड़ते हैं और दुर्गम रास्तों, अनजाने गांवों, सुदूर घरों, छानियों और खरीकों तक पहुंचते हैं, जो पहाड़ की पारंपरिक जीवन-व्यवस्था के प्रतीक हैं, जहां जीवन अपनी सबसे मूल और कठोर अवस्था में मौजूद है। यह पदयात्रा कुमाऊं की जोहार घाटी स्थित मुनस्यारी से आरंभ होकर होकरा, लीती, बदियाकोट, बोरबलड़ा जैसे दूरस्थ गांवों से लेकर माणातोली और मिनसिंग जैसे बुग्यालों तक पहुंचती है। आगे यह यात्रा गढ़वाल के हिमनी, वाण, रामणी, झिंझी होते हुए कुआरी पास पारकर जोशीमठ, गोपेश्वर और त्रियुगीनारायण तक तथा अंततः पंवाली कांठा से उतरकर बूढ़ा केदार होते हुए कमद तक, जिसे पूरा करने में एक माह का समय लगता है। 90 से अधिक बस्तियां, 15 नदियां और अनेक बुग्यालों से गुजरती यह यात्रा पाठक को सहयात्री बना लेती है।

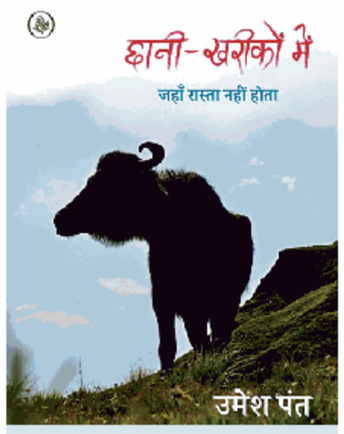

पुस्तक : छानी-खरीकों में : जहां रास्ता नहीं होता, **लेखक :** उमेश पंत
प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन
मूल्य : 350 रुपये

यात्रा के दौरान कठिन चढ़ाइयां, तीखे उतराव, जल-संकट, अनवरत बारिश और धूप तथा खुले आसमान में रात्रि प्रवास जैसे अनुभव शरीर और मन दोनों को गढ़ते हैं। इस यात्रा में पहाड़ गहरे सामाजिक परिवर्तन का साक्षी भी बनता है। यहां एक महत्वपूर्ण पक्ष हिमालय की पर्यावरणीय संवेदनशीलता है। 1893-94 की बिरही गंगा घटना स्मरण कराती है कि यह भूगोल जितना सुंदर है, उतना ही अस्थिर भी है। पुस्तक में बीच-बीच में पहाड़ी लोकधुनों की उपस्थिति भी अनुभव को जीवंत बनाती है।

दक्कन की रणचंडी और मराठा स्वराज

भारत प्राचीन काल से ज्ञान, अध्यात्म, कला, दर्शन और सांस्कृतिक परंपराओं का समृद्ध केंद्र रहा है, जहां सामाजिक जीवन सह-अस्तित्व की भावना से संचालित था। किंतु मध्यकालीन इस्लामी आक्रमणों के दौर ने इस भूमि को आघातों से भर दिया। इतिहासकार इस काल को हिंसा, मंदिर-विध्वंस, दास-व्यापार और जनसंख्या पर पड़े व्यापक प्रभावों के संदर्भ में विश्लेषित करते हैं। के. एस. लाल के अनुसार, 1000-1525 ईस्वी के बीच भारत की हिंदू जनसंख्या में लगभग आठ करोड़ की कमी हुई। इसके बावजूद, भारतीय आत्मा कभी पराजित नहीं हुआ, छत्रपति शिवाजी महाराज जैसे युगपुरुष का उदय हुआ, जिन्होंने स्वराज, स्वाभिमान और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का शंखनाद किया।

मेधा देशमुख भास्करन अपने ऐतिहासिक उपन्यास 'क्वीन तारा : काली आफ द दक्कन' में मराठा-मुगल संघर्ष की गाथा को औरंगजेब की मृत्यु (1707) तक बढ़ाती हैं। शिवाजी महाराज के निधन (1680), संभाजी महाराज के बलिदान (1689) और राजाराम महाराज के निधन (1700) ने मराठा नेतृत्व को संकट में डाल दिया। औरंगजेब विशाल सेना, तोपखाने और अनुभवी सेनापतियों के साथ दक्कन उतरा, जिसका उद्देश्य मराठा स्वराज्य का अंत करना था। ऐसे में उभरती हैं महारानी ताराबाई, अदम्य स्त्री-शक्ति की प्रतीक छत्रपति शिवाजी महाराज की पुत्रवधू, जिन्होंने संकट के सबसे गहरे क्षणों में मराठा राज्य की बागडोर संभाली।

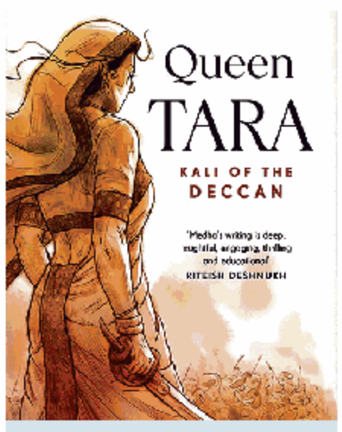

पुस्तक : क्वीन तारा : काली आफ द दक्कन
लेखिका : मेधा देशमुख भास्करन
प्रकाशक : पेंगुइन रैंडम हाउस
मूल्य : 499 रुपये

ताराबाई का जीवन बचपन की उस भयावह घटना से गहराई से प्रभावित होता है, जब वे पहली बार मुगल सैनिकों द्वारा किए गए अत्याचार और पीड़ित स्त्रियों को देखती हैं। महज 10 वर्ष की अवस्था में उनका विवाह हो जाता है। पति की मृत्यु और राज्य पर मंडराते संकट के बीच धीरे-धीरे हम ताराबाई को एक जिज्ञासु और आत्मविश्वासी बालिका से आगे बढ़कर एक दृढ़, साहसी और दूरदर्शी नेतृत्वकर्ता के रूप में विकसित होते देखते हैं। उनके भीतर चल रहे शोक, भय और कर्तव्यबोध के द्वंद्व को लेखिका अत्यंत मार्मिकता से चित्रित करती हैं। वे अपने पिता से प्राप्त ज्ञान का उपयोग युद्ध-रणनीतियों में करती हैं। ताराबाई का चरित्र किसी आदर्शीकृत नायिका के साथ जीवंत, जटिल और निरंतर विकसित होते मानवीय उपस्थिति के रूप में सामने आता है। दो भागों और 12 अध्यायों में विन्यस्त यह उपन्यास ऐतिहासिक तथ्यों और रचनात्मक नाटकीयता का समन्वय है।

आइटीसी प्रमुख पुरी का पारितोषिक बीते वित्त वर्ष 6.8% घटा

नई दिल्ली: आइटीसी चेयरमैन संजीव पुरी का कुल पारितोषिक वित्त वर्ष 2025-26 में 6.8 प्रतिशत घटकर 23 .91 करोड़ रुपये रहा। प्रदर्शन आधारित बोनस और दीर्घकालीन प्रोत्साहन/ कमीशन में कमी के कारण वेतन में कमी आई। आईटीसी की सालाना रिपोर्ट में यह कहा गया। पुरी का कुल वेतन इससे एक साल पहले 2024-25 में 25.66 करोड़ रुपये था। सभी कर्मचारियों के औसत वेतन की तुलना में पुरी के वेतन का अनुपात 338 :1 था। (प्रेट्र)

भारत के 10 ट्रिलियन डालर की अर्थव्यवस्था बनने के अनुमान के साथ कोई भी वैश्विक कारपोरेट रणनीति अगर भारतीय बाजार की अनदेखी करती है, तो वह बड़ी वृद्धि दर्ज करने से चूक सकती है।
- राजन भारती मित्तल, वाइस चेयरमैन, भारती एंटरप्राइजेज

एक नजर में

उबर के पूर्व अधिकारी करेंगे ओपनएआइ का नेतृत्व

नई दिल्ली: भारत व दक्षिण एशिया में उबर की टैक्सी सेवा कारोबार का नेतृत्व करने के बाद प्रभजीत सिंह अब भारत में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) क्षेत्र की सबसे महत्वपूर्ण नेतृत्व भूमिकाओं में से एक संभालने जा रहे हैं। सैम आल्टमैन के नेतृत्व वाली ओपनएआइ ने शुक्रवार को प्रभजीत सिंह को भारत के लिए अपना प्रबंध निदेशक नियुक्त करने की घोषणा की। सिंह एशिया-प्रशांत क्षेत्र के प्रबंध निदेशक किरण मणि के अधीन काम करेंगे और सितंबर में कार्यभार संभालेंगे। (प्रेट्र)

अवधि पूरा होने पर पद छोड़ देंगे कोटक बैंक के एमडी

नई दिल्ली: कोटक महिंद्रा बैंक के एमडी व सीईओ अशोक वासवानी तीन साल का कार्यकाल पूरा होने पर पद छोड़ देंगे। बैंक ने कहा कि वासवानी 31 दिसंबर, 2026 को अपना मौजूदा कार्यकाल खत्म होने पर दोबारा नियुक्ति नहीं चाहते हैं। वासवानी ने दीपक गुप्ता की जगह ली थी। दीपक गुप्ता ने संस्थापक-निदेशक उदय कोटक के 1 सितंबर, 2023 से बैंक के प्रमुख का पद अचानक छोड़ने के बाद यह जिम्मेदारी संभाली थी। उदय कोटक की सेवानिवृत्ति 31 दिसंबर को तय थी, लेकिन उन्होंने चार महीने पहले ही पद छोड़ दिया। (प्रेट्र)

भारत का वृद्धि अनुमान 6.6 से 6.8% रहने का अनुमान

नई दिल्ली : वित्तीय सेवा कंपनी ईवाई ने कहा है कि वैश्विक ऊर्जा बाजारों में धीरे-धीरे सामान्य स्थिति बहाल होने और घरेलू अर्थव्यवस्था की मजबूत बुनियाद के साथ चालू वित्त वर्ष में भारत की वृद्धि दर 6.6 से 6.8 प्रतिशत रहने का अनुमान है। ईवी अपनी रिपोर्ट में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआइ) आधारित मुद्रास्फीति 4 .5 प्रतिशत, बाजार मूल्य पर जीडीपी वृद्धि 12 .5 प्रतिशत, केंद्र सरकार का राजकोषीय घाटा जीडीपी का 4 .4 प्रतिशत तथा चालू खाते का घाटा जीडीपी का 1.5 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया है। (प्रेट्र)

देश में तेजी से बढ़ रहा पुरानी कारों का बाजार

पुरानी कार खरीदने वालों में से 80-82 प्रतिशत लोग ऐसे हैं जो पहली बार वाहन मालिक बन रहे

नई दिल्ली, एएनआइ: भारत में पुरानी कार की खरीद का बाजार तेजी से बढ़ रहा है। पहली बार कार खरीदने वाले लोग, वित्तपोषण (फाइनेंस) की बढ़ती सुविधा और एसयूवी की मांग लोगों की पसंद को बदल रहे हैं। मोबिलिटी इंटेलिजेंस रिपोर्ट 2026 के अनुसार, पुरानी कार खरीदने वालों में से 80-82 प्रतिशत लोग ऐसे हैं जो पहली बार कार के मालिक बन रहे हैं। ।

रिपोर्ट में यह अनुमान लगाया गया है कि भारत का पुरानी कारों का बाजार नई कारों के बाजार से 1.39 गुना बड़ा है और सालाना 11-13 प्रतिशत की दर से बढ़ रहा है। आटो कार इंडिया और स्पिनी द्वारा तैयार की गई इस रिपोर्ट में बताया गया है, 'पिछले पांच सालों में पुरानी कारों के लिए फाइनेंसिंग की सुविधा 16 प्रतिशत से बढ़कर 32 प्रतिशत हो गई है।' साथ ही संगठित प्लेटफार्म पर होने वाले लगभग 60 प्रतिशत लेनदेन अब फाइनेंसिंग के जरिये हो रहे हैं। आसानी से लोन मिलने से खरीदारों को ज्यादा कीमत वाली गाड़ियां खरीदने में मदद मिल रही है। रिपोर्ट में मांग में आए बदलाव को भी जिक्र किया गया है। रिपोर्ट के अनुसार, अब मांग सिर्फ कम कीमत पर आधारित नहीं रह गई है। कई ग्राहक एंट्री लेवल नई गाड़ियां खरीदने के बजाय उसी बजट में बड़ी और बेहतर सुविधाओं वाली पुरानी गाड़ियों का चयन कर रहे हैं। शहरी बाजार में एसयूवी की मांग सबसे ज्यादा बनी हुई है जबकि आटोमैटिक गाड़ियों की हिस्सेदारी अब कुल लेनदेन का 37% है।

- फाइनेंस की बढ़ती सुविधा और एसयूवी की मांग लोगों की पसंद को बदल रही
- एंट्री लेवल की नई गाड़ियां खरीदने के बजाय बड़ी व बेहतर गाड़ियों का कर रहे चयन

ईवी की रीसेल एक बड़ी उभरती हुई चुनौती

रिपोर्ट में इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) की दोबारा बिक्री को एक बड़ी उभरती हुई चुनौती के तौर पर पेश किया गया है। कंपनियों ने कहा, पेट्रोल-डीजल वाहनों के उलट इलेक्ट्रिक वाहनों के मामले में अभी रीसेल के लिए कोई तय मानक नहीं हैं। इसकी बड़ी वजहों में तेजी से बदलती टेक्नोलाजी, बैटरी की सेहत को लेकर चिंताएं और ग्राहकों की बदलती उम्मीदें।

> भारत का पुरानी कारों का बाजार एक बड़े बदलाव के दौर से गुज़र रहा है। जो चीज पहले मुख्य रूप से सिर्फ मूल्य के आधार पर खरीदी जाती थी वह अब पहली बार कार खरीदने, बेहतर और महंगी कार की चाहत पूरी करने और समझदारी से वित्तीय फैसले लेने का एक जरिया बनती जा रही है।
> **-नीरज सिंह**, संस्थापक और सीईओ, स्पिनी

मारुति, हुंडई, किआ और महिंद्रा के वाहनों की रीसेल वैल्यू सबसे ज्यादा

रिपोर्ट में गाड़ियों की कीमत में आने वाली गिरावट का भी अध्ययन किया गया है। एक साल पुरानी गाड़ी की कीमत में औसतन 21 प्रतिशत, तीन साल पुरानी गाड़ी में 33 प्रतिशत और पांच साल पुरानी गाड़ी में 41 प्रतिशत की गिरावट आती है। यह दिखाता है कि कैसे कम कीमत होने के चलते ग्राहक ज्यादा प्रीमियम सेगमेंट की गाड़ियां खरीदने को तरजीह दे रहे हैं। रिपोर्ट के अनुसार, मारुति सुजुकी, हुंडई, किआ और महिंद्रा जैसे ब्रांड ने अपनी वैल्यू बनाए रखने में अच्छा प्रदर्शन किया है और मारुति बलेनो, हुंडई वेन्यू, किआ सेल्टोस और महिंद्रा एक्सयूवी 700 जैसे माडल सबसे आगे रहे।

आरबीआइ के नए नियमों को कुबूलनामे की तरह पढ़िए

पहले भी विभिन्न नियामक मिस-सेलिंग रोकने के लिए सख्त नियम ला चुके हैं, फिरभी यह चलन जारी है। इसलिए इस आरबीआइ के इस दस्तावेज को अपने लिए एक मार्गदर्शिका की तरह पढिए। हर नए नियम को किसी पुरानी गड़बड़ी का कबूलनामा मानिए। इससे अगली बार किसी रिलेशनशिप मैनेजर से मिलते समय आपको अंदाजा रहेगा कि किन बातों से सावधान रहना है।

धीरेंद्र कुमार, संपादक, हिंदी डाट वैल्यूरिसर्चआनलाइन डाट काम

बोनस

कोई नियामक किसी चीज पर रोक तभी लगाता है जब वह पहले से बड़े पैमाने पर हो रही हो। इस हफ्ते आरबीआइ ने बैंकों के लिए वित्तीय उत्पादों के विज्ञापन, मार्केटिंग और बिक्री के तरीकों को लेकर नए नियम जारी किए हैं। नियमों के साथ एक सूची भी दी गई है, जिसमें ग्राहकों को फंसाने के 11 तरीकों का जिक्र है। इन तरीकों को डार्क पैटर्न कहा जाता है। इन्हें ''डार्क'' इसलिए कहा जाता है, क्योंकि धोखा डिजाइन के अंदर ही छिपा होता है। नतीजा यह होता है कि ग्राहक के सामने सबसे आसान रास्ता वही दिखता है, जिससे बेचने वाले को फायदा हो।

हालांकि, आरबीआइ के दस्तावेजों में इन 11 तरीकों की सूची सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा नहीं है। असल दस्तावेज को दूसरी नजर से पढ़ने की जरूरत है। हर नियम इस बात का संकेत है कि जिस गड़बड़ी पर रोक लगाई जा रही है, वह पहले से हो रही थी। आरबीआइ ने बैंकों के कर्मचारियों के लिए यह नियम बनाया है कि वे जिन बाहरी कंपनियों के उत्पाद बेचते हैं, उनसे इंसेंटिव नहीं ले सकते। आरबीआइ ने एक उत्पाद के साथ दूसरा उत्पाद बेचने पर भी रोक लगाई है। यानी वह पालिसी, जिसे चुपचाप आपके लोन के साथ जोड़ दिया गया। आरबीआइ ने यह भी कहा है कि बैंक आपकी अनुमति के बिना, आपके नाम पर मंजूर किए गए लोन से कोई वित्तीय उत्पाद नहीं खरीद सकता। आरबीआइ के इन निर्देशों का साफ मतलब है कि अब तक यह जिम्मेदारी कोई निभा ही नहीं रहा था।

आरबीआइ ने गलत तरीके से बेचे गए उत्पादों के मामलों में ग्राहकों को पैसा वापस करने और मुआवजा देने की व्यवस्था भी बनाने को भी कहा है। इन सभी बातों को एक साथ रखकर देखिए तो पता चलता है कि जिस संस्था पर आपने अपनी बचत का भरोसा किया, वह कहीं न कहीं कमीशन के दम पर चलने वाली बिक्री की दुकान की तरह काम कर रही थी। मैं बीमा कारोबार के बारे में सालों से यही बात कहता आया हूं। आरबीआइ ने अब साफ कर दिया है कि बैंक भी इससे अलग नहीं हैं। हालांकि, इन नए नियमों को अंतिम समाधान मत समझिए। पहले भी विभिन्न नियामक मिस-सेलिंग रोकने के लिए सख्त नियम ला चुके हैं, फिर भी यह चलन जारी है। इसलिए इस दस्तावेज को अपने लिए एक मार्गदर्शिका की तरह पढ़िए, हर नए नियम को किसी पुरानी गड़बड़ी का कबूलनामा मानिए। इससे अगली बार किसी रिलेशनशिप मैनेजर से मिलते समय आपको अंदाजा रहेगा कि किन बातों से सावधान रहना है। गलत उत्पाद से बचने का सबसे भरोसेमंद तरीका वही है जो हमेशा से था। जिस चीज की आपने मांग नहीं की, उसे खरीदने की जल्दबाजी नहीं करें। बिना पूछे बेचे जा रहे हर उत्पाद को संदेह की नजर से देखें।

बिजनेस से जुड़ी खबरों और अपडेट के लिए स्कैन करें या विजिट करें jagran.com

क्रेडिट कार्ड से खर्च बढ़कर मई में 2.02 लाख करोड़

नई दिल्ली, आइएनएस: मई में देश में क्रेडिट कार्ड से खर्च बढ़कर 2.02 लाख करोड़ रुपये हो गया। यह पिछले साल की समान अवधि के मुकाबले 6.6 और पिछले महीने की तुलना में 2.6 प्रतिशत ज्यादा है। असित सी. मेहता इन्वेस्टमेंट इंटरमीडिएट्स लिमिटेड की रिपोर्ट में कहा गया है कि अप्रैल में महीने-दर-महीने 10.1 प्रतिशत की गिरावट के बाद खर्च में यह वृद्धि हुई है।

मई के दौरान 10 लाख नए कार्ड जारी किए गए है। यह पिछले 27 महीनों में दूसरी सबसे ज्यादा मासिक कार्ड जारी करने की संख्या है। कुल सक्रिय कार्ड की संख्या बढ़कर 12.05 करोड़ हो गई है। क्रेडिट कार्ड के माध्यम से लेनदेन की संख्या की बात करें तो मई में यह 58.7 करोड़ रही। यह अप्रैल के मुकाबले 5.7 प्रतिशत और सालाना आधार पर 25.8 प्रतिशत ज्यादा है। प्रति कार्ड औसत खर्च सालाना आधार पर 1.8 प्रतिशत कम रहा। एसबीआइ इसमें अपवाद रहा और उसका प्रति कार्ड खर्च सालाना आधार पर 12 प्रतिशत बढ़ा। इसका कारण कारपोरेट खर्च में वृद्धि थी। प्रति लेनदेन औसत खर्च महीने-दर-महीने तीन प्रतिशत कम रहा।

- 27 महीनों में दूसरी बार मई में सबसे ज्यादा नए क्रेडिट कार्ड जारी किए गए
- प्रति कार्ड औसत खर्च सालाना आधार पर 1.8 प्रतिशत कम हुआ

'मेड इन इंडिया' सिर्फ लेबल नहीं, राष्ट्रीय जिम्मेदारी : गोयल

नई दिल्ली, आइएएनएस: वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने शनिवार को कहा कि भारतीय उद्यमियों को यह ध्यान रखना चाहिए कि जब वे किसी उत्पाद पर 'मेड इन इंडिया' का लेबल लगाते हैं, तो वे देश का प्रतिनिधित्व कर रहे होते हैं। एक्स पर एक पोस्ट में गोयल ने कहा कि भारतीय उद्यमियों के लिए गुणवत्ता एक राष्ट्रीय जिम्मेदारी है। उन्होंने तमिलनाडु के रहने वाले और फ्लोरेंस शू कंपनी के संस्थापक अकील पनारुना का उदाहरण दिया, जिनसे वे लंदन में मिले।

मंत्री ने कहा, 'अकील जैसे उद्यमियों के लिए, गुणवत्ता सिर्फ एक कारपोरेट पैमाना नहीं है बल्कि एक राष्ट्रीय जिम्मेदारी है। उनके काम ने न केवल प्रतिष्ठित ब्रांडों के लिए भारतीय कारीगरी को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाई है, बल्कि बड़े पैमाने पर ग्रामीण रोजगार को भी बढ़ावा दिया है।'

व्यवसाय स्थानांतरण पर जीएसटी मामलों को नया क्षेत्राधिकार देखेगा

नई दिल्ली, प्रेट्र: केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड (सीबीआइसी) ने स्पष्ट किया है कि जब कोई पंजीकृत करदाता अपने व्यवसाय को मूल स्थान वाले कर क्षेत्राधिकार से दूसरी जगह स्थानांतरित करता है, तो नया क्षेत्राधिकार उस करदाता से जुड़े सभी लंबित मामलों की जिम्मेदारी संभालेगा और उनका निपटान करेगा। सीबीआइसी ने स्पष्ट किया कि केंद्रीय जीएसटी कानून के तहत जांच, आडिट, नोटिस या न्यायिक निर्णय जैसी कोई भी कार्रवाई, जो स्थानांतरण से पहले के क्षेत्राधिकार प्राधिकरण द्वारा शुरू की गई थी, वह करदाता के दूसरे क्षेत्र में जाने के बाद भी पूरी तरह वैध रहेगी।

सीबीआइसी ने एक सर्कुलर में कहा, 'स्थानांरण वाले क्षेत्र में प्राधिकारण ऐसी पूर्व में की गई वैध कार्रवाई को स्वीकार करेगा, उसे प्रभावी बनाएगा और उसी आधार पर आगे की कार्रवाई करेगा, मानो उसने स्वयं उसे शुरू किया हो।' बोर्ड ने बताया कि क्षेत्रीय कार्यालयों से ऐसे मामलों पर स्पष्टीकरण मांगा गया था, जिनमें करदाता के मूल कारोबार स्थान बदलने के बाद क्षेत्राधिकार में बदलाव हो जाता है। स्थानांतरण के बाद पूर्व क्षेत्राधिकार अधिकारी के संज्ञान में नया मुद्दा आता है, तो उसे आगे की कार्रवाई के लिए नए क्षेत्राधिकार अधिकारी को सूचित करना होगा। सीबीआईसी ने स्पष्ट किया कि यदि किसी कार्रवाई या कार्यवाही के लंबित रहने के दौरान करदाता दूसरे क्षेत्राधिकार में स्थानांतरित हो जाता है, तो नया क्षेत्राधिकार अधिकारी उसे देखेगा।

सीबीआइसी ने कहा-नया क्षेत्राधिकार उस करदाता से जुड़े सभी लंवित मामलों की जिम्मेदारी संभालेगा और निपटान करेगा

राष्ट्रीय फलक

सेमी-क्रायोजेनिक इंजन पावर हेड का सफल परीक्षण

इसरो की बड़ी कामयाबी

बेंगलुरु, एएनआइ : भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने अपने सेमी-क्रायोजेनिक इंजन पावर हेड का 88 प्रतिशत लक्ष्य क्षमता (थ्रस्ट) पर सफल 'हाट टेस्ट' करके एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। तमिलनाडु के महेंद्रगिरि स्थित इसरो प्रोपल्शन काम्प्लेक्स में किया गया यह परीक्षण नए प्रणोदन प्रणाली (प्रोपल्शन सिस्टम) के विकास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। यह इंजन 175 टन के थ्रस्ट स्तर पर पूरी तरह स्थिर रहा।

इसरो चेयरमैन वी. नारायणन ने कहा कि भारत ने उस क्रायोजेनिक इंजन तकनीक में महारत हासिल कर ली है, जो कभी उसे देने से इन्कार कर दी गई थी। बेंगलुरु में '17वें एयर चीफ मार्शल एल.एम. कत्रे मेमोरियल लेक्चर' के दौरान उन्होंने कहा कि भारत ने इस प्रतिबंध को तकनीकी नेतृत्व में बदल दिया है। आज देश के पास तीन क्रायोजेनिक प्रोपल्शन सिस्टम हैं और इस प्रक्रिया में कई विश्व रिर्ड भी बने हैं।

एलवीएम3 की बढ़ेगी ताकत, अगला लक्ष्य 200 टन थ्रस्ट : इसरो के अनुसार, इससे पहले 47 प्रतिशत और 60 प्रतिशत थ्रस्ट पर भी सफल परीक्षण किए जा चुके हैं। इस नवीनतम सफलता से विज्ञानियों को अब 200 टन के पूर्ण-थ्रस्ट पर अंतिम प्रदर्शन करने का पर्याप्त आत्मविश्वास मिलेगा। इस सेमी-क्रायोजेनिक प्रोपल्शन स्टेज को भारत के हेवी-लिफ्ट राकेट एलवीएम3 के मौजूदा एल110 कोर स्टेज को बदलने के लिए विकसित किया जा रहा है। दो हजार किलोन्यूटन क्षमता वाले एसई2000 इंजन से लैस होने के बाद, यह अपग्रेड राकेट की पेलोड ले जाने की क्षमता को काफी बढ़ा देगा। यह इंजन तरल आक्सीजन और केरोसिन-आधारित ईंधन का उपयोग करेगा, जिससे परिचालन दक्षता में सुधार होगा।

- तमिलनाडु के महेंद्रगिरि स्थित इसरो प्रोपल्शन काम्प्लेक्स में यह परीक्षण किया गया
- नए प्रणोदन प्रणाली (प्रोपल्शन सिस्टम) के विकास में यह महत्वपूर्ण मील का पत्थर

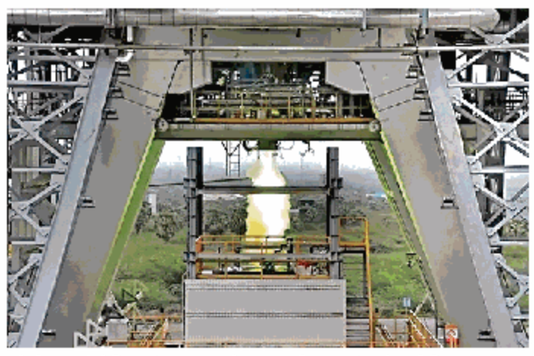

सेमी-क्रायोजेनिक इंजन पावर हेड का परीक्षण। इंटरनेट मीडिया

2040 तक चंद्रमा पर कदम रखने की तैयारी

प्रेट्र के अनुसार, इसरो चेयरमैन वी. नारायणन ने कहा कि यह परीक्षण थ्रस्ट चैंबर को छोड़कर किया गया था। विज्ञानी पूरे इंजन के परीक्षण के लिए तैयार हैं। गगनयान मिशन पर बात करते हुए स्पष्ट किया कि यह अत्यधिक तकनीक-प्रधान मिशन है। इंसानों को अंतरिक्ष में भेजने से पहले वाहन की सुरक्षा जांचने के लिए तीन मानव रहित मिशन अंतरिक्ष में भेजे जाएंगे, जिसमें से पहले मिशन की तारीखों का एलान जल्द होगा। उन्होंने कहा कि भारत चंद्रमा से नमूने वापस लाने के लिए चंद्रयान-4 और जापान के साथ भारी रोवर वाले दीर्घकालिक चंद्रयान-5 मिशन पर काम आगे बढ़ रहा है। इसरो का लक्ष्य साल 2035 तक भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन स्थापित करना और साल 2040 तक चंद्रमा पर भारतीय अंतरिक्ष यात्री को उतारना है।

पुनर्मूल्यांकन के बाद पूर्वी भारत के टापरों में शामिल हुई कटक की सौमिली मोइत्रा

जागरण संवाददाता, भुवनेश्वर

सीबीएसई 12वीं बोर्ड की उत्तर पुस्तिकाओं के पुनर्मूल्यांकन के बाद साई इंटरनेशनल रेजिडेंशियल स्कूल (एसआइआरएस), कटक की छात्रा सौमिली मोइत्रा ने बड़ी उपलब्धि हासिल की है। वह 99.2 प्रतिशत अंक हासिल कर पूर्वी भारत में टापरों में शामिल हो गई है। आर्ट्स संकाय की छात्रा सौमिली को पहले 98.6 प्रतिशत अंक प्राप्त हुए थे। वह मूल रूप से कोलकाता की रहने वाली है। अंक बढ़ने के बाद वह ओडिशा, बंगाल और छत्तीसगढ़ क्षेत्र की क्षेत्रीय टापर बन गई।

सौमिली ने अपनी सफलता का श्रेय माता-पिता, शिक्षकों और विद्यालय के सहयोगी माहौल को दिया। उसने कहा कि विद्यालय के शिक्षकों के मार्गदर्शन और आवासीय वातावरण ने उसे पढ़ाई के दौरान आत्मविश्वास और एकाग्रता बनाए रखने में मदद की। उसकी उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए साई इंटरनेशनल एजुकेशन ग्रुप की चेयरपर्सन डा. शिल्पी साहू ने कहा कि सौमिली की सफलता पूरे साई परिवार के लिए गर्व का विषय है। उनकी लगन, अनुशासन और सीखने की जिज्ञासा ने उसे यह मुकाम दिलाया है।

सौमिली मोइत्रा (फाइल फोटो)

बिहार में अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशी दंपती गिरफ्तार

जासं, बांका : बिहार के बांका जिले में राधा-कृष्ण मंदिर ठाकुरबाड़ी में तीन दिनों से रह रहे एक बांग्लादेशी दंपती को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। इनके साथ दो बच्चे भी थे, जिन्हें बाल सुधार गृह भेज दिया है। मंदिर के संचालक विजय राय ने पुलिस को दंपती के बारे में सूचना दी थी। पुलिस की पूछताछ में पुरुष ने अपना नाम मिल्टन हल्दर, निवासी- बरिशाल और महिला ने अपना नाम झुमारानी दास, निवासी- मुन्सिगंज (ढाका), बांग्लादेश बताया है। दोनों ने स्वीकार किया कि उनके पास भारत में प्रवेश और यहां रहने के लिए कोई वैध वीजा या अन्य दस्तावेज नहीं हैं।

बताया कि बांग्लादेश में हिंदू समुदाय पर अत्याचार और परिवार के अन्य सदस्यों के लापता होने के बाद उन्होंने बच्चों के साथ करीब ढाई माह पहले एक दलाल को 20 हजार रुपये देकर अवैध रूप से भारत में प्रवेश किया।

बिहार में ताजिया जुलूस के बाद कई घरों व धार्मिक स्थल में तोड़फोड़

बाद जागरण टीम, पटना

मुहर्रम के ताजिया जुलूस एवं पहलाम (विसर्जन) के बाद शनिवार की सुबह बिहार में दरभंगा जिले के बरिऔल चौक पर उपद्रवियों ने कई घरों, दुकानों एवं धार्मिक स्थल परिसर में तोड़फोड़ की। मारपीट में सात लोग घायल हो गए, जिनका उपचार सीएचसी में कराया गया। अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी शुभेंद्र कुमार सुमन ने बताया कि प्रारंभिक जांच में करीब पांच वर्ष पूर्व हुए एक अंतर धार्मिक प्रेम विवाह से जुड़े विवाद का पहलू सामने आया है। मामले में अब तक छह आरोपितों को गिरफ्तार किया गया है। अन्य की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी जारी है।

बरिऔल के राजकुमार एवं उनकी पत्नी सुनीता देवी ने बताया कि उनके पुत्र राजा ने पांच वर्ष पहले अंतर धार्मिक प्रेम विवाह किया था। पांच साल तक इस शादी को लेकर किसी ने आपत्ति नहीं की। इस बार घर में घुसकर मारपीट की गई। उनके मोबाइल, कुर्सी को तोड़ दिया गया। एस्बेस्टस की छत को उजाड़ दिया गया। दुकानों को नुकसान पहुंचाया गया है। लखीसराय शहर के पुरानी बाजार स्थित बड़ी दरगाह कर्बला में ताजिया पहलाम के दौरान इंगलिश अखाड़ा और बड़ी दरगाह अखाड़ा के बीच मामूली कहासुनी हिंसक झड़प में बदल गई। युवक लाठी-डंडे और पारंपरिक हथियार लेकर एक-दूसरे पर टूट पड़े। इसमें दो लोगों का सिर फट गया, आधा दर्जन से अधिक लोग घायल हो गए। खगड़िया जिले के अलौली स्थित रौन गांव में एक ही समुदाय के दो पक्षों में मारपीट हो गई। पुरानी रंजिश और पूर्व में दर्ज केस खत्म करने के दबाव को लेकर हुए विवाद में तीन लोग जख्मी हो गए। अररिया जिले के पलासी में ताजिया जुलूस के दौरान उपद्रवियों की भीड़ ने थाना मोड़ पर लगी बैरिकेडिंग तोड़ दी और थाने के अंदर प्रवेश कर गए। थाने से वापस कर्बला जाते समय उन्होंने जमकर उत्पात मचाया।

दरभंगा में सात घायल, एसडीपीओ बोले-इसमें अंतर धार्मिक प्रेम विवाह से जुड़े विवाद का पहलू आया सामने

इकलौते भाई को बचाने के प्रयास में गंगा में डूब गईं दो बहनें

जागरण संवाददाता, कासगंज : निर्जला एकादशी पर गंगा में स्नान कर रहे इकलौते छोटे भाई को डूबता देख दो बहनों ने छलांग लगा दी। उन्होंने धारा को चीरते हुए भाई क तो निकाल लिया, लेकिन खुद नहीं बच पाईं।

मुजफ्फरनगर निवासी इंद्रपाल कश्यप के तीन बच्चे 16 वर्षीय सलोनी, 14 वर्षीय कोमल और 12 वर्षीय शिवनेश गुरुवार सुबह ग्रामीणों के साथ गंगा स्नान के लिए आए थे। स्नान के दौरान शिवनेश गहरे पानी में चला गया और डूबने लगा। भाई को संकट में देख दोनों बहनें उसे बचाने के लिए तुरंत पानी में कूद पड़ीं। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, दोनों बहनों ने शिवनेश को गहरे पानी से निकालकर कम पानी वाले हिस्से तक पहुंचा दिया। मगर, इस प्रयास में सलोनी और कोमल स्वयं गहरे पानी में फंस गईं। काफी प्रयास के बावजूद वे बाहर नहीं निकल सकीं और डूब गईं। स्थानीय गोताखोरों ने लगभग एक घंटे बाद कोमल को पानी से बाहर निकाल लिया, लेकिन सलोनी का पता नहीं चला।

साप्ताहिक राशिफल

रविवार, 28 जून, 2026 से शनिवार 4 जुलाई, 2026 तक

पं. बी. बी. शास्त्री 'देवेश'

मेष (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, आ)
सकारात्मक सोच से युक्तहों, कार्य शैली में सुधार करें, विदेश कार्य में प्रयास सार्थक, लक्ष्य के प्रति सजगता, साधनों की पूर्ति, अध्ययन में रुचि, मित्रों से सहयोग, क्रोध, ईर्ष्या पर नियंत्रण, दांपत्य में सुख, धर्म में रुचि, स्थान पर परिवर्तन योग, आय में सुधार, शुभ अंक 4

वृष (इ, ऊ, ए, ओ, पा, वी, वू, वे, वो)
कार्य में लक्ष्य के प्रति सजगता, अर्थ साधन में प्रयास, धन के आवागमन में सावधानी, पारिजनों का ध्यान रखे, संतान से अनबन, चयन में देरी, शत्रुपक्ष प्रभावी, वाद विवाद से बचें, प्रणय में सुख, अधिकारी से सहयोग, राजनैतिक अपयश, आय में सुधार, शुभ अंक 5

मिथुन (का, की, कू, घ, ड, छ, के, को, हा)
कार्य क्षेत्र तथा परिवार में सामंजस्य रखें, अर्थ साधन में प्रयास, साहस की वृद्धि, निर्णय सलाह से करें निजी संबंधों में सुधार, समस्या का समाधान, वाहन साजसज्जा का योग, चयन में देरी, स्वास्थ्य के प्रति चिंता, मित्रों से सहयोग, पदस्थान परिवर्तन योग, शुभ अंक 6

कर्क (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)
प्रतिस्पर्धा से तनाव, विचारों की अधिकता रहेगी, अर्थ साधन में प्रयास, कार्य करने वालों से सावधान, निजी मतभेद, भवन साजसज्जा योग, शिक्षा में अवरोध, वायु, रक्त विकार प्रभावी, रक्षा साधन कार्य में सफलता, भ्रमण, मनोरंजन योग, आय में सुधार, शुभ अंक 7

सिंह (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)
दिनचर्या व्यस्ततम्, धनागम में प्रयास, युक्ति तथा परिस्थिति के अनुरुप ही कार्य करे, विचारों में मौलिकता, पारिवारिक सहयोग, साधनों की पूर्ति, संतान से सहयोग, चयन में देरी, खानपान पर ध्यान दें, राजनैतिक अपयश, स्थान पद परिवर्तन, व्यय अधिक, शुभ अंक 8

कन्या (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)
कार्य क्षेत्र में सफलता, प्रतिस्पर्धा से तनाव, साझेदारी में सावधानी, विदेश से समाचार, पारिवारिक सहयोग, मानसिक चिंता, शत्रुपक्ष से सावधान, क्रोध, ईर्ष्या से बचें, ससुराल से सहयोग, अनुबंध की प्राप्ति, राजनैतिक अपयश, आय में सुधार, शुभ अंक 9

तुला (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते)
कार्य क्षेत्र में विस्तार, जीवन में शांति एवं प्रसन्नता, पूंजी निवेश में सावधानी, स्वजन से सहयोग, समाज में यश, भूमि कार्य में अवरोध, अध्ययन में रुचि, चयन में सफलता, वायु विकार, रक्त विकार के योग, दांपत्य में सुख, स्थान पद परिवर्तन, राजनैतिक अपयश, शुभ अंक 1

वृश्चिक (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)
नकारात्मक विचारों से बचें, निर्णय सलाह से करें, लक्ष्य प्राप्ति के लिये सजगता, निजी मतभेद दूर करें, युक्ति एवं अनुभव का सहारा लें, क्रोध, ईर्ष्या से बचे, वाद में विजय, शिक्षा में रुचि, मित्रों से सावधान, जीवनसाथी का मिलन, राज्यपक्ष से सावधान व्यय अधिक, शुभ अंक 2

धनु (ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे)
सकारात्मक शैली के साथ कार्य करे, अर्थसाधन में सुधार, पारिवारिक कार्य में योगदान दे, चिंता का समाधान, निजी संबंधों में सुधार, पारिवारिक कार्य में योगदान दें, निजी संबंधों में सुधार, वाहन साजसज्जा का योग, शिक्षा में रुचि, प्रणय में सुख, व्यय अधिक, शुभ अंक 4

मकर (भो, जा, ज, खी, खू, खे, खो, गा, गी)
साझेदारी में सावधानी, धनागम में प्रयास, नकारात्मक विचारों से बचें, दिनचर्या व्यस्ततम्, साधनों की पूर्ति, माता-पिता का ध्यान रखें, शिक्षा में व्यवधान, मित्रों से लाभ, यात्रा में सावधानी, एकाएक कार्य में सफलता, धर्म में रुचि, आय में सुधार, व्यय पर नियंत्रण, शुभ अंक 5

कुम्भ (गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सा, दा)
धन के आवागमन में सावधानी बरतें, अर्थ साधन के क्षेत्र में प्रयास से सफलता, पूंजी निवेश में सावधानी, अतिकल्पना से बचें, महिला से सहयोग, शत्रुपक्ष प्रभावी, धर्म में रुचि, यात्रा में सावधानी, राजनैतिक अपयश, व्यय पर नियंत्रण रखें, शुभ अंक 6

मीन (दी, दू, थ, झ, दे, दो, चा, ची)
प्रतिस्पर्धा से चिंता, धनागम में प्रयास, सामाजिक यश, निजी संबंधों में सुधार, सकारात्मक विचार में रहें, निजी संबंधों में सुधार, वाहन, आभूषण योग प्रभावी, साधनों की पूर्ति, चयन में सफलता, रक्त और त्वचा विकार योग, प्रणय में सुख, शुभ अंक 7

‘एशियाटिक सोसायटीला विशेष अनुदान द्या’

लोकसत्ता विशेष प्रतिनिधी

मुंबई : ‘द एशियाटिक सोसायटी ऑफ मुंबई’च्या आगामी निवडणुकीतील ‘एशियाटिक टुमारो’ पॅनलचे नेतृत्व करणारे डॉ. विनय सहस्त्रबुद्धे यांनी नवी दिल्ली येथे केंद्रीय सांस्कृतिक आणि पर्यटन मंत्री गजेंद्रसिंह शेखावत यांची भेट घेतली. या भेटीदरम्यान त्यांनी एशियाटिक सोसायटीच्या आर्थिक सक्षमीकरणासंदर्भात केंद्रीय मंत्र्यांना निवेदन केले.

एशियाटिक सोसायटीला सद्यस्थितीत तीव्र आर्थिक टंचाईचा सामना करावा लागत आहे. आर्थिक संकटावर मात करण्यासाठी आणि संस्थेची एकूणच आर्थिक स्थिती भक्कम करण्यासाठी केंद्र सरकारकडून विशेष अनुदान मिळावे, अशी आग्रही मागणी डॉ. सहस्त्रबुद्धे यांनी निवेदनाद्वारे केली आहे.

एशियाटिक सोसायटी ऑफ मुंबई ही देशातील एक ऐतिहासिक आणि अत्यंत महत्त्वाची संशोधन संस्था असल्याने, तिच्या दृढीकरणासाठी केंद्र सरकार कटिबद्ध असल्याचे केंद्रीय मंत्री गजेंद्रसिंह शेखावत यावेळी म्हणाले. या मागणीला केंद्रीय मंत्री गजेंद्रसिंह शेखावत यांनी सकारात्मक प्रतिसाद दिला असून, संस्थेला आवश्यक ते सर्व सहकार्य आणि सहानुभूतीपूर्वक मदत करण्याचे आश्वासन त्यांनी दिले.

दिवसा धावणाऱ्या लांब पल्ल्याच्या फेऱ्या तोट्यात

एसटी आर्थिक संकटात, उत्पन्न वाढीसाठी उपाययोजनांची गरज

सुरेखा चोपडे, लोकसत्ता

मुंबई : एसटीचा सर्वाधिक प्रवासी वर्ग हा पहिल्या ५० किलोमीटरच्या परिघात प्रवास करणारा असताना, ग्रामीण भागातील आणि शटल सेवांना बळकटी देण्याऐवजी दिवसा लांब पल्ल्याच्या फेऱ्या वाढविण्यावर भर दिला जात आहे. हा निर्णय महामंडळाच्या हिताचा नसून तोट्याला आमंत्रण देणारा ठरत आहे. त्यामुळे किलोमीटर नव्हे तर उत्पन्न वाढविण्यासाठी दिवसांच्या लांब पल्याच्या सेवा कमी करण्याची आवश्यकता आहे.

राज्याची जीवनवाहिनी असलेल्या एसटी महामंडळाच्या ताफ्यात नवीन ३ हजार ६०० गाड्यांची भर पडली. भाडेवाढ केली तरी महामंडळाचे उत्पन्न काही वाढलेले नाही. फेब्रुवारी २०२५ मध्ये ९०५ कोटी उत्पन्न होते. २५ टक्के भाडेवाढ गृहित धरून मे २०२६ मध्ये ११३१ कोटी रुपये उत्पन्न अपेक्षित आहे. परंतु, प्रत्यक्षात एसटीला केवळ १०४१ कोटी रुपयांचे उत्पन्न मिळाले आहे. एसटीच्या आर्थिक अडचणींना केवळ उत्पन्नातील घट जबाबदार नसून, नियोजनशून्य वाहतूक कारणीभूत ठरत आहे. केवळ किलोमीटर वाढल्याचे आकडे दाखवण्यासाठी दिवसभर लांब पल्ल्याच्या बस चालविण्यात येत आहेत. मात्र या फेऱ्यांमधून बहुतांश वेळा एकेरीच उत्पन्न मिळते.

आठवड्यातील केवळ चार दिवस म्हणजेच शुक्रवार, शनिवार, रविवार, सोमवारी या फेऱ्यांना समाधानकारक प्रवासी मिळतात. उर्वरित दिवस अत्यल्प प्रवासी असूनही फेऱ्या चालविण्यात येतात. परिणामी इंधन, मनुष्यबळ आणि देखभाल खर्च वाढून एसटीला मोठा आर्थिक फटका बसत आहे. लांब पल्याच्या फेऱ्यांऐवजी शटल आणि ग्रामीण भागातील एसटीच्या वाहतुकीला एका दिवसात दुहेरी उत्पन्न मिळते. अल्प अंतराच्या प्रवासासाठी सातत्याने प्रवासी उपलब्ध असल्याने अशा सेवांमधून महसूल वाढण्याची मोठी संधी आहे. तरीही या सेवांकडे सातत्याने दुर्लक्ष होत असल्याने ग्रामीण प्रवाशांची गैरसोय वाढत असून महामंडळालाही आर्थिक तोटा सहन करावा लागत आहे.

वाहतूक तज्ज्ञांचे मत

एसटीने केवळ कापलेले किलोमीटर मोजण्याऐवजी प्रति किलोमीटर उत्पन्न, प्रवासी भारमान आणि मार्गनिहाय नफा-तोटा या निकषांवर वाहतूक नियोजन केले पाहिजे. तोट्यातील लांब पल्ल्याच्या फेऱ्यांचा वस्तुनिष्ठ आढावा घेऊन त्यांचे पुनर्नियोजन करणे, ग्रामीण व शटल सेवांचे जाळे अधिक सक्षम करणे ही काळाची गरज आहे. आकड्यांचा खेळ थांबवून उत्पन्न वाढविणाऱ्या फेऱ्यांना प्राधान्य दिले, तरच एसटीची आर्थिक घडी पुन्हा बसू शकेल. अन्यथा किलोमीटर वाढत राहतील, पण तोट्याचा आकडा वेगाने वाढत राहील, असे तज्ज्ञांचे मत आहे.

५५ लाख प्रवाशांचा प्रवास

एसटीने राज्यात दररोज सुमारे ५५ लाख प्रवासी प्रवास करतात. यात महिलांची आणि ज्येष्ठ नागरिकांची संख्या अंदाजे २५ ते २६ लाख आहे. एसटीच्या ताफ्यात २६०० लालपरी, ७०० ई-शिवाई आणि ३०० जिजाऊ बस नव्याने दाखल झाल्या आहेत.

वैद्यकीय महाविद्यालयांमधील गैरप्रकाराला आळा

‘एनसीआयएसएम’कडून मोहीम, अध्यापकांकडून गोपनीय माहिती संकलित करण्याचा निर्णय

लोकसत्ता प्रतिनिधी

मुंबई : आयुर्वेद, युनानी आणि सिद्ध या वैद्यकीय शिक्षण संस्थांमधील अध्यापन व प्रशिक्षणाच्या गुणवत्तेबाबत वारंवार प्रश्न उपस्थित केले जात आहेत. मात्र, या संस्थांमधील गैरप्रकार उघडकीस येत नाहीत. त्यामुळे आता राष्ट्रीय भारतीय चिकित्सा प्रणाली आयोगाच्या (एनसीआयएसएम) वैद्यकीय मूल्यांकन आणि मानांकन मंडळाने (एमएआरबी) विशेष मोहीम हाती घेतली आहे. त्यानुसार या संस्थांमधील अध्यापकांकडून गोपनीय माहिती संकलित करण्याचा निर्णय घेण्यात आला आहे.

उच्च शिक्षणाबरोबर रुग्णालयीन अनुभव आणि प्रत्यक्ष रुग्णसेवेचा संपर्क विद्यार्थ्यांचा आत्मविश्वास वाढविण्यासाठी अत्यंत महत्त्वाचा असतो. मात्र, अनेक शैक्षणिक संस्थांमध्ये विद्यार्थ्यांना अपेक्षित प्रमाणात प्रत्यक्ष चिकित्सा आणि प्रात्यक्षिक प्रशिक्षण मिळत नसल्याचे निदर्शनास आले आहे. त्यामुळे संस्थांमधील या गैरप्रकाराला आळा घालण्यासाठी मंडळाने अध्यापकांच्या माध्यमातून गोपनीय माहिती संकलित करण्याचे ठरवले आहे. केवळ कागदोपत्री अस्तित्वात असलेले अध्यापक, मान्यता मिळविण्यासाठी तयार करण्यात येणाऱ्या बनावट रुग्ण नोंदी, प्रत्यक्ष रुग्णांची कमतरता असूनही दाखविण्यात येणारी खोटी माहिती तसेच नियमित शैक्षणिक सत्रे न घेणे, अशा प्रकारच्या बाबींची माहिती थेट मंडळापर्यंत पोहोचविण्यासाठी शिक्षकांची मदत घेण्यात येणार आहे. प्रामाणिकपणे आणि समर्पित भावनेने काम करणाऱ्या अध्यापकांच्या कार्यावर अशा गैरप्रकारांचा विपरीत परिणाम होत असतो. वैद्यकीय शिक्षणाची गुणवत्ता घसरत आहे. त्यामुळे शिक्षण क्षेत्रातील पारदर्शकता वाढविण्यासाठी शिक्षकांचे सहकार्य अत्यावश्यक असल्याचे मंडळाने म्हटले आहे.

आयुर्वेद, युनानी, सिद्ध आणि सोवा-रिग्पा या भारतीय पारंपरिक वैद्यकीय पद्धतींना जागतिक स्तरावर अधिक प्रतिष्ठा मिळवून देण्यासाठी शैक्षणिक गुणवत्ता आणि नैतिकतेची जपणूक आवश्यक असल्याचे मंडळाने अधोरेखित केले आहे. त्यामुळे सर्व अध्यापकांनी या मोहिमेला सकारात्मक प्रतिसाद देऊन सहकार्य करावे, असे आवाहन पत्राद्वारे करण्यात आले आहे. शिक्षकांची माहिती गोपनीय ठेवण्यात येणार माहिती देण्यासाठी शिक्षकांनी केवळ आपला प्रमाणित ‘टीचर कोड’ नमूद करावा लागणार आहे. शिक्षकांची माहिती गोपनीय ठेवण्यात येईल, अशी हमी मंडळाने दिली आहे. माहितीचा वापर संशयित ‘ऑन-पेपर’ शिक्षकांची यादी तयार करण्यासाठी करण्यात येणार असल्याचेही मंडळाने स्पष्ट केले आहे. वैद्यकीय शिक्षण क्षेत्रातील सुधारणा घडवून आणण्यासाठी योगदान देणाऱ्या अध्यापकांच्या कार्याची योग्य दखल घेतली जाईल, असेही मंडळाने नमूद केले आहे.

पनवेलमध्ये जीबीएसचे दोन रुग्ण आढळले

महापालिका सतर्क, जनजागृतीवर भर

लोकसत्ता प्रतिनिधी

पनवेल : पनवेल परिसरात गिलेन-बॅरी सिंड्रोम (जीबीएस) या दुर्मिळ ऑटोइम्यून आजाराचे दोन रुग्ण उपचार घेत असल्याचे आढळल्याने पनवेल महापालिकेची आरोग्य यंत्रणा सतर्क झाली आहे. दोन्ही रुग्णांचा प्रवासाचा इतिहास असून ते पनवेल महापालिका हद्दीबाहेरील मूळ रहिवासी आहेत. एक तरुण उपचारानंतर घरी परतला असून ७१ वर्षीय महिलेवर नवीन पनवेलमधील खासगी रुग्णालयात उपचार सुरू आहेत. संभाव्य धोका लक्षात घेऊन पनवेल महापालिकेने प्रतिबंधात्मक उपाययोजनेसाठी जनजागृती सुरू केली आहे.

पहिला तरुण रुग्ण हा चौक येथील रहिवासी असून तो एप्रिल महिन्यात जर्मनीहून सुट्टीसाठी विचुंबे येथे आला होता. त्यानंतर तो चौकजवळील वावंडळ गावात वास्तव्यास असताना त्याला अशक्तपणा जाणवू लागला. उभे राहणे, चालणे, गिळताना त्रास होणे तसेच दोन्ही पायांमध्ये कमजोरी अशी लक्षणे दिसू लागल्यानंतर ६ जून रोजी त्याला नवीन पनवेल येथील खासगी रुग्णालयात दाखल करण्यात आले. उपचारानंतर १५ जून रोजी त्याला रुग्णालयातून घरी सोडण्यात आले.

दुसरा रुग्ण या ७१ वर्षांच्या असून त्या मूळच्या कोकणातील रहिवासी आहेत. २६ मे रोजी पनवेल येथील तक्का येथील त्यांच्या नातेवाईकांकडे त्या आल्या. त्यानंतर त्या ३१ मे रोजी चारधाम यात्रेला गेल्या. १२ जून रोजी परतल्यानंतर १४ जूनपासून त्यांना ताप व अशक्तपणा जाणवू लागला. सुरुवातीला स्थानिक डॉक्टरांकडे उपचार घेतल्यानंतर २४ जून रोजी हात-पाय सुन्न होऊ लागल्याने त्यांच्यावर नवीन पनवेल येथील खासगी रुग्णालयात उपचार सुरू केले.

डेंग्यू, चिकुनगुनिया किंवा करोनासारख्या संसर्गजन्य आजारांनंतर काही रुग्णांमध्ये गिलेन-बॅरी सिंड्रोम उद्भवू शकतो. या आजारात वैयक्तिक स्वच्छतेची काळजी घेणे आवश्यक आहे. नागरिकांनी हात वारंवार स्वच्छ धुवावेत, उकळून व गाळून पाणी प्यावे, शिजवलेले व ताजेच अन्न खावे तसेच उघड्यावर विक्रीस असलेले अन्न टाळावे.
- डॉ. आनंद गोसावी, वैद्यकीय अधिकारी

शहापूरमध्ये स्वतंत्र प्रांत कार्यालय

लोकसत्ता वार्ताहर

शहापूर : महसूल प्रशासन अधिक गतिमान व लोकाभिमुख करण्याच्या उद्देशाने राज्य शासनाने शहापूर येथे स्वतंत्र उपविभागीय अधिकारी (प्रांत) कार्यालय आणि कल्याण येथे अप्पर जिल्हाधिकारी कार्यालय स्थापन करण्याचा महत्त्वपूर्ण निर्णय घेतला आहे. या प्रस्तावाबाबत ठाणे जिल्हाधिकारी कार्यालयाने सार्वजनिक सूचना प्रसिद्ध करून नागरिकांकडून हरकती व सूचना मागवल्या आहेत.

शहापूर तालुका भौगोलिकदृष्ट्या विस्तीर्ण, दुर्गम आणि आदिवासीबहुल असल्याने नागरिकांना महसुली कामांसाठी मोठ्या अंतराचा प्रवास करावा लागतो. स्वतंत्र प्रांत कार्यालय सुरू झाल्यास जमीनविषयक प्रकरणे, शासकीय योजना, विविध दाखले व प्रमाणपत्रांचे वितरण तसेच तक्रार निवारण अधिक जलद आणि सुलभ होणार असल्याचे प्रशासनाचे मत आहे.

मोहरम मिरवणुकीत विषारी गोळ्यांचे वाटप; एकाला अटक

लोकसत्ता प्रतिनिधी

मुंबई : वेदनाशामक गोळी असल्याची बतावणी करत गुरुवारी भायखळा परिसरात चौघांनी अनेकांना विषारी कॅप्सूल दिल्याचा प्रकार घडला. पोलिसांच्या सतर्कतेमुळे आरोपींचा हा डाव उधळण्यात आला असून या प्रकरणी फयाज प्रेमजी (३९) याला अटक केली आहे.

गुरुवारी सायंकाळी भायखळा परिसरात अनेक ठिकाणी मोठ्या प्रमाणात मिरवणुका काढण्यात आल्या. या मिरवणुकीमध्ये कामा (डोक्यावर मारून घेणे) ही प्रथा आहे. त्यानंतर अनेकांना डोकेदुखी अथवा इतर वेदना होत असतात. भायखळा येथील रहमताबाग कब्रस्तान परिसरात अशाच प्रकारे कामा करून आलेल्या नागरिकांना वेदना घालवण्यासाठी तीन ते चार जण वेदनाशामक कॅप्सूलचे वाटप करत होते. एका महिलेला देखील या आरोपींनी ही गोळी दिली होती. ही महिला तिच्या मुलाला ही गोळी देत असताना सलमान सय्यद (२६) या तरुणाने देखील तिच्याकडून एक गोळी घेतली.

ही गोळी खाताच त्याला काही वेळातच उलटी आणि अस्वस्थ वाटू लागले. त्याने ही बाब इतरांना सांगितल्यानंतर काही नागरिकांनी ही बाब पोलिसांना सांगितली. त्यानुसार याठिकाणी कर्तव्यावर असलेल्या पोलिसांनी तत्काळ आरोपींचा शोध सुरू करत फयाज प्रेमजी याला ताब्यात घेतले. यावेळी या आरोपीकडे पोलिसांना १४ हजार ९०० कॅप्सूल आढळल्या. आरोपीचे तीन साथीदार गर्दीचा फायदा घेत फरार झाले असून पोलीस त्यांचा शोध घेत आहेत.

अटक करण्यात आलेला आरोपी मूळचा पुणे येथील राहणारा असून त्याचा रंग विक्रीचा व्यवसाय आहे. तपासात त्याच्याकडे मिळून आलेल्या कॅप्सूल या विषारी असल्याचे समोर आले आहे. मात्र त्याचा या गोळ्या वाटण्याचा उद्देश मात्र अद्याप तरी समोर आलेला नाही.

सहा विमानतळांवर एकात्मिक विमानतळ शहरे

मुंबई, नवी मुंबई विमानतळ आघाडीवर

लोकसत्ता प्रतिनिधी

मुंबई : अदानी एअरपोर्ट सिटी लिमिटेड मुंबई आणि नवी मुंबईसह पाच राज्यांमधील सहा विमानतळांवर एकात्मिक विमानतळ शहरे विकसित करणार आहे. त्याचाच भाग म्हणून पहिल्या टप्प्यात २० हजार कोटी रुपयांपेक्षा जास्त गुंतवणूक केली जाणार आहे. यात ६५५ एकर परिसरात पसरलेल्या या प्रकल्पांमध्ये हॉटेल्स, कार्यालये, दुकाने, मनोरंजन आणि संमेलन स्थळांचा समावेश असून यापैकी जवळपास ७० टक्के गुंतवणूक मुंबई क्षेत्रावर केंद्रित असेल. मुंबई आणि नवी मुंबईतील ४४० एकर जागेचा यात समावेश आहे.

अदानी एअरपोर्ट होल्डिंग्ज लिमिटेड आपली पूर्ण मालकीची उपकंपनी एएसीएलमार्फत, मुंबई, नवी मुंबई, अहमदाबाद, लखनऊ, जयपूर आणि गुवाहाटी येथे सुमारे २२ दशलक्ष चौरस फूट क्षेत्र विकसित करणार आहे. प्रकल्प एकात्मिक, पायी फिरण्यायोग्य शहरी जिल्हे म्हणून डिझाइन केले आहेत. त्यामुळे प्रवासी, व्यावसायिक आणि स्थानिक समुदाय विमानतळ, मेट्रो आणि शहर वाहतूक पायाभूत सुविधांसह हॉटेल्स, कार्यालये, किरकोळ विक्री, भोजन, मनोरंजनाचा लाभ घेऊ शकतात. हा प्रकल्प सिंगापूरचे चांगी, दुबई आंतरराष्ट्रीय, ॲमस्टरडॅमचे शिफोल आणि सोलचे इंचिऑन यांसारख्या विमानतळ जिल्ह्यांपासून प्रेरित आहे.

जगभरात, सर्वात यशस्वी विमानतळ जिल्हे हे व्यापार, पर्यटन आणि शहरी विकासाची केंद्रे झाली आहेत. भारताची विमान वाहतूक बाजारपेठ विस्तारत असताना, विमानतळांना विमान वाहतुकीच्या पलीकडे जाऊन मूल्य निर्माण करण्याची संधी आहे.

हॉटेल व्यवस्थापन करारांवर स्वाक्षरी

या उपक्रमाचा एक भाग म्हणून, एएएचएलने आयएचजी हॉटेल्स अँड रिसॉर्ट्सबरोबर पाच लक्झरी आणि प्रीमियम हॉटेल्ससाठी हॉटेल व्यवस्थापन करारांवर स्वाक्षरी केली आहे. यात भारतातील किम्प्टन ब्रँडच्या पदार्पणाचाही समावेश आहे. ही कंपनी आदरातिथ्य, खाद्य आणि पेय, दुकाने आणि मनोरंजन या क्षेत्रांतील आघाडीच्या देशांतर्गत आणि आंतरराष्ट्रीय भागीदारांसोबतही काम करत आहे.

इन्स्टिट्यूट फॉर डिझाईन ऑफ इलेक्ट्रिकल मेजरींग इंन्स्ट्रुमेंट्स
एम एस एम ई - टेक्नॉलॉजी सेंटर, मुंबई
सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय, भारत सरकार
IDEMI
प्रवेश सुरु शैक्षणिक वर्ष २०२६-२७ पात्रता १० वी पास
AICTE & MSBTE - मान्यताप्राप्त ३ वर्षीय डिप्लोमा कोर्सेस
डिप्लोमा इन टुल एंड डाई मेकींग (Mechanical)
मेकॅनिकल इंजिनीअरींग साठी (MSBTE EQUIVALENCE)
प्रात्यक्षिकांवर आधारीत टुल डीझाईन आणि टुल निर्मितीचे प्रशिक्षण दिले जाते.
अधिक माहीती साठी संपर्क साधा : 8976300878 / 7021221498
डिप्लोमा इन ३डी एनिमेशन एंड ग्राफीक्स
इंफोरमेशन टेक्नोलोजी (IT) इंजीनीअरींग (MSBTE EQUIVALENCE)
हॅन्ड्स ऑन प्रॅक्टिकल ट्रैनिंग ग्राफिक्स डिझाईन, एडिटिंग, ॲनिमेशन, गेम इंजिन, स्पेशल इफेक्ट्स, फिल्म कम्पोझिटिंग, एडिटिंग आणि UX / UI Design, AR / VR Game Design, Generative AI
अधिक माहीती साठी संपर्क साधा : 9821473895 / 8291437525
डिप्लोमा इन रोबोटीक्स एंड मेकेट्रोनिक्स
मेकॅनिकल इंजिनीअरींग साठी (MSBTE EQUIVALENCE)
प्रात्यक्षिकांवर आधारीत मेकाट्रोनिक्स, रोबोटीक्स, ऑटोमेशन आणि एम्बेडेड सिस्टम्स, डिझाईन एड डेव्हलपमेंट प्रशिक्षण दिले जाते.
अधिक माहीती साठी संपर्क साधा : 9819495547 / 9833292670
रजीस्ट्रेशन लिंक https://idemi.org/training/aicte
TUITION FEE FREE मोफत प्रशिक्षण SC/ST
आयडीईएमआय, इस्टर्न् एक्सप्रेस हायवे, चुन्नाभटी सायन, मुंबई
फोन.: ०२२ २४०५०३०१/२/३/४ EXT.No. २१३ / Email: training@idemi.org / Website: www.idemi.org
अधिक माहीती साठी स्कुआर कोड स्कॅन करा

आनंदाची ‘पार्टी’!
तुमच्या घरची पार्टी लज्जतदार करणारा ‘लोकसत्ता पूर्णब्रह्म’

उद्यापासून उपलब्ध
श्री महिला गृह उद्योग लिज्जत पापड
(खादी आणि ग्रामोद्योग आयोग द्वारा मान्य)
प्रस्तुत
लोकसत्ता पूर्णब्रह्म
सहप्रस्तुती
मुसळुणकर यांचे
व्हि एम ज्वेलर्स
स्थापना १९४९
सहप्रायोजक
पितांबरी रुचियाना द रिच टेस्ट!
Apsara Ice Creams
MSC BANK
ShriKanchan Hotels & Resorts Pvt. Ltd.

तुमच्या घरची पार्टी लज्जतदार आणि अविस्मरणीय करणारा ‘लोकसत्ता पूर्णब्रह्म २०२६’ प्रकाशित झाला आहे. त्याच्या मदतीने तुम्हीही आता देऊ शकाल अप्रतिम चवीची, नावीन्यपूर्ण पदार्थांची भरपेट मेजवानी तुमच्या आप्तजनांना. पाच कोर्स मेजवानीच्या यंदाच्या पूर्णब्रह्ममध्ये आहेत, तुमच्या पाहुण्यांचे स्वागत करणारे नानाविध रंग, गंधाचे, राजेशाही ‘वेलकम ड्रिंक्स’. त्यानंतर त्यांना देऊ शकाल अस्सल चवीचे चटकदार, झणझणीत, मखमली ‘स्टार्टर्स’. त्यानंतर अर्थातच मन तृप्त करत जिभेचे चोचले पुरवणारा ‘मेनकोर्स’ ज्यात तुम्हाला मिळतील भरपूर शाकाहारी तसेच मांसाहारी पदार्थ आणि शेवटी तुमच्या पाहुण्यांच्या जेवणाची तुम्ही परिपूर्ती करू शकाल गोड, कल्पक अशा ‘डेझर्ट्स’नी.

तुम्हाला उत्कृष्ट ‘यजमान’ अशी वाहवा मिळवून देणारा यंदाचा **‘लोकसत्ता पूर्णब्रह्म’** तुमच्या संग्रही असायलाच हवा. हा विशेषांक लवकरच सर्वत्र उपलब्ध.

पॉवर्ड बायः Bedekar | nav Gomantak SEAFOOD RESTAURANT
लोकसत्ता लोकमान्य लोकशक्ती

अधिक माहितीसाठी संपर्कः मुंबई – कुलाबा ते माहीम, चेंबूर ते सायनः संजय माचिवले - ९८३३५४५३२९, ध्रुव मनमाडकर - ८०९७९०६९७८, मिलिंद कांबळे - ८८९८४१४३५८, रवी लोहारकर - ८८८८७७२९९०, सुभाष कदम - ९७६९३६८१११ ● **वांद्रे ते जोगेश्वरीः** संजय मेलकुंडी - ८६५२१२४१४५ ● **गोरेगाव ते दहिसरः** पंकज सोनार - ८८६२००३४८८, सिद्धार्थ कांबळे - ९६५३६३२१२६, अमित जाधव - ७९७७२४२४८५ ● **मीरा रोड ते विरारः** आशीष राशीनकर - ९५११६३९४१५ / रुपेश गोळे - ९०२९५२०५०८ ● **मुलुंड, भांडूप, विक्रोळीः** वैभव मोरे - ९६१९९५३४५६ ● **घाटकोपर ते कुर्लाः** नरेंद्र जोशी - ९८३३३९३५४३ ● **ठाणे ते कळवाः** राम शिंदे – ९८८१२५६०६९, कमलेश पाटकर - ९८२०६६४६७९ ● **डोंबिवलीः** वाल्मिक पाटील - ९९७५९१७७७५ ● **कल्याणः** सचिन हरड - ९५९४१००६५० ● **उल्हासनगर ते बदलापूरः** योगश दुसाने - ९५२७२६५२०२ ● **ऐरोली ते पनवेलः** समीर म्हात्रे - ९६१९६३०५६९ ● **पालघर ते डहाणूः** नीरज राऊत - ९९६०४९७३७८ ● **नाशिकः** प्रसाद क्षत्रिय - ८०८७१३४०३३ ● **रायगडः** विजय रसाळ - ९२२६०५५६७७ ● **रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग, गोवाः** राजू चव्हाण - ९४२३३२२११६.

नोकरीची हमी देणारे शिक्षण हवे...

मुख्य आर्थिक सल्लागार व्ही. अनंत नागेश्वरन यांनी अलीकडेच केलेल्या विधानाचा प्रतिवाद करणारे दोन लेख...

अजित रानडे

मुख्य आर्थिक सल्लागार व्ही. अनंत नागेश्वरन यांनी अलीकडेच सांगितले की सॉफ्टवेअरची पदवी किंवा एमबीए म्हणजे हमखास चांगली नोकरी, हा समज आता टिकणारा नाही. जागतिकीकरणाच्या काळात मध्यमवर्गीय कुटुंबांची सोपी सूत्रे होती. इंजिनीअरिंगची पदवी घ्या, कोडिंग शिका, एमबीए करा आणि पांढरपेशा नोकरीच्या मार्गावर लागा. कृत्रिम बुद्धिमत्ता म्हणजेच एआयने हे गणित बरेच बदलले आहे.

याचा अर्थ इंजिनीअरिंग किंवा एमबीए निरुपयोगी झाले, असा अजिबात नाही. भारतात तर उलट अधिक चांगले इंजिनीअर लागतील. महाराष्ट्रातच पाहा. मुंबई मेट्रो, पुणे मेट्रो, अटल सेतू, समृद्धी महामार्ग, कोस्टल रोड, नवी मुंबई विमानतळ, धारावी पुनर्विकास, नागपूर-पुणे-नाशिकमधील औद्योगिक विस्तार, जलसंधारण, शहरी पूरनियंत्रण, परवडणारी घरे... या सगळ्यासाठी अभियंते लागणारच. त्यामुळे सिव्हिल इंजिनीअरिंग संपले, असे म्हणणे हास्यास्पद आहे. उलट हवामान बदल, पूर, पाणीटंचाई, वाहतूक, कचरा व्यवस्थापन आणि सुरक्षित बांधकाम हे नवे प्रश्न ज्यांना समजतील असे अभियंते हवेत.

आजच्या सिव्हिल इंजिनीअरला फक्त काँक्रीट, सर्व्हेक्षण आणि स्ट्रक्चरल डिझाइन जाणून चालणार नाही. त्याला शहरी पूर, हवामान-जोखीम, जीआयएस मॅपिंग, हरित बांधकाम साहित्य, प्रकल्प वित्त, सार्वजनिक खरेदी, देखभाल खर्च आणि सुरक्षेचे निकष कळले पाहिजेत. इलेक्ट्रिकल इंजिनीअरला ग्रिड, ऊर्जा साठवणूक, ईव्ही चार्जिंग आणि अक्षय ऊर्जेची सांगड समजली पाहिजे. कॉम्प्युटर इंजिनीअरला फक्त कोड लिहिण्यापलीकडे डेटा आर्किटेक्चर, सायबर सुरक्षा, प्रणाली-विचार आणि आरोग्य, शेती, वाहतूक, उत्पादन अशा प्रत्यक्ष क्षेत्रांत एआयचा उपयोग करता आला पाहिजे.

एमबीएबाबतही हेच खरे आहे. देशाची व्यवस्थापन-कौशल्यांची गरज कमी नाही. पण ती केवळ कॉर्पोरेट प्रेझेंटेशन, एक्सेल शीट आणि जॉर्गनपुरती मर्यादित राहता कामा नये. महाराष्ट्रातील प्रत्येक जिल्ह्याला आकडे समजणारे, प्रकल्पांचे मूल्यमापन करणारे, निधीचा परिणाम मोजणारे, सार्वजनिक मालमत्ता सांभाळणारे, खरेदी प्रक्रियेतील पारदर्शकता वाढवणारे आणि विभागांमध्ये समन्वय करणारे तरुण व्यावसायिक हवेत. खऱ्या अर्थाने तळागाळातून नियोजन करायचे असेल, तर जिल्हा हा फक्त महसुली किंवा प्रशासकीय घटक राहता कामा नये. तो नियोजन, माहिती आणि अंमलबजावणीचा सक्षम केंद्रबिंदू झाला पाहिजे.

महाराष्ट्रात ३६ जिल्हे आहेत. प्रत्येक जिल्ह्यात जिल्हा नियोजन समिती असते. पण या समित्या किती प्रमाणात डेटा-आधारित नियोजन करतात? आरोग्य, शिक्षण, पाणी, रोजगार, वाहतूक, शेती, उद्योग, पर्यावरण या क्षेत्रांसाठी स्थानिक माहिती वापरून गुंतवणूक-योजना तयार करणारी व्यावसायिक यंत्रणा किती ठिकाणी आहे? आपण जिल्हा विकास विश्लेषक, नगरपालिका वित्त अधिकारी, सार्वजनिक खरेदी तज्ज्ञ, आरोग्य-प्रणाली व्यवस्थापक, शिक्षण डेटा अधिकारी, हवामान अनुकूलन अधिकारी अशी नवी पदे का तयार करू नयेत? त्यासाठी अर्थशास्त्र, व्यवस्थापन, सार्वजनिक वित्त, सांख्यिकी, जीआयएस, पायाभूत नियोजन आणि सामाजिक क्षेत्रातील प्रशिक्षण लागेल. म्हणजेच एमबीए आणि अर्थशास्त्र पदव्यांचा उपयोग कॉर्पोरेट क्युबिकलपुरता न राहता लोकहिताच्या कामातही होईल. एखाद्या अभियांत्रिकी विद्यार्थ्याला साध्या प्रश्नाचे उत्तर देता आले पाहिजे: तुमच्या शेताला एका वर्षात किती पाणी लागते? किती वीज लागते? अभ्यासक्रमात अशा समस्या शिकवल्याच जात नाहीत.

म्हणूनच अभ्यासक्रम -सुधारणा आणि नोकरीची रचना यांची सांगड घालावी लागेल. कॉलेजांनी अभ्यासक्रम बदलला, पण सार्वजनिक बांधकाम विभाग किंवा महानगरपालिका जुन्याच निकषांवर भरती करणार असतील, तर त्याचा उपयोग नाही. एमबीए विद्यार्थ्यांना डेटा ॲनालिटिक्स शिकवले, पण जिल्हा प्रशासनात परिणाममापन किंवा जीआयएस नियोजनाची पदेच नसतील, तर ते कौशल्य वाया जाईल. शिक्षणसुधारणा नोकरीसुधारणेशिवाय केवळ आणखी एक प्रमाणपत्र-कारखाना ठरते.

मुख्य आर्थिक सल्लागारांनी हातगुणांच्या व्यवसायांबद्दल केलेले विधानही महत्त्वाचे आहे. वेल्डिंग, प्लंबिंग, इलेक्ट्रिकल काम, सुतारकाम, नर्सिंग, केअरगिव्हिंग, स्वयंपाक, हॉटेल व्यवसाय – या क्षेत्रांत मानवी स्पर्श, निर्णयशक्ती, विश्वास आणि कौशल्य लागते. पण मध्यमवर्गीय पालक मुलाला 'इंजिनीअर किंवा एमबीए हो' असे सांगत असतील, तर अचानक 'वेल्डर हो' असे अभिमानाने म्हणणे सोपे नाही. भारतात पदवी म्हणजे प्रतिष्ठा, लग्नबाजारातील दर्जा, जातीय-सामाजिक गतिशीलता, स्थलांतराची संधी आणि असुरक्षित श्रमातून सुटकेची आशा असते.

जर्मनी, स्वित्झर्लंड, जपान किंवा दक्षिण कोरिया येथे हातगुणांची प्रतिष्ठा संस्थांनी ती निर्माण केली आहे. युरोपात शतकाहून अधिक काळ गिल्ड्स, व्यावसायिक मंडळे, अप्रेंटिसशिप, परवाना पद्धती आणि वेतनवाटाघाटीची संस्कृती आहे. मास्टर इलेक्ट्रिशियन, मशीनिस्ट किंवा कारपेंटरला प्रमाणपत्र, प्रगतीचा मार्ग, सामूहिक आवाज आणि सामाजिक ओळख असते. गिल्ड केवळ कौशल्य शिकवत नाही; ते दर्जा राखते, शोषण रोखते, सभ्य वेतनासाठी आधार देते.

आपल्याकडे उत्कृष्ट कारागीर आहेत; पण प्लंबर, इलेक्ट्रिशियन, वेल्डर, कारपेंटर किंवा रिपेअर तंत्रज्ञ यांची सशक्त व्यावसायिक गिल्ड्स नाहीत. आयटीआय आहेत, कौशल्य योजना आहेत, प्रमाणपत्रे आहेत; पण नियोक्त्यांचा विश्वास आणि समाजातील प्रतिष्ठा कमी आहे. इथला कामगारवर्ग अजूनही मोठ्या प्रमाणावर असंघटित आहे. अशा बाजारात कौशल्य म्हणजे हमखास सन्मान आणि सुरक्षित उत्पन्न असे नसते. ते कंत्राटी काम, लेखी कराराचा अभाव, विमा नाही, पेन्शन नाही, असुरक्षित कामाचे वातावरण आणि मनमानी वेतन यांत अडकू शकते.

नोएडा आणि गुरुग्राम-मानेसर पट्ट्यातील औद्योगिक कामगारांच्या अलीकडे झालेल्या आंदोलनात २० हजार रुपयांच्या आसपास मूलभूत मासिक वेतनाची मागणी झाली. आपले वेतन जगण्यालायक नाही असे त्यांना सांगावे लागत होते. महाराष्ट्रातील औद्योगिक पट्ट्यांनाही हा प्रश्न अनोळखी नाही. चाकण, रांजणगाव, औरंगाबाद-शेंद्रा, नाशिक, कोल्हापूर अशा ठिकाणी उत्पादनवाढ आहे; पण कौशल्य, सुरक्षितता, करार आणि सन्मान्य वेतन यांची हमी तितकीच आवश्यक आहे.

पदवीधर बेरोजगारीचा प्रश्न याहूनही गंभीर आहे. लाखो तरुण नोकरी करत नाहीत, अनुभव मिळवत नाहीत, उत्पन्न मिळवत नाहीत; ते स्पर्धा परीक्षांच्या प्रतीक्षागृहात बसले आहेत. सरकारी नोकरी ही लॉटरीचे तिकीट आहे आणि कोचिंग क्लास हे प्रतीक्षालय. खासगी क्षेत्रातील सुरुवातीच्या नोकऱ्या कमी वेतनाच्या आणि असुरक्षित असतील, तर सरकारी नोकरीच्या वेतन, प्रतिष्ठा आणि सुरक्षेच्या मागे धावणे तर्कसंगतच ठरते.

इंटरनेट, एमओओसी, बूटकॅम्प, कोविड आणि आता एआय ट्यूटर्स – प्रत्येक वेळी विद्यापीठे संपतील असे सांगितले गेले. पण उच्च शिक्षण वाढतच गेले. विद्यापीठे टिकतील का यापेक्षा ती बदलतील का, हा प्रश्न आहे. कॉपी करण्याचे साधन म्हणून एआयकडे पाहणारे विद्यापीठ जिवंत राहील, पण बौद्धिकदृष्ट्या कमकुवत होईल. एआयला शिकण्याचा भागीदार बनवणारे विद्यापीठच पुढे जाईल.

म्हणून निष्कर्ष स्पष्ट आहे. पदवी पुरू नका; ती नव्याने घडवा. हातगुणांचे रोमँटीकरण करू नका; त्यांना संस्थात्मक सन्मान, प्रमाणपत्र, सुरक्षितता आणि सभ्य वेतन द्या. विद्यापीठांनी एआयमुळे बदलले पाहिजे. आपला रोजगारप्रश्न एका सामाजिक वेडाच्या जागी दुसरे वेड बसवून सुटणार नाही. तो तेव्हाच सुटेल जेव्हा तरुणांना सिव्हिल इंजिनीअर, कोडर, नर्स, शेफ, वेल्डर, जिल्हा नियोजन अधिकारी, तंत्रज्ञ, शिक्षक, उद्योजक किंवा प्रशासकीय अधिकारी होण्याचे सन्मान्य मार्ग उपलब्ध होतील. आणि प्रत्येक मार्गात उत्पन्न, सुरक्षा, प्रतिष्ठा आणि प्रगती असेल.

ज्येष्ठ अर्थतज्ज्ञ

ajit.ranade@gmail.com

'शिक्षणाला महत्त्व नाही,' असे सांगणे थांबवा!

डॉ. आनंद वाडदेकर

गेल्या काही दिवसांपासून उद्योग क्षेत्रातील काही नामांकित उद्योजक, व्यावसायिक आणि अगदी धोरणकर्त्यांकडूनही 'एमबीए निरुपयोगी आहे', 'अभियांत्रिकी पदव्यांना किंमत उरलेली नाही', 'कंपन्या आता पदवीकडे पाहत नाहीत' अशा प्रकारची विधाने ऐकायला मिळत आहेत. काही जागतिक कंपन्यांनी पदवीपेक्षा कौशल्यांना प्राधान्य दिल्याच्या बातम्याही मोठ्या प्रमाणावर प्रसारित केल्या जात आहेत. या सर्वांमुळे तरुणांमध्ये आणि पालकांमध्ये एक प्रकारचे संभ्रमाचे वातावरण निर्माण झाले आहे.

उद्योग क्षेत्राला आज प्रत्यक्ष काम करू शकणारे, बदलत्या तंत्रज्ञानाशी जुळवून घेणारे, समस्यांचे समाधान शोधणारे आणि सतत शिकण्याची तयारी असलेले कर्मचारी हवे आहेत. परंतु याचा अर्थ 'शिक्षण निरुपयोगी झाले' किंवा 'पदवीला काहीच किंमत उरलेली नाही' असा अजिबात होत नाही.

आज ग्रामीण भागातील लाखो विद्यार्थी, मध्यमवर्गीय कुटुंबे आणि आर्थिकदृष्ट्या मर्यादित परिस्थितीत शिक्षण घेणारे युवक आपल्या भविष्याची स्वप्ने उराशी बाळगून शिक्षण घेत आहेत. समाजातील प्रभावशाली व्यक्ती शिक्षणाविषयी टोकाची विधाने करतात, तेव्हा त्यांच्या मनात प्रश्न निर्माण होतो की 'मग आम्ही एवढे शिक्षण कशासाठी घेत आहोत?'

शिक्षणतज्ज्ञ, प्रशिक्षक व कौशल्य विकास क्षेत्रातील व्यावसायिक आणि करिअर मार्गदर्शक म्हणून दोन दशकांहून अधिक काळ काम करताना मला हजारो विद्यार्थी, शेकडो शिक्षक, अनेक उद्योगसंस्था आणि विविध क्षेत्रांतील व्यावसायिकांशी संवाद साधण्याची संधी मिळाली. त्या अनुभवाच्या आधारे मला असे ठामपणे वाटते की शिक्षण आणि कौशल्ये यांच्यात कृत्रिम संघर्ष निर्माण करणे ही मोठी चूक आहे. शिक्षण आणि कौशल्ये हे एकमेकांचे पर्याय नसून परस्परांना पूरक असलेले दोन अत्यावश्यक घटक आहेत.

आज उद्योग क्षेत्र 'जॉब रेडी' उमेदवारांची मागणी करत आहे, हे निर्विवाद सत्य आहे. कंपन्यांना संवादकौशल्य, डिजिटल कौशल्ये, विश्लेषण क्षमता, टीमवर्क, नेतृत्व, ग्राहकाभिमुखता, नवकल्पनाशक्ती आणि बदल स्वीकारण्याची मानसिकता असलेले कर्मचारी हवेत. त्यामुळे शिक्षण संस्थांनीही अभ्यासक्रम अधिक उद्योगाभिमुख करण्याची गरज आहे. मात्र या बदलांचा अर्थ शिक्षणच अनावश्यक झाले असा अजिबात होत नाही.

आपण एक साधा प्रश्न स्वतःला विचारूया. कोणताही कुशल डॉक्टर, शल्यविशारद किंवा हृदयरोगतज्ज्ञ केवळ अनुभवावर तयार होतो का? तो प्रथम वैद्यकीय शिक्षण घेतो, त्यानंतर इंटर्नशिप, रेसिडेन्सी, विशेष प्रशिक्षण आणि अनेक वर्षांचा अनुभव घेतो. एखादा अभियंता प्रथम अभियांत्रिकीची मूलतत्त्वे शिकतो, त्यानंतर उद्योगातील अनुभवातून अधिक सक्षम बनतो. वास्तुविशारद, चार्टर्ड अकाउंटंट, वकील, शिक्षक, शास्त्रज्ञ किंवा संशोधक– प्रत्येक क्षेत्रात शिक्षण हा पाया असतो आणि अनुभव त्या पायावर उभारलेली इमारत असते.

जसा मजबूत इमारतीसाठी भक्कम पाया आवश्यक असतो त्याचप्रमाणे फक्त कौशल्ये शिकून दीर्घकालीन यश मिळत नाही; त्यासाठी सखोल ज्ञान, संकल्पनांची समज, विश्लेषण क्षमता आणि योग्य मूल्यव्यवस्था आवश्यक असते. ही पायाभरणी शिक्षणातूनच होऊ शकते.

शिक्षण म्हणजे केवळ परीक्षेत गुण किंवा पदवीचे प्रमाणपत्र मिळवणे नव्हे. ते विचार करायला शिकवते. योग्य प्रश्न विचारायला शिकवते. माहिती आणि ज्ञान यातील फरक समजावते. संशोधनाची वृत्ती विकसित करते. चिकित्सक विचारसरणी, नैतिकता, सामाजिक जाणीव, विविध मतांचा आदर, वैज्ञानिक दृष्टिकोन आणि जबाबदार नागरिकत्व या सर्वांचा पाया शिक्षणातच घातला जातो.

आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ऑटोमेशन आणि डिजिटल परिवर्तनामुळे जग झपाट्याने बदलत आहे. या बदलांमुळे अनेक नोकऱ्यांचे स्वरूप बदलणार आहे, काही नोकऱ्या नष्ट होतील तर अनेक नवीन संधी निर्माण होतील. या नव्या जगात फक्त एकच कौशल्य आयुष्यभर पुरणार नाही. प्रत्येक व्यक्तीला वेळोवेळी नवीन कौशल्ये आत्मसात करावी लागतील. पण नवीन कौशल्ये शिकण्याची क्षमता देखील भक्कम शैक्षणिक पायावरच उभी राहते.

आज अनेकजण जागतिक कंपन्यांची उदाहरणे देतात. काही कंपन्या पदवीपेक्षा कौशल्यांना प्राधान्य देतात, हे खरे आहे. परंतु त्या कंपन्या शिक्षणाला विरोध करत नाहीत. त्या केवळ भरती प्रक्रियेत अधिक व्यापक निकष वापरत आहेत. यातील फरक समजून घेणे आवश्यक आहे. एखाद्या उमेदवाराने पारंपरिक पदवीऐवजी उत्कृष्ट कौशल्ये आणि अनुभवाच्या आधारे स्वतःला सिद्ध केले असेल, तर त्याला संधी मिळणे ही सकारात्मक बाब आहे. पण त्यावरून संपूर्ण शिक्षणव्यवस्था निरुपयोगी ठरते, असा निष्कर्ष चुकीचा आहे.

भारतासारख्या देशात तर शिक्षण हे सामाजिक परिवर्तनाचे, आर्थिक प्रगतीचे आणि समान संधी उपलब्ध करून देण्याचे सर्वात प्रभावी साधन आहे. ग्रामीण भागातील, वंचित घटकांतील किंवा पहिल्या पिढीत शिक्षण घेणाऱ्या लाखो विद्यार्थ्यांसाठी पदवी हे त्यांच्या कुटुंबाच्या सामाजिक, आर्थिक उन्नतीचे दार असते. त्यामुळे पदव्यांचे अवमूल्यन करणाऱ्या विधानांचा गंभीर परिणाम होऊ शकतो.

याचबरोबर शिक्षण व्यवस्थेनेही आत्मपरीक्षण करण्याची गरज आहे. उद्योगांच्या अपेक्षा आणि अभ्यासक्रम यांच्यातील दरी कमी करणे आवश्यक आहे. अभ्यासक्रम अधिक अद्ययावत करणे, उद्योग-शिक्षण संस्था सहकार्य वाढविणे, इंटर्नशिप अनिवार्य करणे, प्रकल्पाधारित शिक्षणाला चालना देणे, उद्योजकता, डिजिटल कौशल्ये, आर्थिक साक्षरता आणि कृत्रिम बुद्धिमत्तेचे शिक्षण अभ्यासक्रमात समाविष्ट करणे ही काळाची गरज आहे. विद्यार्थ्यांना परीक्षा उत्तीर्ण होण्यासाठी नव्हे, तर जीवन आणि करिअरसाठी तयार करणे हे शिक्षणाचे उद्दिष्ट असले पाहिजे.

आज चर्चा 'पदवी विरुद्ध कौशल्ये' अशी मांडली जाते. प्रत्यक्षात ही चर्चा चुकीच्या चौकटीत अडकली आहे. योग्य प्रश्न असा असायला हवा - आपण विद्यार्थ्यांना अधिक सक्षम कसे बनवू? शिक्षण अधिक परिणामकारक कसे करू? उद्योग आणि शिक्षण यांच्यातील दरी कशी कमी करू? आणि विद्यार्थ्यांना भविष्यातील रोजगार, उद्योजकता आणि नेतृत्वासाठी कसे तयार करू?

यशाचे सूत्र आजही तेच आहे, फक्त त्यात काही नवीन घटकांची भर पडली आहे. आज यशासाठी भक्कम शिक्षण, आधुनिक कौशल्ये, प्रत्यक्ष अनुभव, योग्य दृष्टिकोन, नैतिक मूल्ये, सातत्याने शिकण्याची वृत्ती या सर्वांची आवश्यकता आहे. यातील एकाही घटकाला कमी लेखणे योग्य नाही.

समाजात प्रभाव असलेल्या व्यक्तींनी सार्वजनिक वक्तव्ये करताना त्याचा विद्यार्थ्यांवर, पालकांवर आणि शिक्षण व्यवस्थेवर काय परिणाम होईल याचाही विचार करायला हवा. प्रेरणादायी संदेश देणे आणि वास्तववादी टीका करणे आवश्यक आहे; परंतु शिक्षणावरील विश्वासच डळमळीत होईल अशी विधाने दीर्घकालीन दृष्टीने देशाच्या मानवी भांडवलासाठी घातक ठरू शकतात.

शिक्षण आणि उद्योग यांच्यात संघर्ष निर्माण करण्यापेक्षा आज गरज आहे ती दोघांमध्ये सशक्त पूल बांधण्याची. विद्यार्थ्यांना पदवीबरोबरच कौशल्ये, अनुभव, मूल्ये आणि सतत शिकण्याची मानसिकता देणारी शिक्षणव्यवस्था उभी करण्याची आहे. कारण उद्याचा भारत केवळ कुशल कामगारांवर नव्हे, तर सुशिक्षित, विचारशील, जबाबदार आणि नवोन्मेषी नागरिकांवर उभा राहणार आहे.

म्हणूनच अंतिम संदेश एकच–प्रश्न 'पदवी की कौशल्ये?' असा नसून 'पदवी, कौशल्ये, अनुभव, योग्य दृष्टिकोन, निरंतर शिक्षण' या सर्वांचा समतोल साधण्याचा आहे. भविष्यातील यशाचा हा एकमेव शाश्वत मार्ग आहे.

शिक्षणतज्ज्ञ

anandwadadekar@gmail.com

चांदनी चौकातून दिल्लीवाला

वांगचुक यांचा आधार

जंतर-मंतरवरील कॉक्रोच जनता पार्टीच्या आंदोलनाची केंद्र सरकारने अजून म्हणावी तशी दखल घेतलेली नाही. सरकारच्या वतीने आंदोलकांशी कोणीही चर्चा केलेली नाही. आंदोलकांनी ताकद वाढवली पाहिजे असं दिसतंय. गेल्या शनिवारी हे आंदोलन सुरू झालं, ते अजूनही सुरू आहे. तिथे वाहती गर्दीही पाहायला मिळते आहे. ज्येष्ठ सामाजिक कार्यकर्ते सोनम वांगचूक इथे रविवारपासून उपोषणाला बसणार आहेत. वांगचूक यांच्यामुळं आंदोलनाला अधिक वजन मिळू शकेल. वांगचूक यांनी पहिल्या दिवसापासून आंदोलनाला पाठिंबा दिलेला आहे. वांगचूक यांना आंतरराष्ट्रीय वलय आहे. लडाखमधील कामांमुळं त्यांच्याकडं लक्ष वेधलं गेलं. लडाखमधील हिंसक घटनेनंतर त्यांना अटक झाली होती, त्यांची नंतर सरकारने सुटका केली. आता ते तरुण आंदोलकांचे नैतिक आधार बनले आहेत. आंदोलकांची प्रमुख मागणी केंद्रीय शिक्षणमंत्री धर्मेंद्र प्रधान यांच्या राजीनाम्याची आहे. पंतप्रधान मोदींनी त्यांचा राजीनामा घेतलेला नाही. केंद्रीय मंत्रिमंडळाच्या फेररचनेमध्ये धर्मेंद्र प्रधानांचं काय करायचं हे ठरवलं जाऊ शकतं. प्रधानांना मंत्रिमंडळातून काढून टाकलं तर जंतर-मंतरवरील आंदोलन गुंडाळावं लागेल. ते पुढं सुरू ठेवायचं असेल तर अधिक गांभीर्याने आंदोलनाची मांडणी करावी लागेल. आत्ता तरी तशी मांडणी केली जात आहे असं दिसत नाही. प्रधानांचा राजीनामा ही सुरुवात असेल, शिक्षण क्षेत्रातील वेगवेगळे प्रश्न आम्हाला सोडवायचे आहेत, असं आंदोलकांचे नेते अभिजित दिपकेंनी सांगितलेलं आहे. तसं असेल तर आंदोलन व्यापक करावं लागेल, त्यासाठी वेगवेगळ्या सामाजिक संघटनांना सामील करावं लागेल, राजकीय पक्षांशी संवाद साधावा लागेल. केवळ तरुणांचाच नव्हे तर सामान्य लोकांचा वाढता पाठिंबा लागेल. जंतर-मंतरवर गर्दी दिसते, त्यातून प्रतिसाद कळतो. पण, आंदोलन व्यापक करण्यासाठी तो अपुरा पडू शकतो. एखाद-दोन शेतकरी संघटनांनी पाठिंबा दिलेला आहे. मात्र, अजून तरी सरकारवर या आंदोलनाने दबाव निर्माण केलेला नाही. धर्मेंद्र प्रधानांची मंत्रिमंडळातून हकालपट्टी झाली तर त्याचं श्रेय या आंदोलनाला घेता येईल. आंदोलकांनी प्रवक्ते नेमले आहेत, समन्वय समिती तयार केली आहे. आंदोलनाला स्वरूप दिलं जात आहे. ही बांधणी जशी होईल तसे फंडिग कोण करतंय, कुठून होतंय, कोणती ताकद पाठीमागे आहे वगैरे अनेक अडचणीचे प्रश्न विचारले जाऊ शकतील. 'आप'च्या विद्यार्थी संघटनेचे कार्यकर्ते आंदोलनाला मदत करत असल्याची चर्चा होत आहे. अरविंद केजरीवाल अप्रत्यक्षपणे हे आंदोलन चालवत असल्याच्या चर्चांना उत्तर द्यावं लागेल. एसएफआय, 'एआयएसए' वगैरे डाव्या विद्यार्थी संघटनांचे फलक जंतर-मंतरवर दिसतात. दुसऱ्या बाजूला, सीजेपीच्या आंदोलनाला समांतर काँग्रेसचं 'छात्रों की गुंज' आंदोलन सुरू आहे. या आंदोलनातून काँग्रेसनंही तरुणांचे शैक्षणिक प्रश्न हाती घेतलेले आहेत. गेल्या आठवड्यातील जयपूरमधील आंदोलनामध्ये राहुल गांधी सहभागी झाले होते. त्यांनाही प्रतिसाद मिळाला. त्यामुळे दोन समांतर विद्यार्थी आंदोलनं तीव्र होऊ लागली आहेत! जंतर-मंतरवरील आंदोलन काँग्रेसच्या आंदोलनाला पूरक असेल की, बाधा आणणारं हेही समजेल.

'राम'सूत्र 'परजीवी'!

चंपत राय

अनिल मिश्रा

राम जन्मभूमी तीर्थक्षेत्र न्यासाचे (ट्रस्ट) महासचिव चंपत राय आणि न्यासाचे सदस्य अनिल मिश्रा या दोघांनी देणगीच्या निधीचोरीप्रकरणी राजीनामा दिला असे सूत्रांच्या मार्फत कळवले गेले. अलीकडे फक्त सूत्रांच्या माध्यमांतून माहितीची देवाण-घेवाण होते. मोदी सरकारमध्ये काय चाललं आहे हे सूत्रांकडून लोकांना कळतं. मतचोरी झालेली नाही, हे केंद्रीय निवडणूक आयोग सूत्रांच्या माध्यमांतून कळवतो. निधीची चोरी झाली हे उघड आहे कारण त्यासंदर्भात न्यासाच्या वतीने पोलिसांमध्ये तक्रार दाखल केली गेली. अयोध्येतील राम मंदिराच्या बांधकामापासून ते दैनंदिन व्यवहारापर्यंत सगळा कारभार न्यास बघतो. या न्यासाने पोलिसांमध्ये तक्रार केली तर, चंपत राय व अनिल मिश्रा यांनी राजीनामा दिला वगैरे सगळी माहिती अधिकृतपणे का सांगितली नाही, हा मुख्य प्रश्न या प्रकरणामध्ये उभा राहिलेला आहे. न्यासाच्या सदस्यांनी अयोध्येत पत्रकार परिषद का घेतली नाही, याचे उत्तर मिळालेले नाही. पत्रकार परिषदेमध्ये चंपत राय व अनिल मिश्रा यांच्या राजीनाम्याची घोषणा करता आली असती. त्यांचे राजीनामापत्रही दाखवता आले असते. ही सगळी लपवाछपवी कशासाठी केली गेली, हे कोणालाही माहीत नाही. राजीनाम्याचे वृत्त सरकारी मानल्या गेलेल्या वृत्तसंस्थेने दिल्यामुळे ते ग्राह्य धरले गेले.

मात्र, या वृत्तसंस्थेनेही राजीनाम्याची अधिकृत माहिती कोणी दिली वा ही अधिकृत माहिती आहे का, याबद्दल काहीही तपशील दिलेला नाही. दिल्लीत अशा कथित सूत्रांचा बोलबाला असून त्यांच्या मार्फत येणारी माहिती खरी मानण्यापलीकडे पर्याय उरलेला नाही.

उदाहरणार्थ, ठाकरे गटातील सहा खासदार शिंदे गटात गेले याबद्दल लोकसभाध्यक्ष ओम बिर्ला यांनी अधिकृतपणे अजून एकही पुरावा दिलेला नाही. ठाकरे गटातील निष्ठावान अरविंद सावंत व अनिल देसाई हे दोघे संसदेच्या लोकसभाध्यक्षांच्या दालनात बिर्लांना भेटले, त्यांनी पुराव्याविषयी विचारले गेले तरीही बिर्लांनी पुरावे दिले नाहीत. लोकसभा सचिवालयाशी चर्चा केल्यानंतर ते पुरावे पाहायला मिळतील असं बिर्लांचं म्हणणं होतं. असो. राजकीय सूत्रांना चिकटलेले प्रसारमाध्यमांमधील 'परजीवी' कोणापुढेही नतमस्तक कसे होतात, याबाबतच्या पंतप्रधान कार्यालयातील

एका उदाहरणासंदर्भात तर उघडपणे बोललं जातं. काही महिन्यांपर्यंत पंतप्रधान कार्यालयातील एक व्यक्ती दिल्लीतील मुख्य प्रवाहातील प्रसारमाध्यमांची विशेषतः वृत्तवाहिन्यांची 'सूत्रं' होती. या व्यक्तीला या कथित जबाबदारीतून मुक्त करण्यात आलेलं आहे. त्या जागी कोणी दुसरी व्यक्ती आलेली असू शकते. त्यामुळे 'सूत्रांचा बोलबाला' कायम राहिलेला आहे. असो. मुद्दा हा की चंपत राय यांचं प्रस्थ सूत्रांच्या आधारे मोडून काढलं गेलं आहे. या निधीचोरी प्रकरणातील उपमुद्दा वेगळाच आहे. त्याला राजकीय किनार आहे असं वाटू लागलेलं आहे. चोरी प्रकरणात गुन्हा दाखल होण्याआधीच उत्तर प्रदेशचे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ यांनी चौकशी सुरू केली. त्याचा अहवाल योगींकडे देण्यात आला आहे. त्याबद्दल जाहीरपणे बोलताना योगींनी चंपत राय यांचं वा कोणाचंही नाव घेतलेलं नाही. पण, लोकांच्या श्रद्धेशी खेळल्याबद्दल तीव्र टीका केली आहे. या टीकेचा रोख कोणावर असू शकतो, हे काही फार मोठं कोडं नाही. राम मंदिर निर्माण समितीचे अध्यक्ष नृपेंद्र मिश्रा हे पंतप्रधान नरेंद्र मोदींचे मुख्य सचिव होते. हे मिश्रा आणि चंपत राय दोघेही दिल्लीच्या विश्वासातील मानले जातात. निधीचोरीची भानगड बाहेर आल्यावर मिश्रा यांनी पत्रकारांना मुलाखती देऊन आपली बाजू सुरक्षित करून घेतली. मग, त्यांनी न्यासावर टीका केली. पोलिसांत दाखल झालेल्या गुन्ह्यामध्ये कोणाही विश्वासू व्यक्तीचं नाव नाही. चंपत राय आणि अनिल मिश्रा यांच्याशी निगडित पाच जणांवर गुन्हे दाखल झाले आहेत. त्यातून योगींच्या म्हणण्यामागील गोष्टींचा अर्थ लावता येऊ शकतो. या न्यासामध्ये योगींना स्थान दिलं गेलं नाही अशी चर्चा झाली होती. योगी कोणावर बाण मारू पाहात आहेत हे समजू शकलं तर निधीचोरी प्रकरण केवळ चोरीचं नाही हेही समोर येऊ शकेल.

उपवर्गीकरणाचा वाद

अनुसूचित जातींच्या आरक्षणातील उपवर्गीकरणाच्या मुद्द्यावरून वाद तीव्र होऊ लागला आहे. राष्ट्रवादी काँग्रेस-अजित पवार गटातील आमदार आणि माजी मंत्री राजकुमार बडोले वगैरे मंडळींनी आरक्षण उपवर्गीकरणविरोधी संघर्ष समितीच्या माध्यमातून उपवर्गीकरणाविरोधात ३० जूनला मुंबईमध्ये विधिमंडळावर मोर्चा काढण्याचा निर्णय घेतला आहे. बडोले भाजपमध्ये होते, ते आता अजित पवार गटात आहेत. म्हणजे ते महायुतीचे घटक आहेत. तरीही बडोलेंचा विरोध कायम आहे. सर्वोच्च न्यायालयाच्या आदेशामुळे अनुसूचित जातींचं उपवर्गीकरण

सरकारला नाकारता येणार नाही. पण, बडोलेंचं म्हणणं आहे की, सरकारकडे माहिती-विदा नसेल तर उपवर्गीकरण कशाच्या आधारावर करणार? ५९ अनुसूचित जातींची सगळी माहिती उपलब्ध हवी. प्रत्येक जातींची वस्तुनिष्ठ आकडेवारी, सामाजिक-शैक्षणिक मागासलेपणाचा अभ्यास शास्त्रीय पद्धतीने केला पाहिजे. जनगणना झाल्याशिवाय हा अभ्यास होऊ शकत नाही. राष्ट्रीय अनुसूचित जाती आयोगाशी चर्चा केली पाहिजे. त्यानंतरच ही प्रक्रिया सुरू होईल. असं असेल तर उपवर्गीकरणाची घाई कशासाठी करायची हा बडोलेंचा युक्तिवाद. न्या. बदर समितीचा अहवाल सरकारने जाहीर केलेला नाही. त्यातील शिफारशी काय हेही समजले पाहिजे. हा मुद्दा रास्त. आरक्षणातील उपवर्गीकरणाला होत असलेल्या विरोधामागं दोन कारणं दिसतात. फक्त एका जातींतून उपवर्गीकरणाचं जोरदार समर्थन केलं जातंय, इतर जाती करत नाहीत. मग, एका जातीसाठी उपवर्गीकरण कशासाठी करायचं? शिवाय, अनुसूचित जातींमध्ये भेद निर्माण केला जात आहे. अनुसूचित जाती 'शेड्युल्ड' आहेत. या जाती एक समूह असतील तर त्यामध्ये भेद करून त्यांच्यामधील एकीला बाधा का आणली जात आहे? आमदार राजकुमार बडोले स्वतःच्याच सरकारला अप्रत्यक्ष आव्हान देत आहेत. मंगळवारच्या मोर्चातून राज्य सरकारचं लक्ष वेधण्याचा प्रयत्न केला जात आहे.

लोकमत सारांश

थोडक्यात... पण सखोल

हॉट-टॉपिक

युद्धबंदी झाली; प्रश्न कायम!

फेब्रुवारीच्या अखेरीस आखातामध्ये निर्माण झालेला संघर्ष १०० दिवसांनंतर तात्पुरत्या स्वरूपात का होईना शांत झाला आहे. ही जागतिक अर्थव्यवस्थेसाठी आणि विशेषतः भारतासाठी अत्यंत दिलासादायक बाब म्हणावी लागेल. मात्र, होर्मुझ सामुद्रधुनीवरील भारताचे परावलंबित्व कसे कमी करता येईल, याचा या संपूर्ण संकटातून बोध घेतला पाहिजे.

डॉ. शैलेंद्र देवळाणकर
आंतरराष्ट्रीय घडामोडींचे विश्लेषक

फेब्रुवारीच्या अखेरीस सुरू झालेला आखातातील संघर्ष तब्बल शंभर दिवसांनंतर तात्पुरता का होईना, शांत झाला आहे. अमेरिका आणि इराण यांच्यात झालेल्या १४ कलमी शांतता करारामुळे होर्मुझ सामुद्रधुनीवरील निर्बंध उठले असून, खनिज तेल, नैसर्गिक वायू आणि खतांची वाहतूक पुन्हा पूर्ववत झाली आहे. जागतिक अर्थव्यवस्थेसाठी आणि विशेषतः भारतासाठी ही निश्चितच दिलासादायक बाब आहे. मात्र, या संकटाने भारतासमोर एक मूलभूत प्रश्न उभा केला आहे - होर्मुझ सामुद्रधुनीवरील आपले परावलंबित्व आणखी किती काळ कायम ठेवायचे?

आखात हा प्रदेश ऐतिहासिकदृष्ट्या अस्थिर आणि संवेदनशील राहिला आहे. शिया-सुन्नी संघर्ष, प्रादेशिक वर्चस्वाच्या लढाया, दहशतवादी कारवाया आणि यादवी युद्धांमुळे या भागातील परिस्थिती कायमच तणावपूर्ण राहते. त्याचा थेट परिणाम जागतिक ऊर्जा पुरवठ्यावर होतो.

भूराजकीय परिभाषेत होर्मुझ सामुद्रधुनीला जगातील सर्वात महत्त्वाच्या 'चोक पॉइंट'पैकी एक मानले जाते. आखातातील बहुतांश तेल आणि नैसर्गिक वायू याच मार्गाने आशियाई देशांकडे पोहोचतो. हा मार्ग बंद झाला, तर केवळ आखातातील नव्हे, तर संपूर्ण आशियातील ऊर्जा पुरवठा विस्कळीत होऊ शकतो. १९७३ च्या तेलसंकटापासून जगाने अशा धक्क्यांचा अनेकदा अनुभव घेतला आहे.

यंदाचा संघर्ष जवळपास ११० दिवस चालला. या काळात आंतरराष्ट्रीय बाजारात कच्च्या तेलाचे दर प्रति बॅरल १२० डॉलरपर्यंत पोहोचले. नाकेबंदी आणखी काही महिने टिकली असती, तर २००८ प्रमाणे दर १५० डॉलरपर्यंत जाण्याची शक्यता होती. तेलाच्या दरात प्रति बॅरल एका डॉलरची वाढ झाली तरी भारताच्या आयात बिलावर त्याचा मोठा परिणाम होतो. २०२५ मध्ये भारताने तब्बल १६७ अब्ज डॉलरचे कच्चे तेल आयात केले. आपल्या परकीय चलनाचा मोठा हिस्सा याच आयातीवर खर्च होतो.

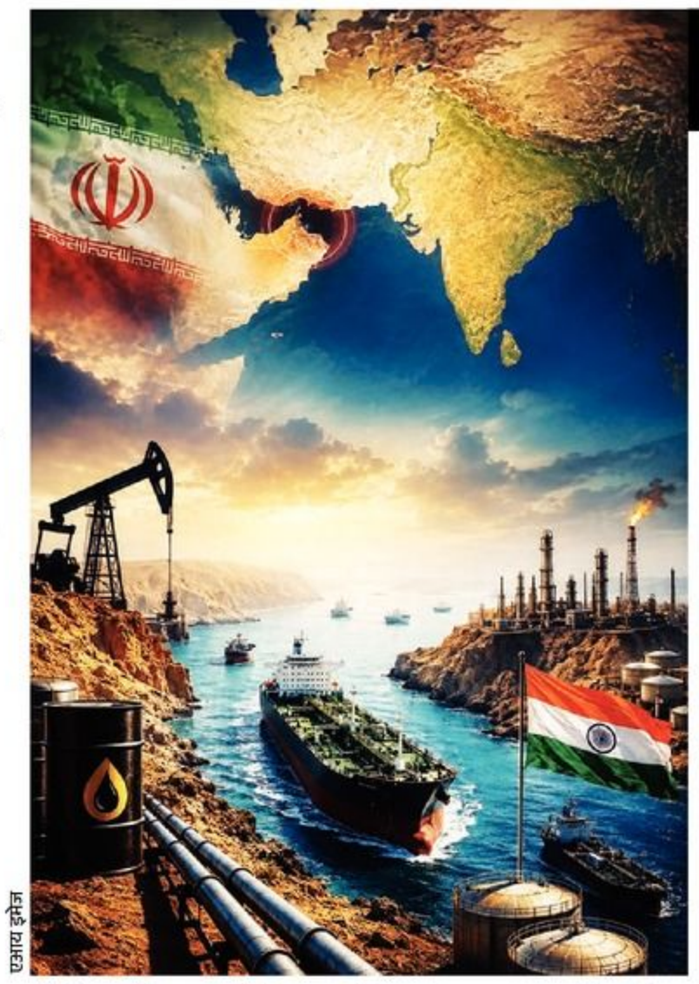

एआय इमेज

भारतासाठी हे आहेत तीन प्राधान्यक्रम

तेल आयातीचे विविधीकरण

भारताकडे तीनही प्रकारच्या कच्च्या तेलावर प्रक्रिया करण्याची क्षमता आहे. गुजरातमधील जामनगर येथील जगातील सर्वात मोठ्या रिफायनरीमुळे भारताला कमी सल्फरयुक्त तसेच उच्च सल्फरयुक्त अशा दोन्ही प्रकारच्या तेलाचे शुद्धीकरण करता येते. रशिया-युक्रेन युद्धानंतर भारताने रशियाकडून मोठ्या प्रमाणावर तेल आयात करून त्यावर प्रक्रिया केली आणि त्याची निर्यातही केली. ही क्षमता लक्षात घेता, रशिया, व्हेनेझुएला आणि इतर देशांकडून आयात वाढविण्याची संधी भारताने साधली पाहिजे.

तेलसाठा वाढवणे

सध्या भारताची धोरणात्मक तेलसाठवणूक क्षमता सुमारे ४० दशलक्ष बॅरल इतकी आहे. त्यातून केवळ ६० ते ६५ दिवसांची गरज भागू शकते. याउलट जपानकडे जवळपास २०० दिवसांचा, तर चीनकडे सहा महिन्यांपर्यंत पुरेल इतका तेलसाठा आहे. सौदी व यूएईने भारतात गुंतवणूक करून ही क्षमता वाढविण्याची तयारी दर्शवली आहे. भारताने ही क्षमता किमान ८० दशलक्ष बॅरलपर्यंत वाढवून १५० दिवसांचा सुरक्षित साठा निर्माण करणे आवश्यक आहे.

होर्मुझला पर्यायी मार्ग

ऊर्जा सुरक्षेसाठी लाल समुद्रातील 'इस्ट-वेस्ट पाइपलाइन', ओमानमार्गे पर्यायी वाहतूक आणि भारत-मध्य पूर्व-युरोप आर्थिक कॉरिडॉर (आयमेक) या प्रकल्पांना गती देणे आवश्यक आहे. त्यामुळे होर्मुझवरील अवलंबित्व कमी होऊ शकते.

होर्मुझवरील अवलंबित्व कमी करणे आता अपरिहार्य

भारत आपल्या गरजेपैकी सुमारे ८० टक्के कच्चे तेल आयात करतो. जरी आपण ४० हून अधिक देशांकडून तेल खरेदी करत असलो, तरी प्रमुख पुरवठा आजही सौदी अरेबिया, इराक, संयुक्त अरब अमिराती आणि कतार या आखाती देशांकडूनच होतो. अमेरिकेने इराणवरील निर्बंध शिथिल केल्यामुळे भविष्यात तेथूनही आयात वाढण्याची शक्यता आहे. रशिया, अमेरिका, व्हेनेझुएला, ब्राझील आणि नायजेरिया हेही भारतासाठी महत्त्वाचे पुरवठादार ठरत आहेत.

तरीही भारताच्या एकूण तेल आयातीपैकी सुमारे २५ टक्के तेल होर्मुझ सामुद्रधुनीतून येते. भारताची दैनंदिन गरज सुमारे ५० लाख बॅरल इतकी आहे. त्यापैकी सुमारे २२ लाख बॅरल तेल या मार्गाने येते. केवळ कच्चे तेलच नव्हे, तर भारतीय शेतीसाठी आवश्यक असलेले युरिया, अमोनिया, सल्फर तसेच रस्ते बांधणीसाठी लागणारे बिटुमनही याच मार्गाने भारतात येते. त्यामुळे होर्मुझवरील अवलंबित्व एका रात्रीत संपविणे शक्य नाही; मात्र ते टप्प्याटप्प्याने कमी करणे आता अपरिहार्य झाले आहे.

नौदलाची उपस्थिती

भारताने अरबी समुद्र आणि हिंदी महासागरातील नौदलाची उपस्थिती अधिक सक्षम करणे आवश्यक आहे, जेणेकरून सागरी पुरवठा साखळी सुरक्षित राहील. त्याचबरोबर इलेक्ट्रिक वाहनांचा वापर, इथेनॉल मिश्रण आणि इतर अपारंपरिक ऊर्जा स्रोतांचा विस्तार हा ऊर्जा सुरक्षेचा आधार ठरू शकतो.

होर्मुझ बंद झाला तर काय होईल?

भारताच्या सुमारे २५ टक्के तेल आयातीवर परिणाम

खतांच्या आयातीत अडथळे

कच्च्या तेलाच्या किंमतीत तीव्र वाढ

महागाईचा दबाव

परकीय चलनावरील ताण

चालू खात्यातील तूट वाढण्याची शक्यता

काय धडे घ्यावेत?

१ या संघर्षातून भारताने संरक्षण क्षेत्रासाठीही महत्त्वाचे धडे घ्यायला हवेत. आधुनिक युद्धांमध्ये ड्रोन तंत्रज्ञानाचे वाढते महत्त्व अधोरेखित झाले आहे. त्यामुळे स्वदेशी ड्रोन उत्पादन, ड्रोनविरोधी संरक्षण प्रणाली आणि आधुनिक लष्करी तंत्रज्ञानात मोठी गुंतवणूक करणे ही काळाची गरज आहे.

ठोस पावलांची गरज

२ होर्मुझमधील नाकेबंदी ही भारतासाठी ऊर्जा सुरक्षेची धोक्याची घंटा होती. त्यामुळे तेल आयातीचे विविधीकरण, मोठा साठा, पर्यायी वाहतूक मार्ग, सागरी सुरक्षा आणि स्वदेशी संरक्षण क्षमता या पाचही आघाड्यांवर भारताने आताच ठोस पावले उचलली पाहिजेत.

लाइफ हॅक्स

तुमचं मूल 'सबस्क्राइब' म्हणतं की 'आई-बाबा'?

'हॅलो गाईज... लाइक करा, शेअर करा आणि बेल आयकॉन दाबा!' हे शब्द लहान मुलांच्या तोंडून सहज ऐकायला मिळतात. दोन-तीन वर्षांचे मूल कार्टूनमधील पात्रांसारखे बोलते आणि 'सबस्क्राइब' सारखे शब्द सहज उच्चारते. क्षणभर हे गोंडस वाटते; पण त्यामागे धोका गंभीर आहे. ही बालपणाची धोक्याची घंटा आहे.

एआय इमेज

एकेकाळी मुलांची पहिली शाळा म्हणजे घर असायचे. आईची अंगाई, बाबांशी गप्पा, आजी-आजोबांच्या गोष्टी, शेजारच्या मित्रांसोबतचे खेळ आणि कुटुंबातील संवाद यातून मुलांची भाषा, विचार आणि भावविश्व घडत असे. आज त्या जागी मोबाइलची स्क्रीन आली आहे. मुलांच्या हातात खेळण्यांपूर्वी स्मार्टफोन दिसू लागला आहे आणि त्यातूनच त्यांच्या जगाकडे पाहण्याचा दृष्टिकोन घडू लागला आहे. यामागे पालकांचाही हेतू चुकीचा नसतो. धावपळीच्या जीवनात मुलांना शांत ठेवण्यासाठी, जेवण भरवण्यासाठी किंवा स्वतःची कामे पूर्ण करण्यासाठी मोबाइल हा सोपा पर्याय वाटतो. पण हाच पर्याय पुढे सवय बनतो आणि नंतर व्यसनात बदलतो. मुलांचे लक्ष, भाषा आणि भावविश्व हळूहळू स्क्रीनच्या ताब्यात जाऊ लागते.

बालविकास तज्ज्ञ सांगतात की, आयुष्याची पहिली पाच वर्षे मेंदूच्या विकासासाठी अत्यंत महत्त्वाची असतात. या काळात मुलांना प्रत्यक्ष संवाद, स्पर्श, खेळ, गाणी, गोष्टी आणि मानवी सहवासाची गरज असते. स्क्रीनवरील रंगीबेरंगी चित्रे त्यांचे मनोरंजन करू शकतात; पण ती मुलांच्या भावनिक आणि सामाजिक विकासाची जागा घेऊ शकत नाहीत. त्यामुळे काही मुलांमध्ये बोलायला उशीर होणे, नजरेला नजर न देणे, चिडचिड वाढणे, लक्ष केंद्रित न होणे आणि भावना व्यक्त करण्यात अडचणी येणे अशी लक्षणे दिसू शकतात. काही संशोधनांमध्ये 'व्हर्च्युअल ऑटिझम'चाही धोका अधोरेखित करण्यात आला आहे.

मुलांना मोबाइल द्यायचा की निरागस बालपण?

१ जागतिक आरोग्य संघटनेनेही स्पष्ट मार्गदर्शक तत्त्वे दिली आहेत. एका वर्षाखालील मुलांना कोणत्याही प्रकारच्या स्क्रीनपासून दूर ठेवावे. दोन ते चार वर्षांच्या मुलांचा स्क्रीन टाइम एका तासापेक्षा जास्त नसावा. मात्र अनेक मुले अधिक वेळ मोबाइलसमोर घालवत आहेत.

२ **या समस्येवर उपायही आपल्या घरातूनच सुरू होतो. मुलांना मोबाइल देण्याऐवजी त्यांच्यासोबत वेळ घालवा. त्यांना गोष्टी वाचून दाखवा, गाणी म्हणा, चित्रे काढा, मातीशी खेळू द्या, मैदानावर घेऊन जा आणि सर्वांत महत्त्वाचे म्हणजे त्यांच्याशी भरभरून बोला.**

३ आज मुलांच्या तोंडी 'लाइक', 'शेअर', 'सबस्क्राइब' गोड वाटत असेल; पण उद्या त्यांना आई-बाबांशी बोलण्यापेक्षा स्क्रीनशी बोलणे आवडू लागले, तर निर्णय पालकांचा आहे - मुलांना मोबाइल द्यायचा की बालपण?

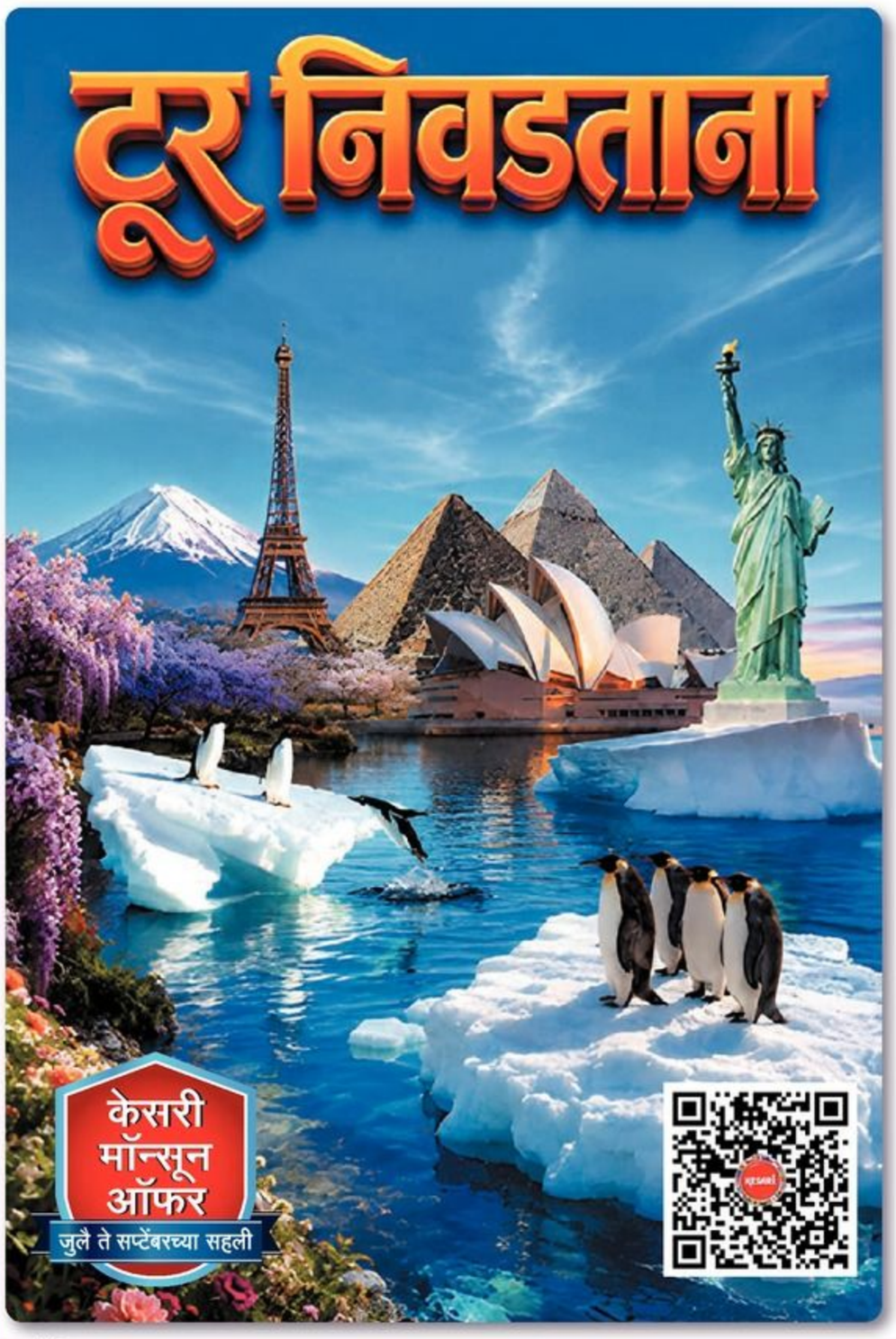

झेलम पाटील चौबळ
डायरेक्टर, केसरी टूर्स

जगभ्रमण ही काही नवीन संकल्पना नाही. प्रत्येकाच्या बकेट लिस्टमध्ये बजेट, सिझन आणि आवडीनुसार अनुभवायच्या आणि पाहायच्या सर्व ठिकाणांची एक यादी असते. पण केवळ काय पाहायचं हेच नाही, तर ते कसं अनुभवायचं हेही तितकंच महत्त्वाचं असतं.

परदेश प्रवासाची सुरुवात बहुतांश जण साऊथ ईस्ट एशियापासून - खासकरून सिंगापूर, थायलँड, मलेशिया किंवा दुबईसारख्या लोकप्रिय डेस्टिनेशनपासून करतात. त्यानंतर प्रवासाची व्याप्ती वाढत जाते आणि मग युरोपची भव्यता, अमेरिकेची विविधता, स्कँडिनेव्हियाची निसर्गरम्यता, आईसलँडचे अद्भुत भूवैशिष्ट्य, कॅनडाचे विस्तीर्ण सौंदर्य, रशियाचा इतिहास, ऑस्ट्रेलिया - न्यूझीलँडची वेगळी जीवनशैली आणि रंगीबेरंगी साऊथ अमेरिकेसह अनेक प्रदेशांची सफर घडत जाते.

आणि जर सप्तखंडांची सफर पूर्ण करण्याचं स्वप्न असेल, तर पृथ्वीच्या सर्वात दक्षिणेकडचा, सर्वात थंड, कोरडा आणि जोरदार वाऱ्यांसाठी ओळखला जाणारा अंटार्क्टिका खंड अनुभवायलाच हवा. जगातील सेव्हन वंडर्स ऑफ द वर्ल्ड पाहायची इच्छा असेल, तर साऊथ अमेरिकेची टूर नक्कीच करावी. त्यासोबत जॉर्डनमधील ऐतिहासिक पेट्रा शहरही पाहण्यासारखं आहे.

प्रत्येक देश आणि प्रत्येक शहराची स्वतःची एक वेगळी ओळख असते. काही ठिकाणे त्यांच्या इतिहासासाठी प्रसिद्ध असतात, काही निसर्गासाठी तर काही जीवनशैलीसाठी. त्यामुळे त्या त्या ठिकाणी गेल्यावर तेथील खास अनुभव घेणं महत्त्वाचं ठरतं. मात्र स्वतंत्र प्रवासात अनेक गोष्टी नकळत राहून जातात.

याउलट, ग्रुप टूरमध्ये प्रवासाचा प्रत्येक टप्पा विचारपूर्वक नियोजित केलेला असतो. कोणत्या वेळी कोणतं ठिकाण पाहावं, कुठे गर्दी टाळता येईल, कोणत्या मार्गाने वेळ वाचेल आणि कमी वेळेत अधिक अनुभव कसे घेता येतील याचा आधीच अभ्यास केलेला असतो. त्यामुळे प्रवास अधिक निवांत, समृद्ध आणि अनुभवांनी भरलेला होतो. टूर लीडर्सच्या योग्य मार्गदर्शनामुळे त्या त्या शहरांतील laws of the land सुद्धा सहजपणे पाळले जातात.

साऊथ ईस्ट एशियामध्ये, विशेषतः थायलँडमध्ये पॅराग्लायडिंगचं ॲडव्हेंचर, पारंपरिक थाई मसाजसह रिलॅक्सेशन आणि स्थानिक खाद्यसंस्कृतीची लज्जत - हे अनुभव प्रत्येक पर्यटकाने घ्यायलाच हवेत.

जगभरातील काही अनुभव असे असतात जे केवळ पाहायचे नसतात, तर जगायचे असतात. स्वित्झर्लंडमधील माऊंट टिटलिसच्या गंडोलामधून पर्वतरांगांमध्ये घेतलेली राईड, आयफेल टॉवरच्या टॉप लेव्हलवरून दिसणारं पॅरिसचं विहंगम दृश्य आणि युंगफ्रॉकडे जाणाऱ्या ट्रेनचा निसर्गरम्य प्रवास - हे प्रत्येक क्षण प्रवासाला एका वेगळ्या उंचीवर घेऊन जातात.

साऊथ अमेरिका म्हणजे अनुभवांची एक अखंड मेजवानीच. जगातील सर्वात मोठा आणि रंगतदार मानला जाणारा रिओ कार्निव्हल, पेरिटो मोरेनो ग्लेशिअरचं बर्फसौंदर्य, शुगरलोफ माऊंटन, ख्राईस्ट द रिडीमर, महाकाय ॲमेझॉन नदीतील क्रूझ सफर आणि माचूपिचूचा रहस्यमय प्रवास - प्रत्येक ठिकाण एक वेगळी कथा सांगतं. यासोबतच कॅक्टस आयलँड, अर्जेंटिनातील रंगीबेरंगी वॉकवे, पेरूमधील कुझको शहरातील ऐतिहासिक वास्तुरचना, ला पाझ शहराच्या मध्यभागी उभारलेली आणि स्थानिकांची लाईफलाईन असलेली रोपवे आणि निसर्गाचा चमत्कार सालार दे उयूनी - अशा एकापेक्षा एक समृद्ध अनुभवांनी सजलेली केसरीची साऊथ अमेरिका टूर, विशेषतः रिओ कार्निव्हलच्या काळात केली तर उत्तमच.

आणि अंटार्क्टिका? ती केवळ टूर नाही - एक एक्स्पेडिशन आहे. निसर्गाच्या अनंत किमयांचा अनुभव देणारी, बर्फाच्या अद्भुत दुनियेत घेऊन जाणारी आणि प्रत्येक क्षणाला विस्मयचकित करणारी एक अविस्मरणीय सफर.

आईसलँड म्हणजे निसर्गाने जपून ठेवलेलं एक रहस्यच जणू. जसं आपण स्कँडिनेव्हिया टूरमध्ये स, क्रूझ आणि ट्रेनमधून त्या प्रदेशाची खरी ओळख करून घेतो आणि आईस्रेकर क्रूझचा अनुभवही घेतो. आईसलँड पाहायचा तर एक वेगळी पद्धत आहे. केवळ राजधानी रेक्याविकमध्ये मुक्काम करून हा देश पूर्णपणे अनुभवता येत नाही. शुभ्र धबधबे, ज्वलंत ज्वालामुखी, उकळते मडपूल्स, उंच उसळणारे गिझर्स, हजारो वर्षांत तयार झालेल्या रॉक फॉर्मेशन्स आणि ग्लेशिअरमधील तासनतास चालणारा प्रवास - इथला प्रत्येक क्षण अचंबित करणारा आहे.

असा वेगळेपण जपणारा आणि प्रत्येक देशाचा खरा अनुभव देणारा प्रवास हेच केसरीचं वैशिष्ट्य आहे. प्रत्येक देशातील जे अनुभव, जी ठिकाणं आणि जे क्षण पर्यटकांनी अनुभवायलाच हवेत, ते आपल्या टूर्समध्ये समाविष्ट आहेत.

आपल्यालाही जगाचा असा आगळावेगळा अनुभव घ्यायचा असेल तर लगेच प्लॅनिंग करा - केसरीसोबत!

स्कँडिनेव्हियाचा निसर्गरम्य प्रवास, रिओ कार्निव्हलची रंगत, अंटार्क्टिकाची अद्वितीय एक्स्पेडिशन, युरोपमधील ख्रिसमस मार्केट्सची जादू, चीनमधील झांगजियाजी पर्वतरांगांचे सौंदर्य, तैवानचा माउंटन फेस्टिव्हल, जपानमधील चेरी ब्लॉसम, युरोप विथ एंगलबर्ग किंवा बेस्ट ऑफ अमेरिका - प्रत्येक टूरमध्ये काहीतरी वेगळं अनुभवायला मिळतंच. कैलास मानसरोवर, चारधाम किंवा युरोप टूर्समध्ये केसरीसोबत हजारो पर्यटक प्रवास करत आहेत. केसरीची प्रत्येक टूर म्हणजे अविस्मरणीय अनुभव आणि यशस्वी प्रवासाची हमखास खात्री.

जगातील प्रत्येक कोपऱ्यात एक नवा अनुभव, एक नवी गोष्ट आणि एक नवी आठवण आपली वाट पाहत आहे. आता फक्त स्वप्न पाहू नका - आपल्या पुढच्या अविस्मरणीय प्रवासाची सुरुवात करा केसरीसोबत!

टूर कोड	दिवस		टूर कोड	दिवस		टूर कोड	दिवस		टूर कोड	दिवस		टूर कोड	दिवस	
UB	20	साऊथ अमेरिका रिओ कार्निव्हल	AI	07	सिम्पली ऑस्ट्रेलिया	E6	14	बेस्ट ऑफ युरोप एंगलबर्ग	F2	10	सिंगापूर थायलँड मलेशिया	HG	08	डलहौसी धर्मशाला अमृतसर
UF	10	अटलांटा टू शिकागो फॉल फोलिएज म्युझिक ट्रेल	XC	09	बीजिंग शांघाय झांगजियाजी सेकंड इनिंग्स	EH	15	स्पेन पोर्तुगाल मोरोक्को	WI	05	बाली छोटा ब्रेक	KF	07	पॅनोरॅमिक काश्मीर वैष्णोदेवी
UZ	13	अंटार्क्टिका	J6	06	जपान छोटा ब्रेक	EZ	08	युरोप ख्रिसमस मार्केट स्पेशल	FN	08	ऑल ऑफ मलेशिया	NR	07	दार्जिलिंग गँगटोक
U2	15	अमेझिंग यूएसए विथ ऑरलँडो	JS	09	क्लासिक साऊथ कोरिया	E0	09	नॉर्दर्न लाईट्स आईस ब्रेकर क्रूझ	FV	10	व्हिएतनाम कंबोडिया	NL	09	लेह लडाख कारगिल
UG	10	बेस्ट ऑफ मेक्सिको पनामा	JB	09	जपान ऑटम स्पेशल	NZ	10	भूतान	FC	09	चियांग माई लँटर्न फेस्टिव्हल फुकेत क्राबी बँकॉक	NW	09	व्हॅली ऑफ फ्लॉवर्स हरिद्वार ऋषिकेश
VY	08	केनिया सफारी	P5	08	इसेन्शिअल युरोप (एक टूर, सहा देश)	D1	07	दुबई अबूधाबी ३ थीम पार्क्स	FP	08	फिलिपिन्स पलावन	N5	07	लखनौ अयोध्या प्रयागराज वाराणसी
V1	14	साऊथ आफ्रिका केनिया व्हिक्टोरिया फॉल्स	EW	10	बेस्ट ऑफ स्कँडिनेव्हिया	PE	09	ताश्कंद समरकंद बुखारा अल्माटी	NP	08	नेपाळ	L5	02	माय फेअर लेडी फन डे सेलिब्रिटी स्पेशल
AN	10	ऑल ऑफ न्यूझीलँड	EC	07	अथेन्स मिकोनोस सॅन्टोरिनी	MS	08	श्रीलंका याला नॅशनल पार्क	HF	08	पॅनोरॅमिक शिमला मनाली	ZG	06	स्काय कॉर्डेलिया क्रूझ गोवा लक्षद्वीप सेलिब्रिटी स्पेशल

T & C Apply

सोमवार ते शनिवार सकाळी 9.30 ते संध्याकाळी 7 | 9930 33 0066 | 1800 266 1100 | KESARI.in

Get Exclusive Access to My Private Channel

✅One-Time Entry Fee Only. No Monthly Fees. Lifetime Validity.

♦ **Indian Newspaper**

1) Times of India
2) The Hindu
3) Business line
4) The Indian Express
5) Economic Times
6) Financial Express
7) Live Mint
8) Hindustan Times
9) Business Standard

♦ **International Newspapers channel** [Europian, American, Gulf & Asia]

♦ **Magazine Channel**

National & International [Genaral & Exam related]

♦ **English & Hindi Editorials**

[National + International Editorials]

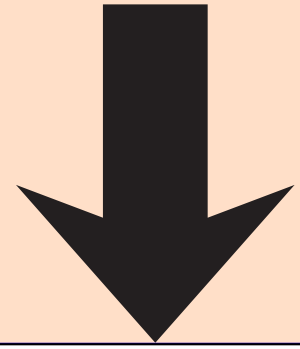

Click here to join